

करियर होली पर रंगों से सजाएं दुनिया विशेषाक

आस्था का महापर्व -श्री राम नवमी

नवरात्रि की महिमा

मार्च, २०२० (वर्ष-1, अंक 6) बीटा



एस्ट्रोसेज पत्रिका

मार्च, 2020

वर्ष:1 अंक:6

प्रधान सम्पादक

पुनीत पाण्डे

सहायक सम्पादक - मृगांक शर्मा

सलाहकार सम्पादक - पीयूष पाण्डे

डिजाइनर - शान्तनु निगम

कोमल सक्सेना

संयोजक - विजय पाठक

रवि ठाकुर

लीशा चौहान

मार्केटिंग प्रमुख - हरीश नेगी

सम्पादक से पत्राचार हेतु पता:

सम्पादक, एस्ट्रोसेज पत्रिका

A -139, सैक्टर 63, नोएडा - 201307.(India)

Phone: +91 9560670006 Mail: info@astrosage.com

Website: www.astrosage.com

संपादकीय

प्रिय मित्रो,

सर्वप्रथम होली के पावन पर्व की आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। मार्च का यह महीना

हम सभी के लिए बहुत विशेष है। इस माह से हिन्दू नववर्ष का आरंभ हो रहा है। चैत्र नवरात्रि 25 तारीख़ से आरंभ हो रही है, और माँ दुर्गा का आशीर्वाद हम सभी पर बना रहे-यही कामना है। एस्ट्रोसेज ई-पत्रिका का मार्च अंक इसलिए विशेष है, क्योंकि इस बार हमने करियर को केंद्रित कर यह अंक निकाला है। व्यक्ति की पढ़ाई-लिखाई से लेकर करियर निर्माण में ग्रहों की क्या भूमिका है, इस पर विस्तार से प्रकाश डालने की कोशिश है। इसके अतिरिक्त होली और नवरात्रि पर विशेष सामग्री है। बॉलीवुड एक्टर शारिब हाशमी से ख़ास बात है, जो कहते हैं कि भाग्य बिना बॉलीवुड में सफलता संभव नहीं है। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार है। **हमारा ई-मेल पता** है-

magazine@ojassoft.com

आपका

पुनीत पाण्डे

(प्रधान सम्पादक)

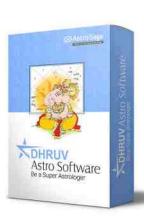
ज्योतिषियों के काम की सबसे बड़ी बात



अभी सब्सक्राइब करें

इसमें आपको मिलेगा

- (1) 200 से अधिक पृष्ठों की विस्तृत रंगीन कुंडली
- (2) कुंडली के हर पृष्ठ पर आपका नाम और संपर्क पता
- (3) क्लाउड और डिवाइस पर सहेजें असीमित कुंडलियाँ
- (4) व्यक्तिगत नोट्स और टिप्पणियाँ लिखें



अभी ऑर्डर करें और पायें सभी झंझटों से मुक्ति!

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. राशि के रंगो से खुलेगी किस्मत	01	18. अद्भभुत है माता का यह मंदिर, च् बांधकर हर मुराद होती है पूरी	पुनरी 58
2. भारत के इन सात जगहों की होली हैं भर में प्रसिद्ध	है दुनिया 04	19. जानिए कैसे तीनों सेनाओं का प्रवि	तेनिधित्व 60
3. ग्रहों के नज़रिए से व्यवसाय का निध	र्गरण 08	करता है मंगल ग्रह	<u> </u>
4. करियर और कुंडली का प्रेम संबंध	13	20. मुझे भाग्य में बहुत भरोसा है : श	ारिब हाशमी 64
5. व्यावसायिक प्रयोजनों में हस्तरेखा व की भूमिका एवं योगदान	शास्त्र 15	21. ज्योतिष सीखें भाग-6	67
6. नीच ग्रह : फल और करियर पर प्रभ	ाव 18		
7. ग्रहों का करियर कनेक्शन	22		
8. सितारे बनाएं मीडिया शिक्षण में करि	यर 25		
9. तारे बनाते हैं बॉलीवुड में सितारा	27		
10. ज्ञान वृद्धि में सहायक कुछ अचूक	उपाय 30		
11. काश ! कॉग्निएस्ट्रो मुझे पहले मिली	होती! 32		
12. बृहस्पति के मकर राशि में गोचर क	ग कमाल 36		
13. जनवरी 2020 मासिक राशिफल	42		
14. राहुल द्रविड़-किन ग्रहों ने बनाया इ	ज्हें दीवार 46		
15. चैत्र नवरात्रि - माता के नौ रुपों की	ा पूजा ४८		
16. मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम र जन्म पर्व - रामनवमी	का 51		
17. वैदिक ज्योतिष में चंद्र ग्रह	55		

राशि के रंगो से खुलेगी किस्मत



आयुषी चतुर्वेदी



इस बार होली का त्योहार 10 मार्च 2020 को पूरे भारत वर्ष में धूमधाम से मनाया जाएगा। होली रंगों का त्योहार है और ऐसे में हम इस त्योहार का फायदा हर रंग के साथ खेलकर उठाते हैं, लिकन क्या आप जानते हैं कि अगर आप अपनी राशि के अनुसार बताये गए रंगों के साथ होली खेलते हैं तो इससे आपको काफी फायदा और सकारात्मक प्रभाव भी मिल सकते हैं?

राशि अनुसार होली के लिये शुभ रंग

सबसे पहले हम बात करेंगे मेष राशि और वृश्विक राशि की। इन दोनों ही राशियों के स्वामी मंगल होते हैं, और मंगल को ऊर्जा और गुस्से का कारक कहा गया है। ऐसे में अगर मेष और वृश्विक राशि के जातक मित्र रंगों का प्रयोग करते हैं तो ये उनके लिए अति शुभ साबित हो सकता है। मित्र रंग में गुलाबी रंग, पीला रंग आपके लिए शुभ साबित हो सकता है।

इसके बाद हम बात करते हैं वृषभ और तुला राशि की। वृषभ और तुला राशि के स्वामी शुक्र हैं और आपका शुभ रंग सिल्वर माना जाता है लेकिन इस रंग का प्रयोग आपके लिए ज़्यादा शुभ साबित नहीं होगा। ऐसे में इन दोनों राशि के जातकों को आसमानी और हल्के नीले रंग का प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इन रंगों के प्रयोग से आपको शुभ फल की प्राप्ति होगी।

अब बात करते हैं **मिथुन और कन्या राशि** की। इन दोनों ही राशियों के स्वामी का दर्जा बुध को दिया गया है। ऐसे में अगर होली पर आप हल्का हरा रंग, पीला रंग, गुलाबी रंग, नारंगी रंग, या आसमानी रंग का इस्तेमाल करते हैं तो इससे आपका त्योहार कई गुना खुशनुमा बन सकता है।

इसके बाद बात करते हैं कर्क राशि की। कर्क राशि के स्वामी का दर्ज़ा चन्द्रमा को दिया गया है। चन्द्रमा को सफ़ेद रंग से जोड़ कर देखा जाता है। ऐसे में सफ़ेद रंग या किसी भी रंग में दही मिलाकर उसे इस्तेमाल करने से आपको सकारात्मक फल मिल सकते हैं। दही को रंग में मिलाकर उपयोग करने से रंग के हानिकारक प्रभाव को भी कम किया जा सकता है। कर्क राशि के जातकों को वैसे भी भावुक माना जाता हैं ऐसे में उनके साथ होली की मस्ती सादगी से ही की जाये तो अच्छा माना जाता है।

अब बारी आती है सिंह राशि की। सिंह राशि के स्वामी का दर्जा सूर्य को दिया गया है। ऐसे में इस राशि के जातक सुनहरे रंगों से होली खेलें तो ये उनके लिए काफी शुभ साबित हो सकता है। सुनहरे रंगों में आपके पास विकल्प काफी आ जाते हैं जैसे गुलाबी, हल्का हरा, नारंगी, पीला इत्यादि। इसके अलावा सिंह राशि के जातक आमतौर पर काफी उत्साही होते हैं, इन्हें अपने जीवन में नीरसता ज़्यादा पसंद नहीं होती है। ऐसे में आप इनके साथ उत्साह से भरी होली भी बड़े ही आराम से खेल सकते हैं।

इसके बाद बारी आती है **धनु और मीन राशि** के जातकों की। धनु और मीन, इन दोनों ही राशि के जातकों का स्वामी ग्रह गुरु को माना है। इन दोनों राशि के जातकों के लिए पीले और नारंगी रंग काफी फलदायी हो सकते हैं।

आखिर में बात करते हैं मकर और कुम्भ राशि के जातकों की। मकर और कुंभ राशि के स्वामी ग्रह का दर्ज़ा शिन को दिया गया है और इनके लिए शुभ रंगों की बात करें तो इसमें नीला और फिरोज़ी रंग शामिल होता है।

होली पर क्यों जलाई जाती है होलिका?



होली के इस त्योहार के बारे में प्रह्लाद, होलिका और हिरण्यकश्यप की कहानी काफी प्रचलित है। इस पौराणिक कथा के अनुसार बताते हैं कि, प्रह्लाद के पिता हिरण्यकश्यप खुद को भगवान मानते थे। जबिक प्रह्लाद भगवान विष्णु के भक्त हुआ करते थे। ऐसे में हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु के विरोधी हो चुके थे। प्रह्लाद की इस बात से क्रोधित होकर हिरण्यकश्यप ने पहले तो उन्हें विष्णु भक्ति करने से रोका लेकिन जब प्रह्लाद नहीं माने तब हिरण्यकश्यप ने उन्हें मारने का प्रयास किया।

प्रह्लाद को जान से मारने के लिए हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका से मदद मांगी। होलिका ने भी भाई की मदद के लिए हाँ कर दी क्योंकि उसे आग में ना जलने का वरदान मिला हुआ था। होलिका तब प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर अग्नि में बैठ गयीं। तब भगवान विष्णु की कृपा से प्रह्लाद को तो कुछ नहीं हुआ लेकिन होलिका उसी अग्नि में जलकर भस्म हो गयीं। तब से इस दिन को बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाने का रिवाज़ शुरू हो गया है।

होली का पौराणिक महत्व

वेदों और पुराणों में इस बात का उल्लेख है कि पूरे भारतवर्ष में होली का त्योहार वैदिक काल के समय से ही मनाया जा रहा है। इस दिन के साथ कई सारी मान्यताएं भी जुड़ी हुई हैं। कहते हैं कि इसी दिन पृथ्वी पर पहले इंसान का जन्म हुआ था,

इसी दिन कामदेव का भी पुनर्जन्म हुआ था, भगवान विष्णु के नरसिंह का रूप धरकर इसी दिन हिरणकश्यप का वध भी किया था।

कहते हैं कि होली के त्योहार को भगवान कृष्ण बड़ी ही धूमधाम से मनाया करते थे। ऐसे में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा शुरू की गयी ये परंपरा आज भी कृष्ण की नगरी मथुरा में देखने को मिलती है। भगवान कृष्ण अपने बालस्वरूप से ही यहां होली बड़े ही उत्साह के साथ मनाते थे। त्योहार के इस जश्न में गोपियाँ और राधा भी उनका जमकर साथ देती थीं इसलिए ही तो आज भी मथुरा में फूलों की होली मनाई जाती है। जबकि राधा के गांव बरसाने की लहुमार होली तो देश और दुनिया भर में प्रचलित हो चुकी है। होली प्रेम का पर्व है, जिसमें लोग अपने पुराने गिले-शिकवे भुलाकर एक-दूसरे के साथ खुशियां बांटते हैं और एक दूसरे के रंग में रंग जाते हैं।

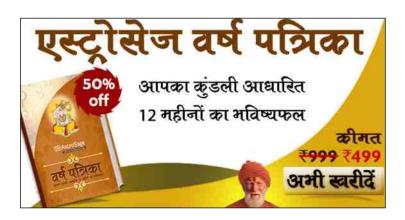
होली में ज़रूर बरतें ये सावधानी

- होली खुशियों का त्योहार है लेकिन ज़रा सी चूक रंग में भंग का काम कर सकती है। ऐसे में यहाँ बेहद ज़रूरी है कि आप होली खेलते समय कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखें जिससे किसी को कोई परेशानी ना हो और आप अपना त्योहार खुशियों से मना सकें।
- रंगों के इस त्योहार को हमेशा से ही प्राकृतिक रंगों से खेला जाता रहा गया है लेकिन बदलते समय के साथ रंगों में केमिकल्स का उपयोग किया जाने लग गया है, जो हमारी त्वचा के लिए हानिकारक हो सकता है। अथवा रंगों के चयन में सावधानी बरतें साथ ही कोई भी समस्या महसूस हो तो तुरंत चिकित्सक की सलाह लें।
- किसी भी नशीले पदार्थ का सेवन ना करें। इससे रंग में भंग पड़ने के अलावा और कुछ नहीं होता है।
- जितना हो सके जानवरों से इन रंगों को दूर ही रखें।

बाकी खुद भी त्योहार का आनंद लें और आस-पास भी खुशियां बांटें।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ क्लिक करें



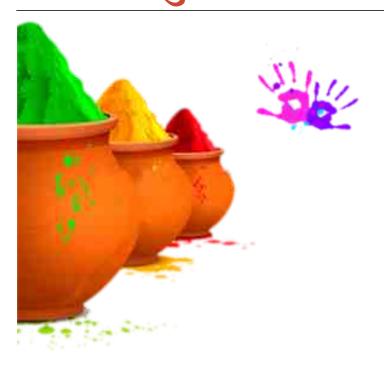




भारत के इन सात जगहों की होली है दुनिया भर में प्रसिद्ध



आयुषी चतुर्वेदी



हिन्दू धर्म में यूं तो कई त्योहार मनाये जाते हैं लेकिन होली और दिवाली, इन दो त्योहारों की जो धूम देश में होती है वो शायद ही किसी अन्य त्योहार में देखने को मिले। सभी गिले-शिक़वे भूलकर जिस तरह से लोग इन त्योहारों में साथ मिलकर आनंद लेते हैं यकीनन ही ये भारत देश की ख़ूबसूरती और विविधता को दर्शाता है। वैसे तो रंगों का ये त्योहार होली सभी को खेलना और मनाना बेहद पसंद होता है लेकिन फिर भी कई ऐसे लोग भी होते हैं जिन्हें इस त्योहार को खेलने से ज़्यादा इस त्योहार को सिर्फ देखना पसंद होता है।

ऐसे में आज हम भारत की ऐसी अलग-अलग जगहों के बारे में आपको बताएंगे जहां की होली इतनी भव्य और खूबसूरत होती है कि उसे देखने दूर-दूर से लोग आते हैं। सिर्फ भारतीय ही नहीं बल्कि इन जगहों की होली विदेशी सैलानियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र होती है।

जानें होलिका दहन और होली का शुभ मुहूर्त

देशभर में इस साल होली, 10 मार्च, 2020, (मंगलवार) को मनाई जाएगी।

होलिका दहन मुहूर्त : 18:26:20 से 20:52:17 तक

अवधि : 2 घंटे 25 मिनट

भद्रा पुँछा : 09:50:36 से 10:51:24 तक भद्रा मुखा :10:51:24 से 12:32:44 तक

बरसाने की लठमार होली

ऐसा तो मुमिकन ही नहीं है कि ज़िक्र होली का हो और बरसाने की लठमार होली की बात ना आये। बरसाने की ये अनोखी होली सिर्फ



भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में सुप्रसिद्ध है। इस होली में महिलाएं पुरुषों पर लठ बरसाती हैं और पुरुष एक ढाल से खुद को बचाते हैं। ये नज़ारा बेहद ही खूबसूरत प्रतीत होता है जब रंगो और गुलाल के बीच महिलाएं और पुरुष इस अनोखे ढंग से होली का आनंद उठाते हैं। बरसाने की लठ मार होली की ये परंपरा एक हफ्ता पहले ही शुरू कर

दी जाती है। लठमार होली की शुरूआत बरसाना के राधा रानी मंदिर से होती है और रंग रंगीली गली में पहुंचकर खत्म होती है।

इस होली की परंपरा के पीछे की वजह भी बेहद ही खूबसूरत है। मान्यता के अनुसार फाल्गुन की नवमी को महिलाएं लट्ठ अपने हाथ में रखती हैं और यहाँ के पुरुष राधा रानी के मन्दिर लाड़लीजी पर झंडा फहराने की कोशिश करते हैं। इस दौरान महिलाएं उन्हें लठ मारती हैं लेकिन पुरुष इसका विरोध नहीं कर सकते। वो सिर्फ गुलाल उड़ा कर महिलाओं का ध्यान भटका सकते हैं। लेकिन अगर वो लोग महिलाओं द्वारा पकड़े जाते हैं तो उनकी जमकर पिटाई होती है या उन्हें महिलाओं के कपड़े पहनकर, श्रृंगार करके नाचना होता है। ये दृश्य वाकई खूबसूरत होता है।

मथुरा-वृन्दावन की फूलों वाली होली

रंगों और गुलाल वाली होली तो आपने बहुत खेली और देखी होगी लेकिन क्या आप जानते हैं कि मथुरा में फूलों वाली



होली खेलने की भी एक अनोखी परंपरा सदियों से चली आ रही है? मथुरा-वृन्दावन देश की एक ऐसी जगह है जहाँ होली के त्योहार की एक अलग ही धूम देखने को मिलती है। बरसाने की लठ-मार होली की ही तरह मथुरा की फूलों वाली होली भी काफी लोकप्रिय है। फूलों वाली ये होली भी पूरे एक सप्ताह तक मनाई जाती है। ये होली बाकें बिहारी मंदिर से होते हुए पूरे देश में फैल जाती है।

पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन की बसंत-उत्सव होली

पश्चिम बंगाल के शांति-निकेतन में होली को बसंत उत्सव के रूप में मनाया जाता है। ये होली बंगाल की विश्व भारती



यूनिवर्सिटी में बीते काफी समय से खेली जाती है। बताया जाता है कि इस अनोखी होली की शुरुआत रविंद्रनाथ टैगोर ने की थी और बंगाल की संस्कृति में इसका काफी महत्व माना जाता है। यूनिवर्सिटी के छात्र होली के दिन खास सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं जिसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग यहाँ इकठ्ठा होते हैं। इस होली की एक खासियत ये भी है कि ये होली पारंपरिक तरह से सिर्फ अबीर और गुलाल से ही खेली जाती है। पंजाब की होला-मोहल्ला होली

होली वैसे तो अपने आप में एक रंगो से सराबोर रंगीन त्योहार है लेकिन इस त्योहार के और हसीन रंग देखने हैं तो आपको एक बार पंजाब की होला-मोहल्ला वाली होली ज़रुर देखने जाना चाहिए। पंजाब में होली के त्योहार को एक अलग ढंग से मनाने की परंपरा चली आ रही है। इस दिन एक जगह पर इकठ्ठा होकर लोग तलवारबाज़ी, कुश्ती, मार्शल आर्ट्स जैसे करतबों का आयोजन करते हैं और इसमें आकर्षण का केंद्र ये होता है कि ये सब रंगों और गुलालों के बीच किया जाता है। खूबसूरत रंगों के बीच अपने युद्ध कौशल को दिखाने का ये त्योहार पंजाबी समुदाय के बीच काफी लोकप्रिय है।

उदयपुर की शाही होली

जहां बात देश की अनोखें ढंग और खूबसूरती से मनाई जाने वाली होली की हो रही है वहां रजवाड़ों के शहर उदयपुर की शाही



होली का ज़िक्र तो अवश्य ही बनता है। नाम से ही स्पष्ट है कि उदयपुर की ये होली शाही ढंग से मनाई जाने के लिए विश्व-विख्यात है। इस अनोखी, ख़ास, और भव्य होली में सिटी पैलेस में शाही निवास से मानेक चौक तक शाही जुलूस निकाला जाता है। इस जुलूस में घोड़े, हाथी से लेकर रॉयल बैंड शामिल होते हैं। इस त्योहार की कई गुना खूबसूरती राजस्थानी गीत-संगीत बढ़ा देता है।

जयपुर की शाही होली

उदयपुर के अलावा जयपुर में मनाई जाने वाली होली को भी शाही होली का नाम दिया जाता है। जयपुर के शाही



परिवार इस शाही होली के आयोजन का हिस्सा बनते हैं और इस दिन धूमधाम से इस त्योहार का आनंद लेते हैं। इस शाही होली में होलिका दहन के बाद से ही रंगों से खेलने का रिवाज़ है। इस शाही होली का आयोजन सिटी पैलेस में किया जाता है। इस जश्न में शरीक होने के लिए यहाँ टूरिस्टस् का भी जमावड़ा सिटी पैलेस में लगा रहता है। इस दिन सिटी पैलेस में कई तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है जिसे देखने का सुख सबको जीवन में एकबार तो अवश्य उठाना चाहिए।

गोवा की शिगमोत्सव होली

वैसे तो आजतक आपने गोवा को घूमने की जगह और उसके शानदार बीचों के लिए जाना और सुना होगा लेकिन आपको



जानकर ताज्जुब होगा कि गोवा की होली भी काफी लोकप्रिय होती है। बात ताज्जुब करने वाली इसलिए भी है क्योंकि गोवा में अमूमन पुर्तगाली और क्रिश्चयन कम्युनिटी के लोग ज़्यादा हैं। ऐसे में यहाँ की होली काफी अनोखी मानी जाती है। गोवा की होली को शिगमोत्सव के नाम से जाना जाता है और इसे तकरीबन दो हफ़्तों तक मनाया जाता है। गोवा की इस होली की सबसे बड़ी ख़ासियत यह है कि इसमें फागोत्सव और होली दोनों ही का मिश्रण होता है।

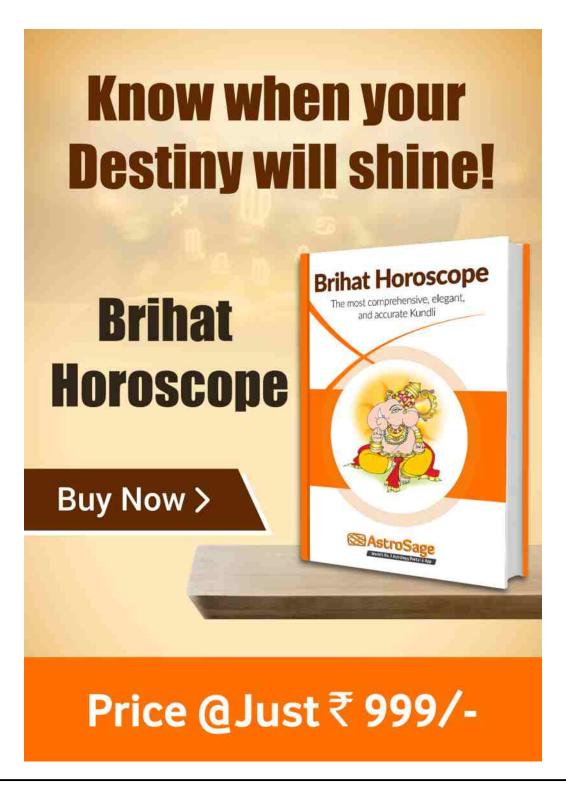
राधा-कृष्ण और होली: जानें पौराणिक कथा

राधा-कृष्ण और होली के त्योहार से जुड़ी एक पौराणिक कथा के अनुसार, बचपन में पूतना द्वारा पिलाये गए दूध की वजह से कृष्ण के शरीर



का रंग नीला पड़ गया था जिसके चलते वो खुद को अन्य सभी से अलग समझने लगे थे। अपने इस विचित्र रंग की वजह से भगवान कृष्ण को ऐसा लगने लगा था कि अब ना ही राधा उनसे प्रेम करेंगी और ना ही गोपियां। ऐसे में

दुखी कृष्णा ने अपनी माँ को अपनी दुविधा बताई। तब माता यशोदा ने मासूम कान्हा की बात सुनकर उन्हें ये सुझाव दिया कि, 'वो राधा को जाकर अपनी पसंद के रंग में रंग दें।' अपनी माता की सलाह मानकर भगवान कृष्ण ने राधा के ऊपर रंग डाल दिया और तबसे ही भगवान श्रीकृष्ण और राधा न केवल अलौकिक प्रेम में डूब गए बल्कि रंग के त्योहार होली को भी उत्सव के रुप में मनाया जाने लगा।



ग्रहों के नज़रिए से व्यवसाय का निर्धारण



एस्ट्रोगुरु मृगांक

ग्रहों की स्थितियां और गोचर आम जीवन को प्रभावित करता है। आपकी जन्म कुंडली में उपस्थित ग्रहों का योग और संयोजन आपको आप किसी विशेष क्षेत्र में काम करने के लिए प्रेरित करता है तो किसी विशेष क्षेत्र से हटाने में भी ग्रहों की मुख्य भूमिका होती है। आपकी सोच क्या है, आपके अंदर कौन से गुण विद्यमान हैं और आप किस तरह की शिक्षा ग्रहण करते हैं, इन सभी का संबंध आपके प्रोफेशन से होता है, इसलिए वैदिक ज्योतिष की सहायता से ग्रहों के प्रभाव द्वारा यह भी जाना जा सकता है कि आपको किस तरह का कार्य करना चाहिए और क्या आप व्यवसाय के लिए उत्तम हैं या नौकरी करना आपके लिए श्रेयस्कर रहेगा। आइये इसी संबंध में इस लेख में बात करते हैं:

कोई व्यक्ति किस प्रकार का व्यवसाय अथवा नौकरी करेगा, यह सभी के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न होता है क्योंकि यह व्यक्ति की आजीविका का प्रश्न होता है। सभी चाहते हैं कि उन्हें जीवन में तरक्की मिले और एक ऐसा काम मिले, जो जीवन पर्यंत चलता रहे, जिससे उन्हें सुचारु रूप से आमदनी होती रहे और उनका आर्थिक स्तर मजबूत रहे।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए हमें कोई ना कोई व्यवसाय करना पड़ता है। कुछ लोग नौकरी करने में आसानी महसूस करते हैं और कुछ लोग स्वतंत्र व्यवसाय अपनाते हैं लेकिन इसके पीछे बहुत बड़ी कहानी होती है क्योंकि सभी ग्रह अपना असर व्यक्ति के जीवन पर डालते हैं और उन्हीं के



अनुसार व्यक्ति को अपना व्यवसाय करने अथवा नौकरी करने में सफलता मिलती है।

आज के आधुनिक युग में तो यह और भी महत्वपूर्ण प्रश्न बन गया है क्योंकि गला काट प्रतिस्पर्धा के इस युग में हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी संतान आगे बढ़े, इसीलिए जब बच्चा छोटा होता है तभी यह पूछना शुरु हो जाता है कि इसे किस प्रकार की शिक्षा की ओर उन्मुख करें ताकि यह जीवन में अच्छा करियर बना सके।

व्यवसाय निर्धारण में महत्वपूर्ण विचारणीय भाव

- प्रथम भाव से व्यक्तित्व तथा व्यक्ति की प्रवृत्ति का पता चलता है।
- द्वितीय भाव वाणी का भाव होता है तथा धन का भाव माना जाता है।
- तृतीय भाव पराक्रम का तथा प्रयासों का भाव है।

ग्रह व व्यवसाय

- चतुर्थ भाव से शिक्षा की गति को बताता है।
- पंचम भाव से बुद्धि अर्थात मित का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। पंचम भाव व्यक्ति की बुद्धि और उसकी सृजनात्मक क्षमता, कल्पना शक्ति और विचारों का भाव है। व्यक्ति की रुचि किन क्षेत्रों में है, यह भी पंचम भाव से पता चलता है।
- छठा भाव नौकरी में किए जाने वाले प्रयासों और संघर्षों का भाव है, जो नौकरी के लिए काफी महत्वपूर्ण है। छठा भाव ही प्रतियोगी परीक्षाओं का भाव भी है। इस भाव से नौकरी में नियुक्ति और पदोन्नति तथा पदावनति का अध्ययन किया जाता है।
- सातवां भाव व्यक्ति के व्यापार को बढ़ाने वाला भाव है।
- नवम भाव उच्च शिक्षा में सफलता प्रदान करने वाला भाव है। इस भाव से स्थानांतरण भी देखा जाता है।
- दशम भाव कार्य और व्यवसाय का भाव है।
- एकादश भाव को लाभ तथा आमदनी का भाव भी माना जाता है क्योंकि इसी से प्राप्तियाँ देखी जाती हैं।

मुख्य रूप से चतुर्थ भाव हाईस्कूल अथवा इंटरमीडिएट तक की शिक्षा के बारे में जानकारी देता है तथा उच्च शिक्षा की जानकारी के लिए चतुर्थ भाव के साथ नवम और एकादश भाव की स्थिति का भी विश्लेषण किया जाता है।

लग्न शरीर है तो दशम भाव कर्म भाव है। कर्म की शुरुआत ही जीवन है और कर्म का अंत ही जीवन का अंत माना जाता है। यही वजह है कि दशम भाव बहुत महत्वपूर्ण भाव है। यह सबसे मजबूत और शक्तिशाली केंद्र भाव माना गया है तथा तीसरा और सप्तम भाव भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इन भावों का विचार व्यक्ति की वृत्ति और व्यवसाय की दिशा जानने के लिए ज्योतिषियों द्वारा किया जाता है।

स्वतंत्रं व्यवसाय अथवा नौकरी

हम अमूमन देखते हैं कि जब बच्चा जरा सा बड़ा होने लगता है तो घर वाले सबसे पहले पूछते हैं कि वह बड़ा होकर क्या बनेगा? कोई कहता है डॉक्टर, कोई वकील, कोई इंजीनियर, कोई फिल्म अभिनेता तो कोई आईएएस बनने का सपना देखता है। वैदिक ज्योतिष के माध्यम से इसे आसानी से समझा जा सकता है। इससे यह पता लगाया जा सकता है कि व्यक्ति व्यापार करेगा अथवा नौकरी तथा किस प्रकार के कार्य अथवा व्यवसाय से उसका जुड़ाव होगा।

स्वतंत्रं व्यवसाय के ज्योतिषीय योग

- नैसर्गिक रूप से बुध को व्यापार का कारक ग्रह माना जाता है और दशम भाव आजीविका का भाव है तथा सप्तम भाव व्यापार का भाव है, इसलिए यदि बुध का संबंध सप्तम और दशम भाव से स्थापित हो तो व्यक्ति व्यापार करता है।
- यदि सप्तम भाव और दशम भाव के मध्य कोई संबंध स्थापित हो और विशेषकर परिवर्तन संबंध हो तो व्यक्ति व्यापार की ओर उन्मुख होता है और उसकी आजीविका व्यापार से चलती है।
- सप्तम व्यापार का भाव तथा एकादश लाभ का भाव है। यदि इन दोनों के मध्य भी संबंध बने तो व्यक्ति को व्यापार से लाभ मिलता है।
- यदि बुध दशम भाव का स्वामी होकर एकादश भाव में हो या एकादश भाव का स्वामी होकर दशम भाव में हो तो भी जातक व्यापार करने में कुशल होता है।

ग्रह व व्यवसाय

- तीसरा भाव पराक्रम और रिस्क लेने की प्रवृत्ति भी बताता है और व्यक्ति की अपनी रुचियों का भाव भी है। यदि तीसरे भाव और दशम भाव के मध्य परिवर्तन का संबंध हो तो व्यक्ति अपना मनपसंद व्यवसाय कर सकता है। अक्सर ऐसे लोग अपनी किसी हॉबी को ही अपना प्रोफेशन बनाते हैं।
- पूर्ण परमात्मांश ग्रह कहलाने वाले सूर्य, चंद्र, मंगल और राहु यदि जन्म कुंडली के केंद्र अथवा त्रिकोण भावों में स्थित हो और मजबूत अवस्था में हो तो व्यक्ति स्वतंत्र व्यवसाय कर सकता है।
- इन ग्रहों का संबंध यदि लाभ भाव से बन जाए तो उच्च कोटि का व्यापारी बनने के योग दृष्टिगोचर होते हैं।
- यदि सप्तम भाव से द्वादश भाव के मध्य पांच ग्रह या उससे अधिक ग्रह स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति व्यापार द्वारा जीविका उपार्जन करता है और जीवन में उत्तम लाभ अर्जित करता है।
- यदि कुंडली के अधिकांश ग्रह वायु तत्व की राशियों में होकर बलशाली अवस्था में हों तो भी व्यक्ति स्वतंत्र व्यवसाय करता है।
- यदि व्यक्ति की कुंडली में अधिक धन योग बन रहे हों तो व्यक्ति व्यवसाय करके उत्तम लाभ प्राप्त करने में सफल हो सकता है।

नौकरी से सम्बन्धित ज्योतिषीय योग

 शिन ग्रह को कर्म का अधिपित ग्रह कहा गया है। यदि शिन का संबंध विशेष रूप से दशम भाव, दशमेश, छठे भाव, षष्ठेश, अष्टम भाव अथवा द्वादश भाव के स्वामी के साथ हो अथवा त्रिक स्थान के स्वामियों से शिन का संबंध बन जाए तो वह व्यक्ति नौकरी की ओर उन्मुख होता है।



- यदि कुंडली का छठा भाव अधिक मजबूत हो और अष्टक वर्ग में भी सबसे अधिक बिंदुओं के साथ हो तो व्यक्ति नौकरी में तरक्की पाता है।
- यदि छठे भाव का स्वामी दसवें भाव में अथवा दसवें भाव का स्वामी छठे भाव में हो तो व्यक्ति नौकरी करता है।
- यदि छठे भाव का संबंध लग्न और लग्नेश के साथ हो तो भी व्यक्ति अधिकतर नौकरी की ओर उन्मुख देखा जाता है।
- यदि लग्न, छठा भाव तथा दशम भाव का परस्पर संबंध हो तो नौकरी में व्यक्ति को आनंद आता है और उसे अच्छे पद की प्राप्ति भी होती है।
- यदि नवम भाव का स्वामी छठे भाव में हो और दशम भाव से संबंध बनाए तो व्यक्ति नौकरी करके अपनी आजीविका का उपार्जन करता है।
- यदि छठे, आठवें और बारहवें भाव के स्वामी दशम
 भाव से संबंध बनाएं तो व्यक्ति अक्सर नौकरी करता
 है।
- यदि अधिकांश ग्रह पृथ्वी तत्व अथवा जल तत्व की राशियों में हो तो व्यक्ति नौकरी करने में सफलता प्राप्त करता है।

विभिन्न ग्रह और उनसे सम्बंधित कार्यक्षेत्र

विभिन्न ग्रह अपने स्वभाव और प्रकृति के अनुसार विभिन्न प्रकार के कार्य क्षेत्रों पर अपना अधिकार रखते हैं, इसलिए उन ग्रहों के प्रभाव से व्यक्ति किसी खास क्षेत्र में अपनी पहचान बनाता है।

सूर्य ग्रह से संबंधित कार्यों में सरकारी नौकरी, सरकार से संबंधित काम, रेडियम, प्लैटिनम, चिकित्सा, एनाटॉमी, सचिवालय, उच्च पद, नेत्र रोग विशेषज्ञ, मंत्री अथवा मुख्यमंत्री, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, जौहरी, राजनीतिज्ञ, प्रशासनिक अधिकारी, बिजली संबंधित कार्य, तांबे के बर्तन, ऊनी कपड़े, रेशम, आदि से संबंधित कार्य में सफलता देता है।

चंद्र ग्रह पानी और पानी से संबंधित कार्य, पानी के जहाज़, औषधि, लोक निर्माण, कांच या शीशे का कार्य, अनाज विक्रेता, चावल, कपास, नमक निर्माण, दूध और डेयरी प्रोडक्ट, चाँदी और चाँदी से बनी वस्तुएँ, आयात निर्यात, भोज्य सामग्री का विक्रय, सरकारी अस्पताल में नर्स का कार्य, रेफ्रिजरेशन, रसोई गैस एजेंसी, जल शुद्धिकरण, मर्चेंट नेवी, मनोविज्ञान, आदि से संबंधित कार्यों में सफलता देता है।

यदि **मंगल ग्रह** की बात की जाए तो यह रियल एस्टेट, कंस्ट्रक्शन, पुलिस, आर्मी, सर्वे, इंजीनियरिंग, पहलवान, ऑटोमोबाइल, सर्जन, मैनेजमेंट, होटल व्यवसाय, प्रॉपर्टी डीलिंग, आदि कार्य में सफलता दिलाता है।

बुध ग्रह की स्थिति से व्यक्ति गणितज्ञ, सांख्यिकी में प्रवीण, मंत्रों का ज्ञाता, कॉमेडियन, वक्ता, ज्योतिषी, वैद्य,



व्यापारी, वकील, प्रकाशन, मुद्रक, शिल्पकार, दर्जी, डाक तार विभाग, लिपिक कार्य, कंप्यूटर कोर्स, मार्केटिंग, टेलीकम्युनिकेशन, वाणिज्य कार्य, दुभाषिया, बैंक, फाइनेंस, आदि का कार्य सफलतापूर्वक करवाता है।

बृहस्पित ग्रह की बात की जाए तो यह ज्ञान, अध्यात्म, बैंकिंग, कानून एवं विधि, साहित्य, अर्थशास्त्र, वेद पुराणों का अध्ययन, इंश्योरेंस, शिक्षा, सलाहकार, लेखक, व्याख्याता, प्रवचन कर्ता, मंत्री, धर्मगुरु, न्यायाधीश, वकील, स्टॉक ब्रोकर, लेखाकार, मेडिकल स्टोर, फाइनेंस, चार्टर्ड अकाउंटेंट, कोचिंग, कंपनी सेक्रेट्री, ह्यूमन रिसोर्स, आदि कार्यों में व्यक्ति को सफल बनाता है।

शुक्र ग्रह की कृपा से व्यक्ति कला और क्रिएटिव कार्य, गीत संगीत, वाद्य, काव्य, रत्न, आभूषण, कला, चित्रकला, फर्नीचर, अभिनय, कंप्यूटर, आर्किटेक्चर, इंटीरियर डेकोरेशन, फिल्म व्यवसाय, कॉस्मेटिक्स, सौंदर्य प्रसाधन, मोम, प्लास्टिक, ग्लास, रबड़ उपकरण, टैक्सटाइल, फैशन डिज़ाइनिंग, केमिकल इंजीनियरिंग, फोटोग्राफी, ब्यूटीशियन, इलेक्ट्रॉनिक सामान विक्रय, वस्त्र व्यवसाय, आदि संबंधित कार्यों में सफलता देता है।

शिन ग्रह प्रिंटिंग प्रेस, कोयले का कार्य, बड़ी कंपनियां, ब्याज का काम, कारखाने, मिल, स्टेट ब्रोकर, बीमा, लोहे

ग्रह व व्यवसाय

की वस्तुएँ, तेल के व्यापारी, भूमि संबंधित कानूनी कार्य, पुरातत्व विभाग, न्यायालय, जमीदारी, खनिज पदार्थ, जेल से संबंधित कार्य, विदेश नीति, आयरन तथा स्टील के कार्य, ठेकेदारी, सरकारी सेवा, भूगर्भ विज्ञान, श्रमिक, कृषि विज्ञान, एनिमल हसबेंडरी, मेटालर्जी, माइनिंग, लेदर, कीटनाशक, सिक्योरिटी सर्विस, सिविल कार्य, आदि से संबंधित कार्य प्रदान करता है।

कलयुग में **राहु** का प्रभाव सर्वविदित है। इसके प्रभाव से व्यक्ति तर्क शास्त्र, रेलवे कर्मचारी, कमीशन एजेंट, विज्ञापन एजेंट, इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, विद्युत का सामान, नशे की वस्तुएँ, अल्टरनेटिव थेरेपी, सर्कस, रिसर्च, सट्टा बाजार, शेयर बाजार, वायुयान से संबंधित कार्य, पायलट, अंतरिक्ष विज्ञान, वायरलेस, रेडियो, स्पेशल हीलिंग, आदिकार्य में सफलता देता है। केतु व्यक्ति को और रहस्यमय शक्ति और ज्ञान की ओर अग्रसर करता है। ऐसा व्यक्ति ज्योतिष, अध्यात्म, तंत्र मंत्र, बहु भाषी अर्थात कई लैंग्वेज को जानने वाला, खोज करने वाला, कंप्यूटर प्रोग्रामर, आदि कार्यों में सफल होता है

उपरोक्त ग्रह योग सामान्य प्रकृति के हैं, जिनसे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि कोई व्यक्ति स्वतंत्र व्यवसाय करेगा अथवा नौकरी करेगा लेकिन वास्तव में इसका विश्लेषण करना एक श्रम साध्य कार्य है, जो एक योग्य ज्योतिषी कठिन परिश्रम के उपरांत ही आपको बता सकता है। वास्तव में ज्योतिष एक अथाह सागर है। यह मानव जीवन को सही दिशा देने में सक्षम है।

> अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ क्लिक करें



करियर और कुंडली का प्रेम संबंध



किसी शायर ने कहा है कि तरिक्कयों के दौर में उसी का तरीका चल गया, बनाके अपना रास्ता जो भीड़ से आगे निकल गया। यानी सवा सौ करोड़ की आबादी वाले इस देश में अपनी मेहनत के बल पर पहचान बनाना आसान काम नहीं है। किंतु कर्म और भाग्य का सही तालमेल बैठ जाये तो सब कुछ संभव है। जीवन की यात्रा में मार्ग वही चुनें जो आपके स्वभाव के अनुसार हो। जहां आपको लगे कि यह काम मैं इस क्षेत्र में बेहतर कर सकता हूं, उसी कार्य को करें। अब आपके मन में प्रश्न उठ रहा होगा कि हमें कैसे पता कि किस क्षेत्र में हमें कामयाबी मिलेगी और क्या काम हमारे लिये बेहतर रहेगा। आपको जानकर खुशी होगी कि इसका सीधा जवाब ज्योतिष विज्ञान के पास है। आप स्वयं ही अपनी कुंडली के ग्रहों के आधार पर अपने करियर का चुनाव कर सकते हैं, अथवा किसी ज्योतिषी को अपनी कुंडली दिखाकर उनसे सलाह ले सकते हैं। ऐसे ही अंतर्मन में उठ रहे कुछ सवालों के जवाब इस आलेख में देने का प्रयास कर रहा हूं।

सामान्यतः वैदिक ग्रंथों के अनुसार सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि इन सात ग्रहों का अपना अलग-अलग क्षेत्र और प्रभाव है। लेकिन, जब इन ग्रहों का आपसी योग बनता है तो क्षेत्र और प्रभाव बदल जाते हैं। इन ग्रहों के साथ राहु और केतु मिल जाये, तो कार्य में बाधा उत्पन्न करते हैं। व्यावहारिक भाशा में कहें तो टांग अड़ाते हैं। जन्मकुंडली के मुख्य कारक ग्रह ही कुंडली के प्रेसिडेंट होते हैं। यानी जो भी कुछ होगा वह उन ग्रहों की देखरेख में होगा, अत: यह ध्यान में जरूर रखें कि इस कुंडली में कारक ग्रह कौन से हैं। अगर कारक ग्रह कमजोर हैं या अस्त है, वृद्घावस्था में हैं तो उसके बाद वाले ग्रहों का असर आरंभ हो जायेगा। मंगल, शुक्र और सूर्य, शनि करियर की दशा तय करते हैं। बुध और गुरु उस क्षेत्र की बुद्धि और शिक्षा प्रदान करते हैं। यद्यपि क्षेत्र इनका भी निश्चित है, लेकिन इन पर जिम्मेदारियां ज्यादा रहती हैं। इसलिये कुंडली में इनकी शक्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज हम किसी एक या दो ग्रहों के करियर पर प्रभाव की चर्चा करेंगे। जन्मकुंडली में वैसे तो सभी बारह भाव एक दूसरे को पूरक हैं, किंतु पराक्रम, ज्ञान, कर्म और लाभ इनमें महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही इन सभी भावों का प्रभाव नवम भाग्य भाव से तय होता है। अत: यह परम भाव है।

सूर्य और मंगल यानी सोच और साहस के परम शुभ ग्रह माने गये हैं। सूर्य को कुंडली की आत्मा कहा गया है। और शोधपरक, अविष्कारक, रचनात्मक क्षेत्र से संबंधित कार्यों में इनका खास दखल रहता है। मशीनरी अथवा वैज्ञानिक

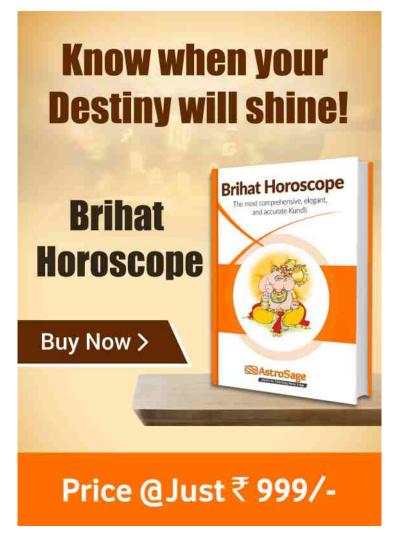
करियर और कुंडली

कार्यों की सफलता सूर्यदेव के बगैर संभव ही नहीं है। जब यही सूक्ष्म कार्य मानव शरीर से जुड़ जाता है तो शुक्र का रोल आरंभ हो जाता है, क्योंकि मेंडिकल एस्ट्रोजॉली में शुक्र तंत्रिका तंत्र विज्ञान के कारक हैं। यानी शुक्र को न्यूरोलॉजी और गुप्त रोग का ज्ञान देने वाला माना गया है। सजीव में शुक्र का रोल अधिक रहता है और निर्जीव में सूर्य का रोल अधिक रहता है। यदि आपकी कुंडली में ये दोनों ग्रह एक साथ हैं और दक्ष अंश की दूरी पर हैं तो ह मानकर चलें कि इनका फल आपके ऊपर अधिक घटित होगा। तीसरे भाव, पांचवें भाव, दशम भाव और एकादश भाव में इनकी स्थिति आपके कुशल वैज्ञानिक, अविस्कारक, डॉक्टर, संगीतज्ञ, फैशन डिजाइनर, हार्ट अथवा न्यूरो सर्जन बना सकती है। इन दोनों की युति में शुक्र बलवान हों, तो स्त्री रोग विशेषज्ञ बना सकते हैं। साथ ही ललित कला और फिल्म उद्योग में संगीतकार आदि बन सकते हैं। लेकिन. जब इन्हीं सूर्य के साथ मंगल देव मिले हैं, तो पुलिस, सेना, इंजीनियर, अग्निशमन विभाग, कृषि कार्य, जमीन-जायदाद. ठेकेदारी. सर्जरी. खेल. राजनीति तथा अन्य प्रबंधन कार्य के क्षेत्र में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। यदि इनकी युति पराक्रम भाव में दशम अथवा एकादश भाव में हो इंजीनियरिंग, आईआईटी वैज्ञानिक बनने के साथ-साथ अच्छे खिलाड़ी और प्रशासक बनना लगभग सुनिश्चित कर देती है। अधिकतर वैज्ञानिक, खिलाड़ियों और प्रभावशाली व्यक्तियों की कुंडली में यह युति और योग देखे जा सकते हैं। आज के प्रोफेशनल युग में इनका प्रभाव और फल चरम पर रहता है। इसलिये यह मानकर चलें कि यदि कुंडली में मंगल, सूर्य तीसरे दसवे या ग्याहरवें भाव में हो तो अन्य ग्रहों के द्वारा बने हयु योगों को ध्यान में रखकर उपरोक्त कहे गये क्षेत्रों में अपना भाग्य आजमाना चाहिये। यदि इनके साथ बुध भी जुड़ जायें तो एजुकेशन,

बैंक और बीमा क्षेत्र में किस्मत आजमा सकते हैं। लेकिन, इसके लिये कुंडली में बुध ओर गुरु की स्थिति पर ध्यान देने की जरुरत है। वास्तुकला तथा अन्य नक्काशी वाले क्षेत्रों के दरवाजे भी आपके लिये खुल जायेंगे, इसलिये कुंडली में अगर सूर्य, मंगल की प्रधानता हो तो इनके कारक अथवा संबंधित क्षेत्र अति लाभदायक और कामयाबी दिलाने वाले रहेंगे, इसलिये जो बेहतर और आपकी प्रकृति को सूट करे वही क्षेत्र चुनें।

पं. जयगोविन्द शास्त्री

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ क्लिक करें



व्यावसायिक प्रयोजनों में हस्तरेखा शास्त्र की भूमिका एवं योगदान



अरुण कुमार मेहरा



आयताकार हाथ और लंबी व नुकीली उंगलियां

जिन जातकों के हाथ आयताकार और उंगलियां लंबी व नुकीली होती हैं, ऐसे जातक धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं और उनके व्यवसाय सामाजिक कार्यकर्ता या सलाहकार के क्षेत्र में होते हैं। ये लोग बहुत भावुक प्रवृत्ति के होते हैं और दान पुण्य व समाज सेवा के कार्यों में बहुत रुचि रखते हैं।

अक्सर यह देखा गया है कि हम अपने व्यावसायिक प्रयोजनों के बारे में काफी चिंतित रहते हैं और यह जानने को उत्सुक रहते हैं कि हम कब और किस प्रकार का व्यवसाय करेंगे और क्या उसमें कभी कोई व्यवधान तो नहीं आएगा। इन प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए हमें हस्त रेखा शास्त्र से काफी सहायता मिलती है।

इस विषय में हमें हथेली और उंगलियों की बनावट व हाथों पर उभरी हुई रेखाओं और पर्वतों का विश्लेषण करना पड़ता है। जिन जातकों के हाथ वर्गाकार और उंगलियां छोटी, चपटी अथवा गोल होती हैं, वे लोग परंपरागत व पारिवारिक व्यवसाय में रुचि रखते हैं। ऐसे जातक शारीरिक व श्रम प्रधान व्यवसाय में संलग्न होते हैं। इन जातकों को नए नए अविष्कारों से कोई सरोकार नहीं होता। ये लोग अपने व्यवसाय के बारे में बड़े ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और अनुशासन प्रिय व समय के पाबंद होते हैं, परंतु ऐसे जातक ज्यादा महत्वाकांक्षी नहीं होते।

आयताकार हाथ और छोटी उंगलियां

जिन जातकों के हाथ आयताकार व उंगलियां छोटी होती हैं, वे लोग संवेदनशील नहीं होते और दूसरों की समस्याएं सुलझाने में वह अपना समय बेकार नहीं करते। अक्सर असामाजिक तत्व भी इस श्रेणी में आते हैं। ऐसे जातक प्रबंध नियंत्रण, व्यापार व खेलकूद संबंधी व्यवसाय में रुचि रखते हैं। ऐसे जातक नए-नए अविष्कारों के बारे में सजग रहते हैं और अपनी कार्यक्षमता को बढ़ाने का प्रयास करते हैं ताकि वे ऊँचे से ऊंचा मुकाम हासिल कर सकें और हर व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा में सबसे अग्रणी रहें।

वर्गाकार हाथ और लम्बी उँगलियाँ

ऐसे जातक जिनके हाथ वर्गाकार व उंगलियां लंबी होती हैं, वे लोग तर्क वितर्क व गहन अध्ययन के कार्यों में रुचि रखते हैं। ये लोग अच्छे लेखक, साहित्य, ज्ञान विज्ञान, संगीत, मीडिया व आईटी और तर्क वितर्क वाले व्यवसायों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। ऐसे जातकों के हाथों के पर्व गांठों वाले होते हैं।

भाग्य रेखा से व्यावसायिक प्रयोजन

- व्यावसायिक प्रयोजनों को जानने में भाग्य रेखा का भी बहुत बड़ा योगदान होता है। भाग्य रेखा का विश्लेषण जातक के दोनों हाथों को देखकर किया जाता है। अगर उसके बाएँ हाथ में भाग्य रेखा बहुत पतली कमजोर अथवा अदृश्य रूप में है और प्राकृतिक रूप से बढ़ती हुई दिखाई नहीं देती तथा उसके दाएँ हाथ में यह रेखा मणिबंध से शुरू होकर शिन पर्वत तक जाती है और काफी मजबूत स्थिति में नजर आती है तो इससे यह सिद्ध होता है कि जातक ने अपने जीवन काल में अपने पुरुषार्थ को प्रयोग करके अपने भाग्य को संवारा है और अपने कमजोर प्रारख्य पर विजय पाई है, जोकि सुप्त अथवा अपरिपक्व अवस्था में था।
- इसी प्रकार अगर जातक के बाएँ हाथ में भाग्य रेखा विकसित दिखाई देती हो परंतु उसके दाएँ हाथ में अविकसित अथवा कटी हुई अवस्था में दिखाई दे तो इसका अर्थ है कि जातक ने अपने आलस्य के कारण या अपने सगे संबंधियों अथवा मित्रों पर आश्रित होकर पुरुषार्थ नहीं किया है, जिससे उसका भाग्य सो गया है। ऐसे जातक भाग्य रेखा के उस अवधि काल में, जब यह रेखा कटी हुई अवस्था में नजर आए, किसी भी प्रकार के व्यवसाय के अवसरों से वंचित हो जाते हैं अथवा अपने चलते हुए व्यवसाय से हाथ धो बैठते हैं।
- कई बार ऐसा भी देखा गया है कि जातक के दोनों हाथों में भाग्य रेखा होती ही नहीं अथवा अत्यंत महीन

- व कमजोर अवस्था में नजर आती है। ऐसे जातक अपने लक्ष्य से दिशा विहीन होते हैं। वे यह निर्धारित करने में अपने आप को असमर्थ पाते हैं कि उन्हें कौन सा व्यवसाय चुनना है। शुरू में ऐसे जातक चाहे इतने होशियार ना रहें परंतु अपनी सतत चेष्टा, मेहनत व लगन से हर अवसर का लाभ उठाकर और निरंतर परिश्रम से अपना मार्ग ढूंढ लेते हैं। यहां उनका पुरुषार्थ उनके प्रारब्ध के ऊपर विजय प्राप्त कर लेता है। ऐसे लोग समय-समय पर अपने व्यवसाय को बदलते रहते हैं व अपने आपको अवसरवादी बना लेते हैं और भाग्य की ऊँचाइयों को तय कर लेते हैं। ऐसे जातक एक ही प्रकार के व्यवसाय में अधिक समय तक नहीं टिक पाते। वे देश, पात्र और काल के हिसाब से अपना लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं।
- ऐसे जातक जिनके हाथ में भाग्य रेखा निरंतर रूप से लंबी होती है, वे यह धारणा रखते हैं कि उनका भाग्य निश्चित एवं सुदृढ़ है और भाग्य अनुसार वे कोई ना कोई आजीविका अपना ही लेंगे, इसलिए वह पुरुषार्थ करने में उदासीन रहते हैं और किसी विकल्प को ढूंढने का प्रयास नहीं करते क्योंकि इनमें महत्वाकांक्षा की कमी होती है, परंतु ऐसे जातक अंत तक एक ही प्रकार का व्यवसाय चुनते और करते हैं, जिससे वे उस व्यवसाय में महारत हासिल कर लेते हैं। ऐसे लोगों को अपने जीवन काल में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा की आवश्यकता होती है ताकि वे कुएँ के मेंढक बनने से बच सकें। ऐसे लोग पारिवारिक और पारंपरिक व्यवसाय करने में ही रुचि रखते हैं।
- जिन जातकों के हाथ में चंद्र पर्वत से कोई रेखा शुरू

हर-तरेखा शास्त्र

होकर भाग्य रेखा से मिलती है, उनको अपने व्यवसाय में किसी विपरीत लिंगी व्यक्ति से धन अथवा सलाह के

- रूप में सहायता मिलती है। ऐसे जातक संवेदनशील व बहुत जल्दी विचलित होने वाले स्वभाव से ग्रसित होते हैं व समाजिक कल्याण और मातृत्व के भाव को प्रदर्शित करने वाले व्यवसायों में रुचि रखते हैं, ताकि वे समाज में अपनी एक अलग पहचान बना सकें।
- जिन जातकों की भाग्य रेखा मणि बंध अथवा उसके काफी करीब से आरंभ होती है, ऐसे जातक अपने व्यवसाय की शुरुआत जीवन में बहुत जल्दी कर लेते हैं। इसके विपरीत जिन जातकों के हाथ में बहुत सी छोटी-छोटी भाग्य रेखाएं मस्तिष्क रेखा से ऊपर के भाग से या हृदय रेखा के ऊपर के भाग से शनि पर्वत पर चिन्हित होती है, वे लोग किसी प्रकार का पार्ट टाइम व्यवसाय अथवा अपनी किसी हॉबी को अपने जीवन काल की वृद्घावस्था में यानि जीवन की साँझ होते-होते शुरू करते हैं।
- अगर एक भाग्य रेखा के साथ कुछ अवधि के पश्चात एक नई भाग्य रेखा का उदय होता है तो यह इस बात का प्रतीक है कि जातक अपने व्यवसाय में या तो कोई परिवर्तन ला रहा है या एक साथ दो विभिन्न प्रकार के व्यवसाय में जाना चाहता है।
- अगर जातक की भाग्य रेखा श्रृंखलाकार हो जाए तो ऐसे जातक अपनी अंतरात्मा को संतुष्ट करने वाले व्यवसाय करने के लिए बाध्य नहीं होते बल्कि उनके सामने कई विकल्प खुले रहते हैं और ये लोग अपने

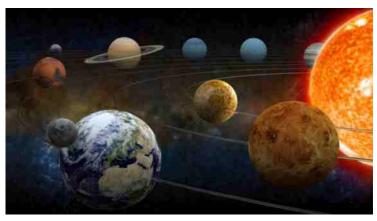
मान सम्मान व रचनात्मकता को प्रकट करने वाले व्यवसाय चुनने में रुचि रखते हैं, जैसे मार्केट रिसर्च अथवा मीडिया और आईटी से संबंधित व्यवसाय। ऐसे जातक एक तरह के व्यवसाय में अधिक देर तक टिकने का प्रयास नहीं करते। वे अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं क्योंकि इन्हें बाहरी परिस्थितियां बहुत प्रभावित करती हैं।

- यदि भाग्य रेखा बहुत मोटी व गहरी हो तो ऐसे जातक असम्मत तथा कठोर स्वभाव के होते हैं और अपनी शर्तों पर काम करते हैं और लक्ष्य पूर्ति के लिए किसी भी बाहरी दबाव की उपेक्षा कर देते हैं।
- यदि जातक की भाग्य रेखा हाथ के मूल भाग से या मध्य भाग से शुरू हो तो ऐसे जातक स्वभाव और बुद्धि में जल्दी परिपक्व हो जाते हैं।
- यदि जातक की भाग्य रेखा का उद्गम जीवन रेखा के मध्य से होता है तो तो ऐसा जातक पारिवारिक व्यवसाय को अपनाता है या परिवार के प्रभाव में और परामर्श के अनुसार ही अपना व्यवसाय शुरू करता है।
- यदि भाग्य रेखा पर किसी द्वीप, नक्षत्र अथवा क्रॉस का चिन्ह नजर आता है तो इसका अर्थ है कि व्यवसाय में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न होने वाला है।
- उपरोक्त विश्लेषण और उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि हस्तरेखा शास्त्र जातक के व्यवसायिक व्यक्तित्व के बारे में अनुमान लगाने में काफी सहायक सिद्ध होता है।

नीच ग्रह : फल और करियर पर प्रभाव



योगेश दरीरा



ज्योतिष के हिसाब से हर ग्रह का प्रभाव मानव मस्तिष्क और उनके चित्त पर पड़ता है। जब किसी मनुष्य का जन्म होता है, तो उस समय के ग्रह नक्षत्रों की स्थिति उसके मन पर एक छाप छोड़ती है। यह ग्रह नक्षत्र चेतन और अवचेतन मन पर अपना प्रभाव डालते हैं। आपने ज्योतिषीय आर्टिकल पड़े होंगें, उनमें आपने ज्योतिषीय योगों के बारे में भी पढ़ा होगा, कौन सा योग क्या करता है, कौन-कौन से योग आपको करियर में सफलता दिलाएंगे, इसकी जानकारी आपको हो सकती है।

मगर अक्सर हम यह नहीं देखते कि यदि कोई ग्रह नीच का है, तो वह आपके व्यक्तित्व में क्या कमी लेकर आएगा, और उस कमी के चलते आपके करियर पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। जब तक आपको अपनी कमज़ोरी के बारे में पता नहीं होगा, आप उस पर काम नहीं कर पाएंगे और सफलता के उस शिखर को प्राप्त नहीं कर पाएंगे, जो आप प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं।

आइए, अब जानते हैं कि ग्रहों की नीच या दुर्बल अवस्था

कैसे आपके करियर में आपकी निर्णय और कार्य क्षमता को प्रभावित करती है-

सूर्य

आत्मविश्वास, इच्छा शक्ति में कमी, जुझारू प्रवृत्ति में कमज़ोरी, अदूरदर्शिता। यदि आपकी कुंडली में "सूर्य" नीच अवस्था में है तो व्यक्ति के अंदर हमेशा दूसरे से मान्यता, प्रशंसा



प्राप्त करने की भावना रहेगी। उसे समाज सिर्फ सफलता के मापदंड से दिखता है। "सूर्य "क्योंकि पिता का कारक है तो व्यक्ति को जो प्रशंसा और मान्यता बचपन में अपने पिता से प्राप्त नहीं हुई, वह उसे दूसरों से प्राप्त करना चाहता है। वह जो भी कार्य करेगा, वह दूसरों का ध्यान आकर्षित करने के लिए करेगा, श्रेय प्राप्त करने के लिए करेगा ना कि अपनी ख़ुशी के लिए। इसलिए यदि आपकी कुंडली में सूर्य नीच अवस्था में है तो आपको खुद पर, अपने कौशल पर भरोसा होना चाहिए और जो भी कार्य करें, उसमें अपनी ख़ुशी ढूंढें न कि दूसरों की खोखली प्रशंसा।

चंद्रमा

असुरक्षा की भावना, खुद पर अविश्वास, अत्यधिक भावुकता, दूसरों से जल्दी प्रभावित होना, परिस्थितियों पर दोष मढ़ना। चंद्रमा क्योंकि मन का कारक है, यदि यह अपनी नीच या दुर्बल स्थिति में



<u>ग्रहों के प्रभाव</u>

कुंडली में विराजमान है तो व्यक्ति हमेशा चिंतित रहता है। छोटी- छोटी बातों पर परेशान होता है. किसी भी छोटी सी परेशानी में खराब स्थिति की कल्पना कर लेता है. जिससे निर्णय लेने में देरी और कार्यों को टालने की प्रवृत्ति को बढावा मिलता है। "चंद्रमा " माता का, बचपन का भी सूचक है, तो हो सकता है कि बचपन में आप अधिक सुरक्षात्मक वातावरण में पले-बढ़े होंगे, जिससे सुरक्षा की भावना घर कर गई और आपकी जोखिम लेने की क्षमता प्रभावित होगी. जो व्यवसाय और नौकरी दोनों में सफलता के लिए जरूरी है। आप दूसरों पर ज्यादा निर्भर रहेंगे। क्षमतावान होते हुए भी मैनेजमेंट तक अपनी बात कहने में हिचकिचाएंगे। वह काम हाथ में लेंगे, जो आपकी ज़िम्मेदारी में भी शामिल नहीं है क्योंकि डर प्रभावी रहेगा, जिससे सही संदेश नहीं जाएगा। इसलिए यदि आपकी कुंडली में चंद्रमा नीच अवस्था में है तो स्वयं पर भरोसा रखें। स्वयं कार्यों की ज़िम्मेदारी लें। और आज में जीना सीखें, तभी आप अपनी क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन कर पाएंगे।

मंगल

मंगल ग्रह "बाहुबल " का प्रतीक है, "प्रतियोगी" भावना का प्रतीक है। यदि यह कुंडली में "नीच" या दुर्बल अवस्था में विराजमान है तो यह आपको अति भावुक और शर्मिला बना सकता है। अपने बाहुबल की बजाय दूसरों पर अधिक निर्भर रहेंगे, प्रति-शोध की भावना ज्यादा घर करेगी, जिससे आप अपनी ऊर्जा छोटे-छोटे कार्यों को करने में ज्यादा बर्बाद करेंगे। मेहनत करने की बजाय जोड़-तोड़ में ज्यादा विश्वास करेंगे, जिससे उच्च मैनेजमेंट तक सही संदेश नहीं

जाएगा। आप अपनी ग़लतियाँ स्वीकार करने में

हिचिकचाएंगे, जो भी आपको सलाह देने आएगा, वह आपको अपना दुश्मन लगेगा। आपको यह समझना चाहिए की व्यक्ति अपनी ग़लितयों से ही सीखता है, जिससे उसे आगे बढ़ने के अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं। इसलिए यदि कुंडली में मंगल नीच का है तो सबसे सलाह लें और उन्हें मानें ग़लितयाँ स्वीकारें, तभी आप अपनी ऊर्जा को सही दिशा दे पाएंगे।

बुध

"बुध" ग्रह कुंडली में जागरूकता, वाणी, सूचनाओं के आदान-प्रदान का ग्रह है। यह ग्रह एक अच्छी बिज़नेस सेंस भी देता है। यदि कुंडली में " बुध" ग्रह अपनी" नीच" या दुर्बल अवस्था में विराजमान है



तो आपको अपने स्वभाव में अधिक आलोचनात्मक बनायेगा. जिससे आप हर अवसर मिलने पर उसमे जांच-पड़ताल में ही समय व्यतीत कर देंगे. जिससे अवसर हाथ से निकलने के आसार होंगे। "बुध" ग्रह के निर्बल होने से आपके ऊपर ग़लतियाँ करने का डर आपके ऊपर हमेशा हावी रहेगा। आप किये हुए हर कार्य को बार- बार चैक करेंगें. हमेशा अपनी परफॉरमेंस को लेकर चिंतित और बैचेन रहेंगे. जिससे निर्णय लेने में देरी तो होगी ही. साथ ही हर काम अपनी तय सीमा से कभी पूर्ण नहीं कर पाएंगे। इस में आपको प्रेजेंटेशन देने में भी दिक्कत आएगी, आपको हमेशा यही लगेगा की आपसे कुछ छूट गया, आप बहुत कुछ कह सकते थे, मगर कह नहीं पाए। जहां अचानक निर्णय लेना पड़ जाए, वहां आप खुद को असहज महसूस करेंगे। इस लिए जब आपकी कुंडली में "बुध" नीच का हो तो आपको अधिक क्रियाशील होना चाहिये, तभी आपको अधिक लाभ प्राप्त होंगे।

ग्रहों के प्रभाव

गुरु

"गुरु" ग्रह कुंडली में ज्ञान, सकारात्मकता, सही दिशा का प्रतीक है। अगर गुरु "नीच अवस्था में आपकी कुंडली में विराजमान है तो यह आपको नकारात्मक अवस्था की और ले जाता



है। आपको आधा ग्लास भरा होने कि बजाय हमेशा आधा खाली ही नज़र आएगा। आप अपने प्रयासों पर ध्यान देने की बजाय ज्यादा भाग्यवादी बनेंगे, जिससे कार्य कुशलता पर प्रभाव पड़ेगा। आप परिस्थितियों और लोगों पर ज्यादा डिपेंडेंट रहेंगे। अपने कार्यों में असंगठित रहेंगे. अपनी बनाई सीमा तय कर के चलेंगे और उससे बाहर सोचने का प्रयत्न भी नहीं करेंगे। इससे आप सीमित सोच के दायरे में रहेंगे. जिससे आगे बढ़ने में आपको परेशानी आएगी और आप सही प्रकार से जिस कंपनी में कार्य करते हैं, या व्यवसाय में हैं तो अपना पूर्ण योगदान वहां नहीं दे पाएंगे। इसलिए यदि कुंडली में " गुरु" नीच अवस्था में हैं, तो आपको हमेशा सकारात्मक रहने की कोशिश करनी चाहिए। भाग्य के सहारे आगे बढ़ने की बजाय आपको मेहनत करनी चाहिए। इसके साथ ही यदि आप अपने गुरुजनों का सम्मान करते हैं और उनसे सलाह लेते हैं तो सकारात्मक फल आपको अवश्य मिलते हैं।

शुक्र

"शुक्र" ग्रह कुंडली में रचनात्मकता, सुंदरता, संतुष्टि, अच्छा प्रस्तुतिकरण, अपनी बात दूसरों तक अच्छे से पहुँचाने की कला का कारक ग्रह है। यह ग्रह यदि कुंडली में नीच अवस्था में हो तो यह दर्शाता है कि आपको हमेशा अपने काम में संतुष्टि की



भावना नहीं मिलेगी, हमेशा कुछ ख़ालीपन लगता रहेगा, जिससे किसी व्यवसाय या नौकरी में लम्बे समय तक रहने में दिक्कत आएगी। दूसरों के प्रति आपके मन में हमेशा संदेह की स्थिति रहेगी, इसलिए आप अपना समय लोगों को खुश करने में लगा सकते हैं, इससे लोगों को आप पर कम विश्वास होगा. जिससे आपकी विश्वसनीयता भी कम होगी। "शुक्र" के नीच राशि में होने से आप अपनी बात प्रभावशाली तरीके से सबके सामने नहीं रख पाएंगे, आपको अपनी बात समझाने में बहुत समय लगेगा। इससे आत्मविश्वास के साथ-साथ आपकी कार्य क्षमता भी प्रभावित होगी। इसलिए कुंडली में जब शुक्र नीच का हो तो आपको खुद को किसी रचनात्मक कार्य में लगाए रखना चाहिये, चाहे थोड़े से समय के लिए ही क्यों न हो। रचनात्मक कार्यों में नृत्य, गाना -बजाना, पेंटिंग इत्यादि से आपके प्रस्तुतिकरण में बहुत सुधार होगा।

शनि

शनि ग्रह ज्योतिष में अनुशासन, नियम, समयबद्धता और समर्पण का कारक ग्रह है। जब यह आपकी कुंडली में अपनी "नीच" अवस्था मैं रहता है तो यह आलस्य, लापरवाही आदि देता है।



आपकी अपने कार्यों के प्रति समर्पण की भावना में कमी लाता है। आप कार्यों को बेवजह टालने लगते हैं, किसी भी तरह से खुद को फोकस्ड नहीं रख पाते। इससे आप को निरंतरता पाने में हमेशा दिक्कत होगी, जिससे कार्य-क्षमता प्रभावित होना लाजुमी है। यह आपकी नौकरी और व्यवसाय दोनों के लिए ही खराब है। इसलिए यदि आपकी कुंडली में "शनि" नीच का होकर विराजमान है तो छोटे-छोटे लक्ष्य बनाएँ, उन्हें प्राप्त करने का प्रयास करें, जिससे निरंतरता और आत्मविश्वास में वृद्धि हो। "शनि"

ग्रहों के प्रभाव

अनुशासन का ग्रह है, इसलिए किसी भी प्रकार के नियम में खुद को ढालने का प्रयास करें, चाहे वह सुबह जल्दी उठने का नियम ही क्यो न हो, और उसे कम से कम 21 दिन तक करने का प्रयास करें, इससे शनि देव प्रसन्न होते हैं और आपको भी सकारात्मकता नजर आएगी।





ग्रहों का करियर कनेक्शन



ज्योति ठाकुर



बड़े होकर क्या बनोगे - बचपन में पूछे जाने वाले सबसे कॉमन सवाल कितना दिलचस्प होता है न. ये वो सवाल है जिसके जवाब की तलाश की शुरुआत उसी नन्हीं उम्र में हो जाती थी. वो बात अलग है कि स्कूल में टीचर को पढ़ाते देखा तो मन करता टीचर बन जाएं. किपलदेव या सिचन को बल्ला भांजते देख तमन्ना पलने लगती कि क्रिकेटर बन जाएं. हद तो तब हो जाती थी जब पर्दे पर हीरोहिरोइन को देख कर स्टार वन जाने की तलब जोर मारने लगती. ऐसा शायद इसलिए क्योंकि स्टार बनकर पर्दे पर कभी टीचर बन जाओ तो कभी क्रिकेटर, कभी वकील तो कभी पायलट.

ये तो हुई बचपन की बातें. वक्त गुजरता है आप बड़े होते हैं. कुछ न कुछ बन ही जाते हैं फिर भी खुश नहीं रहते और वजह पूछो तो जवाब आता है - सितारों ने साथ नहीं दिया वरना कहीं और ही होते. अगर ज्योतिष के टेलीस्कोप से देखिए तो आपके जीवन की बाईस्कोप में वाकई सितारों का ही रोल है वो भी बेहद अहम. वो सितारे ही हैं जो तय करते हैं कि आपने जो करियर चुना है उसमें आप चमकेंगे

या नहीं.

एस्ट्रोसेज ई-मैगजीन के करियर एडिशन में आपको बताते हैं उन ग्रहों के बारे में जिनका सीधा कनेक्शन है आपके करियर से. इस लेख में आपको जो बात खास मिलेगी वो होगी ट्रेंडिंग प्रोफेशन और अपकमिंग प्रोफेशन को बढ़ावा देने वाले ग्रहों की जानकारी.

सूर्य - अगर कुंडली में नवग्रहों के राजा सूर्य बलवान हैं, दोषमुक्त हैं, उच्च या परमोच्च हैं तो जाहिर तौर पर आप प्रशासनिक अधिकारी तो होंगे ही इसके अलावा आप बन सकते हैं इवेंट मैनेजर. सूर्य जब बुध और शुक्र के साथ दशम भाव में बैठे तो ऐसा करियर आपको उंचाइयों पर पहुंचा सकता है.

चंद्रमा - कुंडली में चंद्रमा की मजबूत स्थिति आपको बनाती है समंदर का सैनिक. इसके अलावा आप इंपोर्ट-एक्सपोर्ट का काम चुन सकते हैं. बुध बलवान है तो आप सीफूड का व्यापार भी कर सकते हैं.

मंगल - अगर आप चाहते हैं कि स्टार्ट अप इंडिया का हिस्सा बने, अपना काम शुरु कर उद्यमी कहलाएं तो पहले कुंडली में मंगल की स्थिति जरूर देखिए. बलवान मंगल आपको सफल ऑन्टरप्रेन्यूर बनाता है.

बुध - आपकी कुंडली में मजबूत बुध व्यापार में सफलता

करियर कनेक्शन

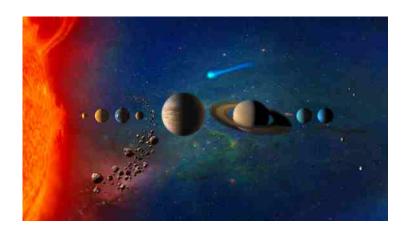
देता है. इससे परे ग्रहों का राजा बुध आपको बनाता है लेखक, बुद्धिजीवी. कुंडली में बुध के साथ-साथ शुक्र, चंद्रमा और राहु की स्थिति प्रबल है तो आपके लिए एनिमेशन और ग्राफिक्स जैसे करियर बेहतर साबित होंगे.

गुरू - देवगुरू बृहस्पति की मजबूत स्थिति आपको वास्तविक जीवन में गुरू ही बनाती है. अगर आपकी कुंडली में गुरु बलवान है, सूर्य दोषमुक्त है, डिग्री अच्छी है तो आप सोशल साइंस एंड ह्युमैनिटीज फील्ड में करियर चुनना सही होगा.

शुक्र - दैत्यगुरु शुक्राचार्य इस कलियुग में कई दिलचस्प प्रोफेशन के मालिक हैं. एक्टिंग, मॉडलिंग, कोर्डिनेशन जैसे काम में आपको महारत तभी हासिल होगी जब आपका शुक्र बलशाली होगा. इससे परे आप अच्छे शुक्र के साथ अच्छे मेकअप आर्टिस्ट भी हो सकते हैं.

शिन - सूर्य पुत्र शिन महाराज की कृपा अगर आप पर है तो आप सिविल इंजीनियर होते हैं. मोबाइल बिजनेस, धातु, कोयले से जुड़े काम का आधिपत्य भी शिन को ही है. खास बात ये है कि जैसे सूर्य सरकारी नौकरी देने वाला ग्रह है वैसे ही शिन प्राइवेट नौकरी देने वाला ग्रह है. शिन के साथ अगर आपका गुरू भी बलशाली हो तो आप ऐतिहासिक, धार्मिक या ट्रैजिक पिक्चरें बना सकते हैं.

राहु - अगर आप नामी गिरामी राजनीतिज्ञ हैं तो समझ लें आपका राहु बलशाली और शुभ स्थिति में है. ऐसा राहु आपको कूटनीति में महारत दिलाता है. बुरे या क्रूर काम, चोरी, हिंसा वगैरह भी राहु के प्रभाव से ही किए जाते हैं. राहु मजबूत है तो आप अच्छे जादूगर हो सकते हैं. केतु – अगर आपको कई सारी भाषाओं का ज्ञान है तो आप शुभ और बलशाली केतु के प्रभाव में हैं. केतु आपको समाज सेवा जैसे कामों में शोहरत दिलाता है. धर्म-आध्यात्म के क्षेत्र में आप करियर बना सकते हैं.



भारत के चुनिंदा ट्रेंडिंग प्रोफेशन के लिए दो ग्रह बेहद अहम रोल निभाते हैं वो हैं राहु और गुरू. इनके अलावा भी कुछ खास ग्रह हैं जिनकी युति, दृष्टि, डिग्री को समझते हुए करियर का निर्धारण किया जाता है. नीचे 10 करियर ऑप्शन और उनसे संबंधित ग्रहों की जानकारी दी जा रही है.

डाटा साइंटिस्ट - अगर आप डाटा साइंटिस्ट बनना चाहते हैं तो आपकी कुंडली में देवगुरु बृहस्पति और छाया ग्रह राहु का विशेष महत्व होता है. इसके साथ-साथ फलाने ग्रह का कुंडली में बलवान होना बहुत जरुरी है.

आर्किटेक्ट - आपके सपनों का घर इंजिनीयर बना कर दे देते हैं पर उसे सजाने संवारने की जिम्मेदारी होती है कुशल आर्किटेक्ट की. दूसरों का घर संवारने वाले आर्किटेक्ट की कुंडली के सितारे जो उनका करियर संवारते हैं बुध, शुक्र और मंगल. इन तीन ग्रहों का करियर भाव से कनेक्शन आपको कुशल आर्किटेक्ट बनाता है.

करियर कनेक्शन

यूट्यूबर - डिजिटल प्लैटफॉर्म पर यूट्यूब की क्रांति हो आप देख-समझ ही रहे हैं. वीडियो कोई भी बना लेता है पर उसका वायरल न होना परेशानी का सबब बन जाता है. ये परेशानी दूर करते हैं देवगुरु बृहस्पति. कुंडली में गुरु, राहु, शुक्र और बुध आपको डिजिटली फेमस बनाते हैं.

टिकटॉकर - पंद्रह-बीस सेकेंड की वीडियो बना कर नेम, फेम, मनी कमाना आजकल के ट्रेंडिंग प्रोफेशन में से एक है. ऐसे इंटरटेनिंग वीडियो आपको तभी पॉपुलर क्रिएटर बनाते हैं जब आपकी कुंडली में बुध शानदार स्थिति में हो. इस बुध को सपोर्ट करता हुआ गुरू, राहु और शुक्र भी मौजूद रहे. ग्रहों के इस कॉम्बिनेशन में शुक्र की शुभता बेहद अहम है.

आर्टिफिशियल एंटेलिजेंस - अगर कुंडली में राहु और बुध मजबूत स्थिति में हैं, करियर और एजुकेशन भाव से संबंध रखते हों तो आप आर्टिफिशियल एंटेलिजेंस से जुड़े काम को अपना करियर बनाएं. ऐसा काम करने में आपको तरक्की और जॉब सैटिस्फैक्शन दोनों मिलेंगे.

एविएशन इंडस्ट्री - कलयुग का करियर किंग राहु शुभता के साथ देवगुरू बृहस्पति के साथ करियर भाव से शुभ संबंध बना रहा हो तो आपके लिए बेहतरीन विकल्प है एविएशन इंडस्ट्री.

एनिमेशन & ग्राफिक्स - बचपन वाले कार्टून कैरेक्टर आपको अबतक नहीं छोड़ रहे तो उनके साथ ही अपना करियर बनाने की सोचिए. कुंडली में अगर चंद्रमा, शुक्र, बुध और राहु का शुभ प्रभाव करियर भाव पर पड़ रहा हो तो आपके लिए एनिमेशन और ग्राफिक्स से बेहतर विकल्प दूसरा नहीं.

एथिकल हैिकंग - ज्यादातर आइटी प्रोफेशनल एथिकल हैकर बनने की ख्वाहिश रखते हैं पर ये ख्वाहिश उन्हीं की पूरी होती है जिनकी कुंडली में राहु, बुध और देवगुरू बृहस्पति करियर के साथ-साथ एजुकेशन भाव पर कृपा बरसाते हैं.

स्टैंड अप कॉमेडी - खुशियां बांटना, लोगों को हंसाना हर किसी के बस की बात नहीं. जरा सोचिए ये दोनों काम करते हुए खूब सारे पैसे भी कमा लिए जाएं तो. ऐसा तब संभव है जब आपकी कुंडली में बुध, गुरू, मंगल और शुक्र प्रभावी हो. ग्रहों के इस कॉम्बिनेशन में अगर मंगल की प्रबलता है तो आप व्यंग्य के साथ कॉमेडी करेंगे.

डिजिटल मार्केटिंग प्रोफेशनल – अगर आप चाहते हैं इंटरनेट के सोशल मीडिया पर आधिपत्य जमाने का नुस्खा डीकोड करें तो अपनी कुंडली चेक करें. कुंडली में मंगल, बुध और राहु अपनी कृपा आपके करियर और एजुकेशन भाव पर डाल रहे हों तो आप सफल डिजिटल मार्केटिंग प्रोफेशनल होंगे.

बढ़िया करियर बनाने के लिए कड़ी मेहनत, लगन और अनुशासन की जरूरत होती है पर ये सब तब काम आते हैं जब आपकी दिशा सही हो. आपको सही दिशा की जानकारी आपकी कुंडली देती है. जो विद्यार्थी अभी करियर चुनने के मुहाने पर खड़े हैं उन्हें एस्ट्रो करियर अडवाइस जरूर लेनी चाहिए ताकि भविष्य को सुनहरा बनाने के लिए की जानी वाली मेहनत सही दिशा में हो.

सितारे बनाएं मीडिया शिक्षण में करियर



सीबीएसई देश भर के सरकारी व पब्लिक स्कूलों में मीडिया स्टडीज का कोर्स शुरू कर चुका है लेकिन मीडिया कोर्स को पढ़ाने के लिए स्कूलों में पर्याप्त शिक्षक नहीं है। एक अनुमान के मुताबिक फिलहाल देशभर में 22000 शिक्षको की जरूरत है। साफ है कि मीडिया शिक्षण में आने वाले दिनों में रोजगार की बड़ी संभावना है। लेकिन, ज्योतिषीय दृष्टि से देखें तो मीडिया शिक्षण हर किसी के बस की बात नहीं है। कुछ खास ग्रहों के 'खेल' के बिना इस क्षेत्र में करियर बनाना संभव नहीं है।

निश्चित तौर पर मीडिया के आकर्षण से आज कोई नहीं बच पा रहा है। आज की युवा पीढी को भी मीडिया क्षेत्र में बहुत संभावनाएं दिखाई दे रही हैं। क्योंकि मीडिया में नाम और पैसा दोनों हैं। अत: बहुत से नौजवानों के मन में यही सवाल है कि क्या वो इस क्षेत्र में करियर बना सकते हैं। इस प्रश्न का सही उत्तर ज्योतिष द्वारा दिया जा सकता है।

ज्योतिष द्वारा हम ज्ञात कर सकते है कि कौन से ज्योतिषीय योग व्यक्ति को मीडिया में जगह दिलाते हैं। एक तो मीडिया में व्यवसाय सीधे मीडिया कर्मी जैसे रिपोर्टर, न्यूज रीडर, प्रोड्यूसर, कॉपी राइटर आदि बनकर प्राप्त किया जा सकता है। दूसरा, मीडिया शिक्षक बनकर करियर बनाया जा सकता है। मीडिया में कैरियर बनाने के लिये मीडिया की शिक्षा की जरूरत है और मीडिया सम्बधी शिक्षा देने के लिये मीडिया शिक्षक का होना जरूरी है और जब सीबीएसई बोर्ड ने यह निश्चित किया है कि स्कूलों मे मीडिया की शिक्षा दी जायेगी तो जाहिर है कि विषय के विशेषज्ञ शिक्षकों की बहुतायत से आवश्यकता होगी, अतः आने वाले वर्षों में मीडिया शिक्षक का कैरियर बहुत ही उज्ज्वल तथा फायदेमेंद है।

तो आइये जानते हैं कि कौन कौन से ज्योतिषीय योग एक व्यक्ति को सफल मीडिया शिक्षक बना सकते हैं।

मीडिया मे अभिव्यक्ति, ज्ञान सम्प्रेषण, वाक चातुर्य एवम कलात्मक अभिरुचि आदि का होना अनिवार्य है। अतः मीडिया शिक्षक बनने के लिये उपर्युक्त गुणों का होना अति अनिवार्य है। इसकी सफलता के लिये जातक की कुन्डली में बुध, गुरु,शुक्र एवमं द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, भाग्य और दशम भाव का बलवान होना आवश्यक है।

शिक्षक बनने के लिये तीव्र बुद्धि एवम याददाश्त का होना आवश्यक है। शिक्षक के व्यव्साय में वाणी का महत्व सर्वोपिर है। इसके लिये बुध का बलवान होना अति आवश्यक है। बातचीत करने की कला जन्म कुन्डली के दूसरे स्थान से मालूम होती है अतः वाणी का कारक बुध

सितारे और करियर

बलवान हो और द्वितीय भाव पाप प्रभाव में न हो और अगर बुध का सम्बन्ध गुरू से भी हो जाये तो सोने पे सुहागा होता है। मीडिया शिक्षक बनेने में चतुर्थ स्थान की भूमिका भी नजर अंदाज नहीं की जा सकती है। चतुर्थ स्थान शुभ प्रभाव में होने से तथा साथ में उपर्युक्त योग होने से जातक एक मीडिया शिक्षक बन सकता है।

उत्तर कालामृत के अनुसार द्वितीय भाव से वाणी, जिह्वा, मृदु वचन, व्याख्यान क्षमता, विद्या आदि का पता चलता है। अतः जिसकी कुन्डली मे द्वितीय भाव, द्वितीयेश ग्रह और बुध इनका सम्बन्ध शुभ ग्रहों से हो तो जातक शिक्षक बनता है। मीडिया शिक्षक बनने के लिये बुध, शुक्र, अगर तृतीय या तृतीयेश चतुर्थ और पंचम भावो या भावेशों से सम्बन्ध रखते हो तो जातक एक सफल मीडिया शिक्षक बन सकता है।

अब हम मीडिया क्षेत्र में एक सफल शिक्षक बनने के अन्य ज्योतिषीय योगों का विवेचन करते हैं, जो कि इस प्रकार हैं-

- प्रारम्भिक शिक्षाका भाव चतुर्थ होता है और माता को प्रथम गुरू कहते हैं। चन्द्र और गुरू का दशम भाव से सम्बन्ध हो और साथ मे सूर्य बलवान हो तो जातक मीडिया क्षेत्र की शिक्षा के क्षेत्र से आजिविका पाता है।
- दशमेश का नवमांश स्वामी यदि गुरू से दृष्ट या युत हो और साथ में इन पर बुध या शुक्र की दृष्टि हो तो मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलती है।
- दशमेश का नवमांश स्वामी यदि गुरू से युत य दृष्ट हो

एवम बुध और शुक्र से तृतीय भाव मे संबन्ध बनाये तो जातक एक सफल मीडिया शिक्षक हो सकता है।

 मीडिया, पत्रकारिता ,शिक्षक के लिये बुध शुक्र चन्द्र गुरु द्वितीय त्रतीय चतुर्थ एवम पंचम भाव एवम भावेशो का बलवान होना बहुत ही आवश्यक है।

इनके अलावा अगर जातक की कुन्डली में निन्म योग हो तो वह मीडिया शिक्षक नहीं बन सकता।

- बुध शुक्र पर राहु की दृष्टि हो
- बुध और शुक्र पाप ग्रह पीडित हों
- द्वितीयेश बुध का स्म्बन्ध शनि से अगर त्रिक भावों में बने
- पंचमेश अगर ६,८,१२वे भाव में हों

अतः हम उपर्युक्त योगों के आधार पर आसानी से जान सकते है कि मीडिया शिक्षक बनने के लिये कौन-कौन से ज्योतिषीय योग होते हैं।



तारे बनाते हैं बॉलीवुड में सितारा





हज़ारों नौजवान रोजाना एक ख्वाब लिए मुंबई पहुंचते हैं। ख्वाब-फिल्मों में काम करने का। लेकिन, सफलता सभी को नहीं मिलती। रुपहले पर्दे पर अपनी छाप तो इक्का दुक्का नौजवान ही छोड़ पाते हैं, कुछ छोटी-मोटी भूमिकाएं पाकर खुद को निहाल समझते हैं,जबिक हजारों लोग पूरी जिंदगी संघर्ष करते रह जाते हैं,क्योंकि तमाम प्रतिभा के बावजूद उन्हें मौका ही नहीं मिलता।

दरअसल, इस प्रतिस्पर्धी क्षेत्र में अभिनेता या अभिनेत्री के तौर पर अपना भविष्य बनाना आसान काम नहीं है। इस क्षेत्र में सफलता पाने के लिए व्यक्ति की कुण्डली में प्रबल योग होने चाहिए, नहीं तो महज़ पैसे, कोशिश और वक़्त की बर्बादी होती तथा कुछ हासिल नहीं होता।

सवाल यह कि फ़िल्म जगत में करियर बनाने के लिए किन ज्योतिषीय कारकों की आवश्यकता होती है?

वैदिक ज्योतिष के मुताबिक़ प्रबल शुक्र, गुरू, सूर्य और 5वाँ भाव इस क्षेत्र में सफलता देते हैं। शुक्र अभिनय व कला आदि को दर्शाता है, गुरू भाग्य और समृद्धि को इंगित करता है, सूर्य यश तथा लोकप्रियता की ओर संकेत करता है और मज़बूत पाँचवाँ भाव मनोरंजन, नाट्य और

बॉलीवुड में करियर

अभिनय आदि में सफलता को दिखलाता है।

कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार पाँचवें भाव का सब-लॉर्ड अगर 2, 6, 10, 11 के कारक ग्रहों के नक्षत्र में हो, तो जातक को इस क्षेत्र में क़ामयाबी हासिल होती है। कारक शुक्र का संबंध योग को और सुस्पष्ट व प्रबल कर देता है।

दूसरा भाव: पाँचवें भाव के माध्यम से आय के लिए। हर व्यक्ति आय के लिए ही कार्य करता है।

छठवाँ भाव: पाँचवें भाव के लिए प्रयास करना महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में सफलता के लिए कड़ा परिश्रम ज़रुरी है।

दसवाँ भाव: ख्याति और प्रतिष्ठा, जो इस क्षेत्र में प्रयासों का परिणाम है।

ग्यारहवाँ भाव: यह जानने के लिए कि क्या परिणाम उम्मीदों के मुताबिक़ हैं या नहीं?

अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पाँचवें भाव से अन्य सभी भावों का संबंध फ़िल्म उद्योग में किरियर का प्रबल कारक है। उदाहरण के लिए अगर पाँचवें का सब-लॉर्ड २, ६, १० व ११ भावों से जुड़ा है और फ़िल्म उद्योग की ओर संकेत करता है; ऐसे में यदि १०वें भाव का सब-लॉर्ड भी २, ६, ११ से संबंधित हो, तो इस क्षेत्र में किरियर बनना लगभग तय है। एक-दूसरे के साथ यह जुड़ाव महत्वपूर्ण है, नहीं तो फ़िल्म क्षेत्र में हज़ारों अभिनेता और अभिनेत्रियाँ होते।

ये सभी परिणाम पूरी तरह 2, 5, 6, 10, 11 के कारकों की संयुक्त दशा में मिलेंगे।

उपर्युक्त नियम "प्रश्न ज्योतिष" में भी पूर्णतः सटीक बैठते हैं।

हम इस क्षेत्र में काम का प्रकार ग्रहों के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं:

सूर्य: निर्माता, सबका प्रमुख, जिसके बिना फ़िल्म बनना पूरी तरह नामुमकिन है।

चन्द्र: भाव-भंगिमाओं, जज़्बात और भावनात्मकता आदि के लिए, बच्चों की फ़िल्में, ट्रेजेडी फ़िल्में (चन्द्र-शनि), संदेश देने वाली फ़िल्में (क्योंकि चन्द्रमा आम लोगों को इंगित करता है)।

मंगल: नायक, कहा भी जाता है कि मंगल किसी भय को नहीं जानता और इसलिए जातक में मंच और कैमरे आदि का भय नहीं होगा। नायक और लड़ाई आदि के दृश्य मंगल दर्शाता है। साथ ही यह हास्य कलाकार और लघु फ़िल्में भी इंगित करता है।

बृहस्पति : ज़्यादातर निर्देशक, दूसरों के साथ मिलकर वह फ़िल्में बनाता है।

सूर्य-गुरू – देशभक्ति की फ़िल्में, चन्द्रमा-गुरू – बाल फ़िल्में / संदेशप्रधान फ़िल्में, मंगल-गुरू – मार-धाड़ वाली फ़िल्में, बुध-गुरू – हास्य फ़िल्में, शुक्र-गुरू – प्रेम कहानियाँ / संगीत-प्रधान फ़िल्में, शनि-गुरू –

बॉलीवुड में करियर

करुणाप्रधान, ऐतिहासि या पौराणिक विषयों पर आधारित फ़िल्में, राहु-गुरू – भूतिया फ़िल्में / रोमांचक फ़िल्में, केतु-गुरू – दार्शनिक फ़िल्में।

शुक्र: चमक-दमक के लिए, आजकल यह फ़िल्मों का ख़ास पहलू है। न सिर्फ़ नायिकाएँ, बल्कि नायक भी अच्छा दिखने के लिए काफ़ी मेहनत करते हैं। आम तौर पर शुक्र गुणवत्ता-पसंद होता है। इसलिए फ़िल्में अच्छे उपकरणों के ज़रिए बढ़िया स्तर की बनेंगी।

शिन: परदे के पीछे काम करने वाले सभी व्यक्ति शनि के प्रभाव में आते हैं। कुछ मुख्य लोगों को छोड़कर लोग अधिकांशतः परदे के पीछे काम करने वाले इन ज़्यादातर लोगों को नहीं पहचानते हैं।

मंगल-बुध-शुक्र-शनि-गुरू : कोरियोग्राफ़र (नृत्य निर्देशक)

मंगल-शनि-गुरू:स्टंट मास्टर

बुध-चन्द्र-शुक्र-शनि-गुरू : संगीतकार

बुध-चन्द्र-शनि-शुक्र-तीसरा भाव : गीतकार

बुध-मंगल-चन्द्र-शनि-तीसरा भाव: संवाद लेखक / पटकथा लेखक

बुध-मंगल-शुक्र-गुरू-शनि-राहु: तकनीशियन / ग्राफिक्स

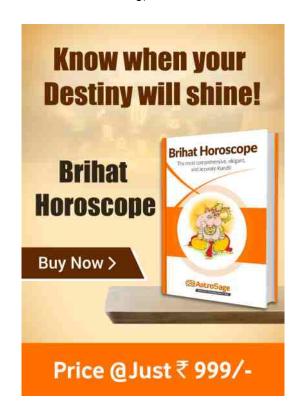
बुध-गुरू-शुक्र और पाँचवाँ व तीसरा भाव : डिस्ट्रीब्यूटर

बुध-गुरू: विज्ञापन

हम इसी तरह इस क्षेत्र से जुड़े अन्य कामों के बारे में भी पता कर सकते हैं।

ये सभी परिणाम दशा और भुक्ति के आने पर दिखाई देने लगते हैं। हमने कई बार देखा है कि लोग खलनायक के तौर पर अपना करियर शुरू करते हैं और फिर नायक बन जाते हैं और हीरो हास्य-कलाकर बन जाते हैं। इस तरह के बदलाव के लिए सह-स्वामी (को-रुलर) ज़िम्मेदार होते हैं।

अनुभव ही मुख्य चीज़ है, इसलिए हमें किसी भी घटना की ठीक-ठीक भविष्यवाणी करने के लिए हर तथ्य की भली-भांति पड़ताल करनी पड़ती है। इसके लिए तजुर्बा, व्यापक कल्पना और इंट्यूशन की ज़रुरत होती है।



ज्ञान वृद्धि में सहायक कुछ अचूक उपाय







परीक्षा जारी है। हर बच्चा व उसके माता-पिता यह चाहते हैं कि बच्चे को अपनी योग्यता अनुसार पूरा परिणाम मिले। वह पूरे लगन व एकाग्रता के साथ परीक्षा की तैयारी करे। आजकल हर बच्चे के हाथ में मोबाइल फोन है और मेज़ पर लैपटॉप है। ऐसे में एकाग्रता भंग होना स्वाभाविक है। किन्तु अगर यह समय गवा दिया जाए फिर हाथ में कुछ भी नहीं रह जाएगा। इस उद्देश से हम कुछ वास्तु उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं, जो कि आपके बच्चों की एकाग्रता क्षमता को बढ़ाएगा।

सर्वप्रथम यह जानने की आवश्यकता है कि विद्यार्थी किस दिशा की कक्ष में बैठकर पढ़ाई करें। ईशान कोण अर्थात उत्तर पूर्व दिशा में बना अध्ययन कक्ष विद्यार्थियों के लिए सर्वश्रेष्ठ होता है। इस दिशा का तत्व जल है तो इस कक्ष का रंग हल्का हरा या हल्का नीला या सफेद हो तो श्रेष्ठ होगा। यह सभी रंग विद्यार्थी का मन शांत व केंद्रित रखने में सहायक होते हैं।

विद्यार्थी का मुख पूर्व दिशा की तरफ हो तो सूर्य के प्रकाश से उसे आत्म बल व सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। अध्ययन टेबल दीवार से एकदम सटी न हो । दीवार व टेबल के बीच में दूरी होने से बच्चे की कलात्मक शक्ति का विकास होता है। साथ ही सामने की दीवार पर एक बूंद आकार की लाल रंग की बिंदी बना दे। पढाई के दौरान थकने पर इस लाल बिंदी पर ध्यान केंद्रित करने से बच्चे की स्मरण शक्ति का विकास होता है। थकान दूर होती है। अध्ययन टेबल के उत्तर-पूर्व कोने में मां सरस्वती की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें। संभव हो तो पढ़ाई करते समय मां के समक्ष एक शुद्ध घी का दीपक या मोमबत्ती जला दें। साथ में जल से भरा पात्र रख दे। पढ़ाई के दौरान आते हुए तनाव को यह दीपक नष्ट कर व जल बालक को शांति का अहसास दिलाएगा। यह उपाय उसी तरह से काम करता है। जैसे एक पिता अपने बच्चों का लक्ष्य निर्धारित करता है और मां उसे प्रेम से प्रोत्साहित करती है।

संभवतः एक कमल की खुशबू का अरोमा डिस्पेंसर बच्चे के अध्ययन कक्ष में रखे। कमल का अरोमा बच्चे के मन में आ रही विषाक्तता को नष्ट कर एकाग्रता शक्ति का विकास करता है। परीक्षा में जाने से पूर्व शुद्ध कमल का अरोमा ऑयल चंदन में घोल कर विद्यार्थी का टीका करें। इस उपाय से परीक्षा के दौरान घबराहट व मन का विचलन शांत होता है व स्मरण शक्ति का विकास होता है।

कक्ष की दक्षिण पूर्व दिशा में मनी प्लांट की चढ़ती हुई बेल

छात्रों के लिए वास्तु टिप्स

मिट्टी के गमले में या जल से भरे पात्र में रखे। आस पास रखें इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से आ रही मैग्नेटिक डिस्टरबेंस से बच्चे का बचाव होता है।

कक्ष की उत्तर दिशा में महान पुरुषों का चित्र लगाएं। इन चित्रों का चयन भी अपने बच्चों पर ही छोड़ दें। उनकी इच्छा अनुसार लगा हुआ चित्र उन पर ज्यादा प्रभाव देगा। जो़र जबरजस्ती से किए हुए उपाय कभी भी शुभ फल नहीं देते।

कक्ष की उत्तर पश्चिम दिशा में उड़ते हुए पक्षियों का चित्र लगाएं। विद्यार्थी के सपने को नई उड़ान मिलेगी। लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

अध्ययन टेबल पर पानी का जग व गिलास अवश्य रखें। समय-समय पर जल के सेवन से मन का विचलन दूर होता है। संभवतः इस जल में कुछ बूंदें खस की डाल दे। जो कि बच्चे के मन में आ रहे नकारात्मक विचारों से उसको मुक्ति दिलाएगा।

कक्ष की दक्षिण दीवार पर पीले रंग के कागज़ में लाल रंग के कलम से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को लिखकर टांग दें। इस कागज़ को देखकर ही अपनी पढ़ाई प्रारंभ करें। यह उपाय लक्षय प्राप्ति के लिए रामबाण है।

बाकी हमें यह समझना आवश्यक है कि हर बच्चा अव्वल नहीं आ सकता। विद्या अच्छे जीवन की नींव होती है। इसे बोझ समझकर नहीं बल्कि अपना ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्य के साथ एकाग्रता के साथ करने का प्रयास करें।

सभी विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।



काश ! कॉग्निएस्ट्रो मुझे पहले मिली होती !



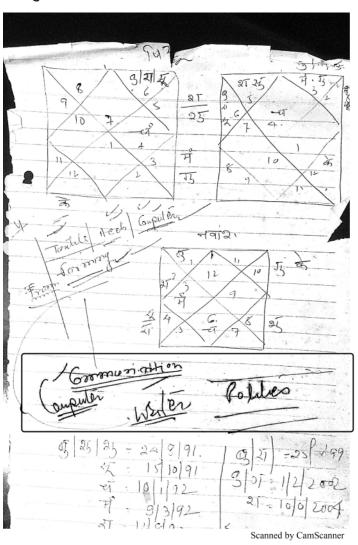
पीयूष पांडे



दोस्तों, सबसे पहले अपने बारे में संक्षिप्त परिचय। मेरा नाम पीयूष पांडे है। पेशे से जर्निलस्ट हूं। बीते 20 साल से मीडिया में हूं और टाइम्स ऑफ इंडिया से लेकर आजतक, ज़ी न्यूज, एबीपी न्यूज, नेटवर्क-18 और सहारा समय जैसे कई बड़े मीडिया संस्थानों में विरष्ठ पदों पर काम किया है। 'ब्लू माउंटेंस' फिल्म में एसोसिएट डायरेक्टर रहा। स्टार प्लस पर जल्द प्रसारित होने वाले सीरियल 'महाराज की जय हो' के कई एपिसोड लिखे हैं। हाल में तीसरा व्यंग्य संग्रह 'कबीरा बैठा डिबेट में' प्रकाशित हुआ है। इसके अलावा, कई अखबारों में मैं नियमित स्तंभ लिख रहा हूं।

मेरा संक्षिप्त प्रोफेशनल सीवी सिर्फ यह बताने के लिए कि मीडिया में मुझे पर्याप्त सफलता मिली है। लेकिन, अगर मैं कहूं कि यह भविष्यवाणी मेरे चाचा ने उस वक्त कर दी थी, जब मैं आठवीं क्लास में था तो शायद आप चौंकेंगे। मुझे याद है कि दिवाली का दिन था। मेरे चाचा ने मुझसे पूछा-बड़े होकर क्या बनना है? मैंने जवाब दिया-आईएएस अधिकारी। दरअसल, उस वक्त मैंने किसी से सुना था कि आईएएस बहुत बड़ा आदमी होता है। चाचा ने मेरी कुंडली बनाई। ये बात 1990-91 की है। और उस कुंडली पर कैलकुलेशन करते हुए पहले करियर संबंधी तीन-चार क्षेत्र चुने और फिर उसी के नीचे साफ-साफ लिखा-COMMUNICATION, COMPUTER, WRITER AND POLITICS

इस कुंडली को आप चित्र में देख सकते हैं।



करियर रिपोर्ट

जन्मपत्री का कागज कुछ हद तक फट चुका है। थोड़ा पीला पड़ चुका है। लेकिन मैंने इसे संभालकर रखा है। और लगभग 30 साल पहले बनी ये कुंडली मेरा ज्योतिष में विश्वास मजबूत करती है क्योंकि 8वीं क्लास के बच्चे को यह बताना कि वो पत्रकारिता, लेखन और कंप्यूटर से जुड़े क्षेत्र में करियर बनाएगा-आसान नहीं है। खासकर तब, जब मैंने कंप्यूटर देखा तक नहीं था, और ना पत्रकारिता का एबीसीडी मालूम था। दिलचस्प यह कि मुख्यधारा की पत्रकारिता में भी मेरा पदार्पण 2001 में नवभारत टाइम्स ऑनलाइन की लॉन्चिंग के साथ हुआ। यानी पत्रकारिता की शुरुआत इंटरनेट पत्रकारिता के साथ हुई।

सिर्फ जानकारी के लिए यह भी बता दूं कि मैंने जर्नलिज्म और कंप्यूटर साइंस एंड मैनेजमेंट दोनों में मास्टर्स डिग्री ली है।

अजीब बात यह कि इस भविष्यवाणी के बावजूद 11वीं में मैंने आर्ट्स स्ट्रीम नहीं ली। सामाजिक दबाव में मैंने पीसीएम स्ट्रीम चुनी। 12वीं पास भी कर ली। 12वीं के बाद आगरा के सेंट जॉन्स कॉलेज में एडिमशन की जिद में मेरा एक साल ड्रॉप हो गया। ये वो वक्त था, जब महज 16-17 साल की उम्र में मैंने अपना पहला लेख लिखा। अपना पहला लेख ही एिडटोरियल पेज पर छपा देखकर मैंने तय कर लिया कि मैं जर्नलिस्ट बनूंगा।

हालांकि, मन भटनके के दौर में मैंने कभी एमबीए करने की योजना बनाई तो कभी कंप्यूटर प्रोग्रामर बनने की दिशा में सोचा। इस कड़ी में कंप्यूटर्स में मास्टर्स डिग्री भी ली। लेकिन, मास्टर ऑफ इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी,मैनेजमैंट कोर्स का तीसरा सेमेस्टर आते आते मुझे समझ आ गया कि मैं सिर्फ एक ही काम अच्छा कर सकता हूं, और वो है लिखना। मैंने कोर्स के दौरान ही आगरा अमर उजाला ज्वाइन कर लिया।

यह पूरी कहानी सुनाने की वजह है कॉग्निएस्ट्रो रिपोर्ट। एस्ट्रोसेज ने करियर काउंसिलंग की दिशा में अनूठा प्रयोग करते हुए कॉग्निएस्ट्रो रिपोर्ट तैयार की है। मनोविज्ञान के लोकप्रिय राइजेक सिद्धांतों का ज्योतिष में इस्तेमाल करते हुए यह रिपोर्ट जन्म विवरण के आधार पर आपका व्यक्तित्व प्रकार बताती है। इसके बाद 10वीं के छात्र को 11वीं में स्ट्रीम चयन का सुझाव देती है। कॉग्निएस्ट्रो की प्रोफेशनल रिपोर्ट यह भी बताती है कि व्यक्ति के लिए कौन सा करियर ऐसा होगा, जिसमें सफलता और संतुष्टि दोनों मिले। अब आप मेरी यह कॉग्निएस्ट्रो रिपोर्ट के कुछ मुख्य पेज देख लीजिए।



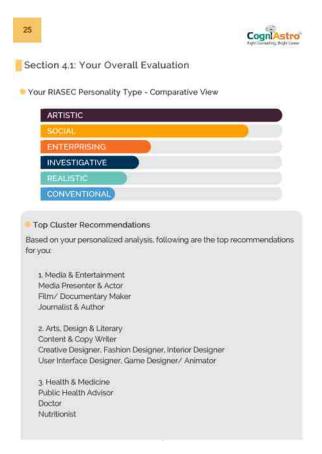
करियर रिपोर्ट

कॉग्निएस्ट्रो की रिपोर्ट बता रही है कि मेरा व्यक्तित्व आर्टिस्टिक कैटेगरी का है। दूसरे नंबर पर सोशल है। और यह बात शत प्रतिशत सटीक है। इसके बाद करियर की फील्ड बताते हुए रिपोर्ट सलाह दे रही है कि मेरे लिए सबसे अच्छी फील्ड मीडिया एंड इंटरटेनमेंट है। इसके बाद आर्ट, डिजाइन एंड लिटरेरी का नंबर है। इन दोनों फील्ड से संबंधित करियर पर भी गौर फरमाइए। इन्हीं फील्ड में मैं आज सक्रिय हूं, सफल हूं और संतुष्ट भी।



आज मैं सोच रहा हूं कि काश ये रिपोर्ट मुझे पहले मिली होती। तो जिन दो साल मैंने पीसीएम की पढ़ाई की और तनाव में रहा, उन दिनों मैं इतिहास, अर्थशास्त्र और इंग्लिश जैसे विषय पढ़ता, जो आने वाले दिनों में मेरे संभावित करियर में मुझे मदद करते। कॉग्निएस्ट्रो रिपोर्ट मुझे पहले मिली होती तो मैं जिन दिनों एमबीए करने की सोच रहा था, वो नहीं सोचता। कंप्यूटर्स में मास्टर डिग्री लेकर प्रोग्रामर बनने का ख्याल ना पालता। बजाय इसके मैं कोशिश करता कि मैं विदेश के किसी बड़े इंस्टीट्यूट से पत्रकारिता की डिग्री लेता या फिल्म मेकिंग की। मैंने काफी समय और पैसा उन विषयों को पढ़ने में बर्बाद किया, जिनके बजाय अपने पसंदीदा विषय पढ़ता तो शायद मैं तकनीकी रुप से और ज्यादा कुशल होता।

मैं सिर्फ यह बताना चाहता हूं कि ज्योतिष के जिरए करियर की भविष्यवाणी संभव है। सितारों के आइने में बच्चों को ऐसे करियर की सलाह दी जा सकती है, जिसमें उन्हें सफलता भी मिले और संतुष्टि भी। वरना, चेतन भगत जैसे सैकड़ों उदाहरण हमारे सामने हैं, जिन्होंने पढ़ाई किसी और विषय में की लेकिन सफलता-संतुष्ट किसी दूसरे ही करियर में मिली। कॉग्निएस्ट्रो छात्रों और प्रोफेशनल्स की उलझन को दूर करने का बेहतरीन उपाय है। पूरी रिपोर्ट कैसी है-इसे आप यहां देख सकते हैं।



करियर रिपोर्ट

ज्योतिष के जरिए करियर संबंधी भविष्यवाणियां संभव है, और मेरे पास इस बात को यकीन करने के लिए कई उदाहरण हैं। मैं पत्रकारिता में आने के बाद से किताब लिखने की सोच रहा था. लेकिन संभव नहीं हो रहा था। एक दिन मेरे ज्योतिषी मित्र ने कहा कि शुक्र की दशा आने पर किताब लेखन मुमकिन होगा। 2011 में शुक्र की महादशा आई तो मेरा पहला व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हुआ। और अब हाल में तीसरा व्यंग्य संग्रह। इस व्यंग्य संग्रह के विषय में और अधिक जानकारी आप यहां से प्राप्त कर सकते हैं।

कुल मिलाकर अगर आप बच्चों के करियर, उनकी पढ़ाई लिखाई की वजह से तनाव में हैं, और उन्हें भी तनाव में रखते हैं तो कॉग्निएस्ट्रो रिपोर्ट आपकी कई समस्याओं का समाधान कर सकती है। यकीन जानिए, जिस काम में मन लगता है. उसमें कामयाबी का अपना मजा है।











बृहस्पति के मकर राशि में गोचर का कमाल



एस्ट्रोगुरु मृगांक

देवताओं का गुरु कहे जाने वाले बृहस्पति ग्रह 29 मार्च 2020, रविवार की रात्रि 7:08 बजे मकर राशि में प्रवेश करेंगे। यहाँ पर ये मकर राशि के स्वामी शनि से युति भी करेंगे। वैदिक ज्योतिष के अनुसार गुरु का राशि परिवर्तन काफी अनुकूल माना जाता है क्योंकि देव गुरु की दृष्टि अमृत समान मानी गई है। गुरु नैसर्गिक रूप से एक शुभ ग्रह है और सभी के लिए अच्छे परिणाम देने की सामर्थ्य रखता है। गुरु के मकर राशि में गोचर का असर सभी 12 राशियों पर किसी न किसी रूप में अवश्य होगा। तो आइये जानते हैं आपकी राशि पर गुरु का गोचर क्या प्रभाव दिखाने वाला है।

गुरु गोचर - मेष राशि फलादेश

देव गुरु बृहस्पति आपकी राशि से दशम भाव में प्रवेश करेंगे। यह आपके नवें और बारहवें भाव के स्वामी हैं। मकर राशि में गुरु गोचर के प्रभाव से आपके कार्यक्षेत्र में कुछ उतार-चढ़ाव की स्थितियां



बनेंगी। कुछ लोगों को ट्रांसफर मिलने की संभावना रहेगी और यह बृहस्पति आपसे काफी मेहनत करवाएगा। कार्यक्षेत्र में बृहस्पति का गोचर विशेष रूप से आपको अपने बारे में विचार करने को मजबूर करेगा कि आप सही काम कर रहे हैं अथवा नहीं। आपकी योजनाएं फलीभूत होंगी लेकिन कार्यक्षेत्र में आपका अति आत्मविश्वास आपको परेशानियों में डाल सकता है, इसलिए अपने काम से काम रखें और दूसरों के कार्य में हस्तक्षेप करना बंद



करें। बृहस्पति के इस गोचर से आपके धन की वृद्धि होगी और आप समाज में सम्मानित बनेंगे। आपके पारिवारिक जीवन में भी ख़ुशियाँ आएँगी और परिवार में बुजुर्गों का आशीर्वाद मिलेगा तथा जीवन में तरक्की करेंगे। इसके प्रभाव से आपको आपके भाग्य का पूरा साथ मिलेगा और आपके अटके हुए काम भी बनेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी और आप अपने सामाजिक स्तर को ऊंचा उठाने में सफल हो पाएंगे। आपको अपने काम पर पूरा ध्यान देना आवश्यक होगा। उपाय: गुरुवार के दिन गौ माता को हल्दी व चने की दाल मिलाकर आटे की लोई खिलाएं।

गुरु गोचर - वृषभ राशि गोचरफल

देव गुरु बृहस्पति का गोचर आपकी राशि से नवें भाव में होने वाला है। यह आपकी राशि के लिए आठवें और ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं। बृहस्पति का यह गोचर वृषभ राशि के जातकों के लिए मिश्रित परिणाम लेकर आएगा। इस गोचर के प्रभाव से



सामाजिक रुप से आपकी काफी उन्नति होगी और आप का समाज में कद ऊंचा होगा। आपको अचानक से कोई पैतृक संपत्ति प्राप्त होने के योग बन सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर बनेगी। किसी गुरु अथवा गुरु तुल्य व्यक्ति से मिलने का मौका मिलेगा और उनकी सलाह जीवन में आपके बहुत काम आएगी। आर्थिक तौर पर यह गोचर सामान्य रहने वाला है। इस गोचर के प्रभाव से आपके मन में धार्मिक विचार रहेंगे और आप धार्मिक क्रियाकलापों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे। यह गोचर आपके अंदर आलस्य की वृद्धि करेगा, जिससे आप आलस की वजह से अपनी कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं से हाथ धो सकते हैं, इसलिए थोड़ा ध्यान रखना चाहिए। आपकी संतान के लिए गोचर बहुत अनुकूल रहेगा और उनकी उन्नति होगी। यदि आप अभी अविवाहित हैं और किसी प्रेम संबंध में हैं तो इस गोचर का अनुकूल परिणाम मिलेगा और आपके प्रेम जीवन में बेहतरीन समय रहेगा। इस गोचर काल में आप किसी लम्बी तीर्थ यात्रा पर भी जा सकते हैं। उपाय: गुरुवार के दिन हल्दी व चना दाल का दान करें और गाय को रोटी खिलाएं।

गुरु गोचर - मिथुन राशि फलादेश

आपकी राशि के जातकों के लिए बृहस्पति सातवें और दसवें भाव का स्वामी है। सातवें भाव का स्वामी होने के कारण यह मारक भी है और इस गोचर काल में आपके अष्टम भाव में प्रवेश



करेगा। मिथुन राशि के लोगों के लिए बृहस्पति का यह गोचर ज्यादा अनुकूल नहीं माना जाएगा क्योंकि इसके कुछ प्रतिकूल परिणाम भी सामने दिखाई देंगे। गुरु गोचर के प्रभाव से आपके खर्चों में यकायक वृद्धि होगी, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति काफी बिगड़ सकती है और आपको बहुत ज्यादा तनाव का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि जो लोग आध्यात्मिक क्रियाकलापों में लगे हैं, उनके लिए बृहस्पति का गोचर काफी अनुकूल साबित होगा। फिर भी इस गोचर काल में आपको स्वास्थ्य संबंधित बड़ी परेशानियां सामने आ सकती हैं, इसलिए स्वास्थ्य संबंधित किसी भी समस्या को नज़रअंदाज़ ना करें और तुरंत चिकित्सक से संपर्क करें। जो लोग ध्यान, मेडिटेशन और योग करते हैं, उनके लिए यह गोचर बेहतरीन अनुभव लेकर आएगा। आपको बेवजह के खर्चों से मुक्ति पानी होगी, नहीं तो आप काफी परेशान हो जाएंगे। बेवजह की यात्राएं आपके धन और स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकती हैं, इसलिए इनसे दूर रहना ही बेहतर होगा। इस गोचर काल में आपके अपने ससुराल पक्ष से संबंधों पर भी थोड़ा असर पड़ सकता है और वे आपके मानसिक तनाव का कारण बन सकते हैं।

उपाय: बृहस्पतिवार के दिन शुद्ध घी का दान करें।

गुरु गोचर - कर्क राशि फलादेश

आपकी राशि के लिए देव गुरु बृहस्पति का गोचर सदैव ही महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह आपके नवम भाव अर्थात भाग्य स्थान के स्वामी भी हैं और छठे भाव के स्वामी भी। अपने इस गोचर



काल में बृहस्पति देव आपके सातवें भाव में प्रवेश करेंगे। कर्क राशि वालों के लिए देव गुरु बृहस्पति का यह गोचर कई मायनों में बहुत अनुकूल साबित होगा क्योंकि देव गुरु बृहस्पति की कृपा से आपकी आमदनी में जबरदस्त बढ़ोतरी देखने को मिलेगी और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। व्यापार के मामले में भी आपके अच्छे संपर्क स्थापित होंगे, जो आपको आगे बढ़ने में मदद करेंगे। इस समय में आप अपने व्यापार को गति देने में भी सफल होंगे। एक बात का आपको विशेष ध्यान रखना होगा कि इस दौरान आपके अपने बिज़नेस पार्टनर से रिश्ते खराब हो सकते हैं, इसलिए उन्हें संभालने का प्रयास करें। यह गोचर दांपत्य जीवन में मिले जुले परिणाम लेकर आएगा। जहां एक ओर आपके रिश्ते में आपसी समझदारी बढ़ेगी, वहीं दूसरी ओर, आपका जीवन साथी का व्यवहार थोड़ा बदल सकता है और वह अहम की भावना से ग्रस्त हो सकते हैं। इसका असर आपके दांपत्य जीवन पर पड़ेगा। स्वास्थ्य के लिहाज से बृहस्पति का गोचर थोड़ा कमजोर हो सकता है, इसलिए विशेष रुप से ध्यान दें। छोटी मोटी यात्राएं आपके व्यापार को वृद्धि प्रदान करेंगी। जिन लोगों का विवाह नहीं हुआ है, उन्हें इस गोचर का अनुकूल परिणाम मिलेगा और विवाह होने के योग बनेंगे।

उपाय: हर गुरुवार को केले के वृक्ष का पूजन करें।

गुरु गोचर - सिंह राशि फलकथन

देव गुरु बृहस्पति का गोचर सिंह राशि के जातकों के छठे भाव में होगा। यह आपके राशि स्वामी के परम मित्र हैं और आपकी कुंडली में पांचवें और आठवें भाव के स्वामी भी हैं। इस गोचर के



प्रभाव से आपके खर्चों में बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है। यह वह समय होगा, जब आप स्वास्थ्य के क्षेत्र में कमजोर हो सकते हैं और आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। कोई बड़ी बीमारी भी शुरू हो सकती है, इसलिए विशेष रुप से ध्यान दें। इस समय काल में आपको वाहन सावधानी से चलाना चाहिए। किसी अन्य के झगड़े में हाथ ना डालें, अन्यथा नुकसान उठाना पड़ सकता है। कठिन मेहनत के उपरांत कार्य क्षेत्र में आंशिक सफलता मिलने की उम्मीद आप कर सकते हैं। इस समय में यदि आप प्रयास करेंगे तो आपको अपने ऊपर चढ़े हुए किसी भी प्रकार के कर्ज को चुकाने में सफलता मिलेगी लेकिन संभावना यह भी है कि आप किसी और से कर्ज लेकर पिछला क़र्ज़ चुकाएंगे। यदि आपके पास अधिक मात्रा में धन है तो किसी को अपना धन उधार ना दें क्योंकि उसके वापस लौटने की उम्मीद नहीं रहेगी। आमाशय तथा गुर्दों के रोगों से सावधान रहें। भोजन में वसा की मात्रा अधिक होने से मोटापा भी बढ़ सकता है।

उपाय: बृहस्पति बीज मंत्र का जाप करें "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रीं स: गुरुवे नम:"

गुरु गोचर - कन्या राशि फलादेश

देव गुरु बृहस्पित का गोचर आपकी राशि से पांचवें भाव में होगा। कन्या राशि में जन्मे लोगों के लिए बृहस्पित चौथे और सातवें भाव के स्वामी हैं तथा यह सप्तम भाव के स्वामी होने से मारक भी



कहलाते हैं। पंचम भाव में बृहस्पति का गोचर आपके लिए कुछ मामलों में बहुत अच्छे और कुछ मामलों में परेशानी जनक परिणाम लेकर आया है। यदि कुंडली में स्थितियां अनुकूल हों तो इस गोचर के प्रभाव से आप को संतान की प्राप्ति हो सकती है और आपकी बरसों की इच्छा पूरी हो सकती है। इस समय में आपके परिवार में सुख और शांति की बढ़ोतरी होगी और आपकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी। यदि आप कोई व्यापार करते हैं तो यह वह समय होगा, जब आपके व्यापार में उन्नति का प्रसार होगा लेकिन आपके कुछ निर्णय गलत दिशा में भी जा सकते हैं। यहां पर बृहस्पति अपनी नीच राशि में है। हालांकि राशि का स्वामी शनि भी साथ होने के कारण आपको शुरुआत में कुछ अनुकूल परिणाम मिलने में देरी हो सकती है, फिर भी आपको अच्छे परिणाम भी मिलेंगे। इसके अलावा इस गोचर काल में शिक्षा के मामले में अच्छे परिणाम मिलेंगे और आपकी पढ़ाई आगे बढ़ेगी। आपके अंदर ज्ञान के प्रति जिज्ञासा की भावना जगेगी, जो आपको आगे बढ़ायेगी। यदि आप किसी से प्रेम संबंध में हैं तो यह गोचर आपके लिए उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाएगा। आप यह निर्णय लेने में परेशान होंगे कि जिनसे आप प्रेम करते हैं, क्या वे वास्तव में आपके जीवन साथी बनने या लंबे समय तक साथ निभाने वाले रहेंगे अथवा नहीं। इस असमंजस से बचने के लिए आपको किसी समझदार और अनुभवी व्यक्ति की सलाह लेनी चाहिए। यदि आप नौकरी करते हैं तो इस समय में आपकी नौकरी जाने की संभावना भी बन सकती है।

उपाय: प्रतिदिन अपने घर में कपूर का दीपक जलाएं।

गुरु गोचर - तुला राशि भविष्यवाणी

देव गुरु बृहस्पति का गोचर आपके चौथे भाव में होगा, इसलिए जो लोग तुला राशि में जन्मे हैं, उनको बृहस्पति के इस गोचर का प्रभाव विशेष रूप से पारिवारिक जीवन में देखने को मिल



सकता है। बृहस्पति आपके तीसरे और छठे भाव के स्वामी भी हैं। चतुर्थ भाव में बृहस्पति का गोचर परिवार में तनाव को बढ़ा सकता है। लोगों में एक दूसरे को समझने की कमी हो सकती है, जिसकी वजह से परिवार की एकता खतरे में पड़ सकती है लेकिन यही गोचर कार्यक्षेत्र में आपकी स्थितियों को बलवान बनाएगा और आपके पक्ष में नतीजे आने लगेंगे। आपके काम की जमकर तारीफ भी होगी। इस गोचर काल में आपके परिवार के बुजुर्गों का स्वास्थ्य भी पीड़ित हो सकता है लेकिन इस गोचर का अच्छा फल यह होगा कि इस समय में आप कोई प्रॉपर्टी खरीदने में कामयाब होंगे और आपके प्रयासों से आपको सुखों की प्राप्ति होगी। आपकी माताजी के व्यवहार में

कुछ बदलाव आ सकता है और उनकी सेहत भी उतार-चढ़ाव में रहेगी, इसलिए आपको उनका ध्यान रखना चाहिए। यह गोचर परिवार के प्रति आपको चिंतित बनाएगा और आपके घरेलू खर्च भी बढ़ेंगे। इस समय में आपको किसी भी प्रकार के विवाद से बच कर रहना चाहिए, जो विशेष रूप से आपके परिवार से संबंधित हो क्योंकि उससे आपको दुख होगा और आप अंदर से टूटन महसूस करेंगे।

उपाय: प्रत्येक गुरुवार को घी का दान करना आपके लिए लाभदायक साबित हो सकता है।

गुरु गोचर - वृश्चिक राशि फलकथन

वृश्चिक राशि वालों के लिए बृहस्पति दूसरे और पांचवें भाव का स्वामी है इसलिए यह दूसरे भाव का स्वामी होने से वृश्चिक राशि वालों के लिए मारक भी बनता है। गोचर की इस स्थिति में



बृहस्पति आपके तीसरे भाव से गोचर करेगा और इसकी वजह से आपको यात्राओं पर बार-बार जाना पड़ेगा। आपकी काफी यात्राएं होंगी और ये यात्राएं मुख्य रूप से किसी तीर्थ स्थल के लिए तथा आर्थिक प्रयोजनों से हो सकती हैं। शुरुआती कुछ यात्राएं अनुकूल नहीं रहेंगी और आपको शारीरिक कष्ट और आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा लेकिन बाद में स्थिति बढ़िया हो जाएगी। यह गोचर काल आपके दांपत्य जीवन के लिए बेहद अनुकूल और प्रभावशाली रहेगा। यदि आपके रिश्ते में कोई तनाव चला आ रहा था तो वह भी अब दूर हो जाएगा और आपके रिश्ते में मजबूती आएगी। आपके भाई बहनों को आप आर्थिक तौर पर मदद देंगे और उनकी हर संभव सहायता करेंगे। आपकी संतान के लिए भी बृहस्पति का गोचर काफी अनुकूल रहेगा और इस समय में उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप अभी तक सिंगल हैं और किसी से प्रेम करते हैं तो यह गोचर आपके लिए अनुकूल रहेगा और आप अपने प्रियतम को विवाह के लिए प्रस्ताव दे सकते हैं और उसमें सफलता मिलने की भी अच्छी संभावना होगी।

उपायः भगवान शिव का रुद्राभिषेक करवाना आपके लिए फलदायी रहेगा।

गुरु गोचर - धनु राशि फलादेश

बृहस्पति का गोचर आपकी राशि के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि गुरु ही धनु राशि का स्वामी ग्रह है। यह आपकी राशि के चौथे भाव का स्वामी भी है और वर्तमान गोचर में आपके दूसरे भाव में



प्रवेश करेगा। बृहस्पति का दूसरे भाव में जाना आपके कुटुंब में वृद्धि की ओर संकेत करता है, जिसकी वजह से परिवार में किसी नए व्यक्ति का आगमन हो सकता है। चाहे आपके परिवार में किसी का विवाह हो अथवा कोई संतान जन्म हो, परिवार में ख़ुशियाँ आएँगी और आप पूजा पाठ तथा शुभ कार्य संपन्न करेंगे। इसके अलावा परिवार में कोई शुभ आयोजन भी हो सकता है, जिससे लोगों से मिलना जुलना होगा और समाज में आपको ऊंचा स्थान मिलेगा। आपके परिवार की इज़्ज़त बढ़ेगी। इस समय में आपकी वाणी में गंभीरता आएगी और आप चीजों को सोच समझकर कहना शुरु करेंगे, जिससे आप प्रभावशाली बनेंगे। आप अपने परिवार को मजबूती देंगे तथा व्यापार तथा प्रॉपर्टी से अच्छा धन लाभ अर्जित करेंगे। यह गोचर आपके कार्यक्षेत्र को भी प्रभावित करेगा और आपकी सोचने समझने की शक्ति और आपका अंतर्ज्ञान आपको अपने कार्यक्षेत्र में मजबूत बनाएगा। आपका मन मीठा खाने को बहुत करेगा, जिससे आपके वजन में बढोत्तरी भी हो सकती है।

उपायः घर में गुरु बृहस्पति यंत्र की स्थापना करें और रोज़ाना इसकी पूजा करें।

गुरु गोचर - मकर राशि भविष्यवाणी

मकर राशि के लिए बृहस्पति तीसरे और बारहवें भाव का स्वामी होता है और अपने इस गोचर काल में वह मकर राशि में ही गोचर कर रहा है। अर्थात आप के प्रथम भाव में बृहस्पति का गोचर होगा,



जिसकी वजह से आपको एक बात का सबसे ज्यादा फायदा होगा, वह यह कि आपको सहज ज्ञान की प्राप्ति होगी और आप अपनी इनट्यूशन के बल पर बहुत अच्छे-अच्छे निर्णय लेंगे, जो आपके काम आऍंगे। गुरु बृहस्पति के इस गोचर के प्रभाव से आपके पारिवारिक जीवन में ख़ुशियाँ आएँगी और आपका दांपत्य जीवन सुधरेगा। यदि उसमें स्थितियां बिगड़ी हुई थीं तो अब धीरे-धीरे सुधरने की ओर चल पड़ेंगी। एक दूसरे से नज़दीकी बढ़ेगी और समझदारी का विकास होगा। व्यापार के सिलसिले में यह गोचर आपके लिए काफी अनुकूल रहेगा। इसके अलावा आपकी संतान को भी इस समय में अच्छे नतीजे मिलेंगे। कुछ लोगों को संतान रत्न की प्राप्ति भी हो सकती है। यदि आप एक विद्यार्थी हैं तो बृहस्पति का गोचर आपकी शिक्षा में उन्नति के अवसर लेकर आएगा और आपकी मेहनत आपके काम आएगी। इस गोचर के प्रभाव से आपको लंबी यात्राओं पर जाने में भी रूचि जागेगी और आध्यात्मिक रूप से आप काफी मजबूत बनेंगे। आप का सामाजिक स्तर बढिया होगा और लोग आपकी तारीफ करेंगे। आप समाज में लोकप्रिय बनेंगे लेकिन आपको अपने आलस्य से बचना होगा क्योंकि यह आपकी उम्मीदों पर पानी फेर सकता है।

उपाय: अपनी जेब में सदैव एक पीला रुमाल रखें और

माथे पर प्रतिदिन केसर का तिलक लगाएँ।

गुरु गोचर - कुंभ राशि फलकथन

कुंभ राशि के जातकों के लिए बृहस्पति का गोचर बारहवें भाव में होगा। आपकी राशि से दूसरे और ग्यारहवें भाव का स्वामी बृहस्पति आपके लिए मारक भी बनता है। द्वादश भाव में बृहस्पति का यह



गोचर आपको शारीरिक तौर पर परेशान कर सकता है क्योंकि इस समय काल में आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है और आप बीमार पड़ सकते हैं। अपने खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे तो स्थिति में सुधार हो सकता है। आपकी जमा पूँजी कम होने लगेगी और आपके खर्चे एकाएक बढ़ने लगेंगे। आप परोपकार के कार्य में हद से ज्यादा रुचि लेंगे, जिससे अपनी जमा पूँजी को भी खत्म करने से नहीं हिचकिचाएंगे, इसलिए ऐसी स्थिति में आप को विशेष रुप से ध्यान रखना चाहिए। आप अच्छे और धार्मिक कार्यों पर खूब दिल खोलकर खर्च करेंगे लेकिन याद रखिए. ज्यादा खर्च भी आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड सकता है। इस गोचर काल में आपका पारिवारिक जीवन ख़्शनुमा रहेगा और परिवार की स्थिति बढ़िया रहेगी। लोगों में एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना बढ़ेगी। वाद विवाद तथा कोर्ट कचहरी से संबंधित मामलों के लिए यह समय कमजोर रह सकता है लेकिन जो लोग कानून के क्षेत्र में हैं, उन्हें यह गोचर काफी अनुकूल परिणाम देगा।

उपाय: गुरुवार को सुबह के समय पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ाएँ। इस दौरान पीपल के वृक्ष का स्पर्श न करें।

Lab Certified Gemstones Genuine Gemstones at best price

गुरु गोचर - मीन राशि फलादेश

देव गुरु बृहस्पित मीन राशि के स्वामी हैं, इसलिए इनका यह गोचर आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा। इसके अतिरिक्त यह आपके कर्म भाव अर्थात दशम भाव के स्वामी भी हैं और अपने इस गोचर



काल में वे आपके एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। गुरु के गोचर के प्रभाव से आपको बहुत अच्छे नतीजे मिलेंगे। आपकी आमदनी उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगी, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत बनेगी। आपको समाज के बुद्धिमान और रसूखदार लोगों से मेलजोल बढ़ाने का मौका मिलेगा और उन से बनने वाले संपर्क आपको भविष्य में बहुत लाभ देंगे। किसी खास व्यक्ति की सलाह आपके बहुत काम आएगी। आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा। आपकी संतान को भी इस गोचर का अच्छा लाभ मिलेगा तथा दांपत्य जीवन में भी यह गोचर अनुकूल परिणाम प्रदान करेगा। रिश्तो में तनाव कम होगा, जिससे आप खुलकर राहत की सांस लेंगे। व्यापार के दृष्टिकोण से भी गोचर काफी अच्छा रहेगा और यदि आप नौकरी करते हैं तो आपकी अपने वरिष्ठ अधिकारियों से खूब छनेगी, जिससे आपको फायदे अवश्य मिलेंगे। यदि आप अभी तक सिंगल हैं तो यह गोचर प्रेम जीवन को प्रेम विवाह में बदलने के संकेत भी दिखा रहा है। ऐसे में आपके विवाह के योग भी बन सकते हैं, इसलिए आपके लिए गोचर काफी अनुकूल रहने वाला है।

उपाय: गुरुवार के दिन पुखराज रत्न को सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें।



मार्च 2020 मासिक राशिफल

वर्ष 2020 में मार्च का महीना आपके लिए कितना महत्वपूर्ण रहने वाला है ये तो आपकी चंद्र राशि का फलादेश ही बताएगा। जहाँ तक इस महीने ग्रह नक्षत्र की चाल का सवाल है तो इस महीने सूर्य ग्रह जहाँ 14 मार्च 2020 को मीन राशि में गोचर करेगा। वहीं 22 मार्च 2020 को मंगल का मकर राशि में गोचर होगा। इसके अलावा 28 मार्च 2020 को शुक्र का वृषभ राशि में तो 30 मार्च 2020 को गुरु बृहस्पति मकर राशि में संचरण करने वाले है। ज्योतिष विज्ञान में जब हम मासिक राशिफल ज्ञात करते हैं तो हम अन्य ग्रहों की अपेक्षा सूर्य की चाल यानि गोचर पर अधिक विचार करते हैं। क्योंकि सूर्य एक महीने में एक ही राशि में स्थित होता है। चूँकि मार्च 2020 में सूर्य के गोचर के अलावा तीन अन्य ग्रह भी राशि परिवर्तन कर रहे हैं तो हमें मासिक राशिफल के लिए उनके गोचर के प्रभावों पर विचार करने की आवश्यकता होगी। आइए जानते हैं इस माह का फलादेश आपकी राशि के अनुसार क्या कहता है।

मेष राशि

इस माह चार ग्रहों (सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र) के राशि परिवर्तन से आपकी जन्म कुंडली में वृषभ, मकर और मीन राशि प्रभावित होंगी। दूसरे शब्दों में कहूँ तो मासिक राशिफल यह कहता है कि



इस महीने आपकी जन्म कुंडली के दूसरे, दसवें और बारहवें भाव सिक्रिय रहेंगे। जहाँ दूसरे भाव से धन, परिवार, वाणी तथा प्रारंभिक शिक्षा को देखा जाता है तो वहीं दसवें और बारहवें भावों से क्रमशः नौकरी-व्यापार, कार्य क्षेत्र एवं ख़र्च, हानि, विदेश यात्रा को देखा जाता है। इस माह करियर में जहाँ आपको प्रमोशन मिलने की संभावना है। वहीं आर्थिक जीवन में अच्छे परिणाम मिलने के आसार हैं। पारिवारिक जीवन में परिजन आपके अच्छे-बुरे समय आपकी मदद करेंगे। वहीं छात्रों के लिए यह महीना काफी शानदार रहने वाला है।प्रेम जीवन में प्रियतम के साथ किसी विषय में आपके मतभेद हो सकते हैं

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करे - मेष राशि

वृषभ राशि

मासिक राशिफल के अनुसार, मार्च के महीने में चार ग्रहों का गोचर होने के कारण वृषभ राशि के जातकों के पहले, नौवें और ग्यारहवें भाव सिक्रय अवस्था में रहेंगे। पहला भाव स्वयं का भाव



होता है। वहीं नवम भाव धर्म भाव कहलाता है जबिक ग्यारहवाँ भाव लाभ होता है। मार्च का महीना आपके करियर के लिए बहुत ज्यादा अनुकूल नहीं है। इस वर्ष नौकरी-व्यापार में बाधाएँ आएंगी। इसलिए आपको संघर्ष का सामना करना पड़ सकता है। वहीं आर्थिक पक्ष भी सामान्य रहेगा। हालाँकि सेहत पर धन ख़र्च हो सकता है। इस महीने परिवार वालों के साथ आपको समय बिताने का मौक़ा मिलेगा। हालाँकि अपने पारिवारिक जीवन से आप ज्यादा संतुष्ट नहीं दिखाई देंगे। माता जी को आपकी सेहत की चिंता सता सकती है।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - वुष राशि

मासिक राशिफल

मिथुन राशि

इस महीने चार ग्रहों (सूर्य, मंगल, शुक्र और गुरु) के गोचर होने से आपकी कुंडली का बारहवाँ, आठवाँ और दसवाँ भाव सक्रिय अवस्था में रहेगा। कुंडली में जहाँ 12वाँ भाव ख़र्च, हानि, विदेश यात्रा को दर्शाता है तो वहीं



अष्टम भाव आयुर्भाव होता है। जबिक दसवें भाव से आपके किरयर क्षेत्र को देखा जाता है। किरयर के लिहाज़ से यह महीना आपके लिए अच्छा रहेगा। लेकिन इसके बावजूद भी आपको कुछ बातों का ध्यान भी रखना होगा। वहीं आर्थिक जीवन के लिए यह महीना आपके लिए समस्याकारक हो सकता है। क्योंकि इस महीने आमदनी से ज्यादा ख़र्चे अधिक होने वाले हैं। घर-परिवार में ख़ुशियों का आगमन होगा। इस महीने घर तथा रिश्तेदारों का साथ आपको आनंद देगा।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मिथुन राशि

कर्क राशि

इस महीने चार ग्रहों (सूर्य, मंगल गुरु और शुक्र) के गोचर से आपकी कुंडली के ग्यारहवें, सातवें और नौवें भाव सक्रिय रहेंगे। कुंडली में ग्यारहवाँ भाव लाभ का भाव होता है। इस भाव से जीवन में प्राप्त होने वाली आमदनी,



उपलब्धियों और बड़े भाई बहनों को देखा जाता है। वहीं सप्तम भाव विवाह होता है। इस भाव से वैवाहिक जीवन, जीवनसाथी एवं व्यापार में होने वाली साझेदारी को देखा जाता है। मासिक राशिफल के अनुसार इस महीने करियर में व्यापार में आपको तरक्की मिलेगी। आपके सपने साकार होंगे। कार्य क्षेत्र में आपको नया और सकारात्मक अनुभव प्राप्त होगा।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - कुर्क राशि

सिंह राशि

इस महीने चार ग्रहों (सूर्य, मंगल गुरु और शुक्र) के गोचर से आपकी कुंडली का दसवाँ, छठा और आठवाँ भाव सिक्रिय अवस्था में रहेगा। कुंडली का दसवाँ भाव कर्म भाव कहलाता है। इस भाव आपके कार्य क्षेत्र, नौकरी-



व्यापार को देखा जाता है। वहीं छठा भाव शत्रु भाव होता है। इस भाव से आपके शत्रुओं और रोग-दुख आदि का विचार किया जाता है। वहीं अष्टम भाव आयुर्भाव कहलाता है। इस भाव से उन चीज़ों को देखा जाता है जो व्यक्ति के जीवन में अचानक से होती हैं। करियर के लिए यह महीना अच्छा है। इस माह आप अपने नौकरी अथवा व्यापार में तरक्की करेंगे। आर्थिक जीवन में सुधार होगा। आप धन की बचत कर पाने में सफल होंगे।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - सिंह राशि

कन्या राशि

इस महीने चार ग्रहों (सूर्य, मंगल गुरु और शुक्र) के गोचर से आपकी कुंडली के नवम, पंचम और सप्तम भाव सिक्रिय रहेंगे। कुंडली का नौवां भाव धर्म भाव कहलाता है। इस भाव से व्यक्ति के धार्मिक स्वभाव, धार्मिक



यात्रा, गुरु आदि को देखा जाता है। वहीं पंचम भाव संतान भाव होता है। इस भाव से कुंडली में संतान, प्रेम-रोमांस एवं उच्च शिक्षा आदि को देखा जाता है। जबिक सप्तम भाव से विवाह, पार्टनर, जीवनसाथी को देखा जाता है। इस महीने में आपको नई जॉब या फिर वर्तमान जॉब में तरक्की पाने के नए अवसर प्राप्त हो सकते हैं। माता-पिता की ओर आपको किसी प्रकार की आर्थिक सहायता मिल सकती है...

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - कन्या राशि

मासिक राशिफल

तुला राशि

इस माह होने वाले 4 गोचरों के चलते आपके अष्टम, चतुर्थ और षष्टम भाव सिक्रिय अवस्था में रहेंगे। इस महीने की शुरुआत में जहां सूर्य का गोचर होगा वहीं महीने के मध्य भाग में मंगल और शुक्र और महीने के अंत में बृहस्पति



देव का गोचर होगा। मंगल और बृहस्पति का गोचर आपके चतुर्थ भाव यानि मकर राशि में होगा वहीं सूर्य का गोचर आपके षष्ठम भाव यानि मीन राशि और शक्र का गोचर आपके अष्टम भाव यानि वृषभ राशि में होगा। इस महीने आपको अपने इन भावों के गुणों के अनुसार फलों की प्राप्ति होगी। करियर क्षेत्र की बात की जाए तो इस महीने कुछ उतारचढ़ाव आने की संभावना है। खर्चों में भी इस माह वृद्धि होने के आसार हैं।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - तुला राशि

वृश्चिक राशि

मार्च के महीने में चार ग्रहों के गोचर से आपके जीवन में कुछ परिवर्तन आएंगे। इन चार ग्रहों के गोचर से आपके तृतीय, चतुर्थ और सप्तम भाव प्रभावित होंगे अर्थात आपकी जन्म कुंडली में वृषभ, मकर और कुंभ



राशियां इससे प्रभावित होंगी। ज्योतिष में तीसरा घर आपके पराक्रम, साहस और छोटे भाई बहनों का होता है, चौथे भाव से हम माता से आपके संबंध पर विचार करते हैं वहीं सप्तम भाव आपके विवाह और साझेदारी का होता है। इसलिये इस माह इन्हीं भावों के गुणों के कारण आपको फलों की प्राप्ति होगी। इस माह में सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र राशि परिवर्तन करेंगे। वृश्चिक राशि के लोगों को इस दौरान...

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - वृश्चिक राशि

धनु राशि

इस माह आपके द्वितीय, चतुर्थ और षष्ठम भाव सक्रिय अवस्था में रहेंगे क्योंकि चार ग्रहों सूर्य, मंगल, शुक्र और बृहस्पति का गोचर आपके इन तीन भावों में होने वाला है। काल पुरुष की कुंडली में द्वितीय भाव वृषभ



राशि का होता है और इससे हम आपकी वाणी, धन और संचार क्षमता का पता लगाते हैं। चतुर्थ भाव से माता के साथ आपके संबंधों को बताता है वहीं षष्ठम भाव से हम रोग आदि के बारे में विचार करते हैं। चूंकि आपके यह भाव इस माह सक्रिय रहेंगे इसलिये आपको इन्हीं के गुणों के अनुसार फलों की प्राप्ति होगी। अगर आपके करियर की बात की जाए तो यह इस माह सामान्य रहेगा। वहीं आर्थिक पक्ष में भी ज्यादा बदलाव आने की उम्मीद नहीं है।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - धनु राशि

मकर राशि

मकर राशि के जातकों का प्रथम, तृतीय और पंचम भाव इस महीने सिक्रिय अवस्था में रहेंगे। इस माह सूर्य, मंगल, शुक्र और बृहस्पति ग्रह अपनी राशि परिवर्तन करेंगे जिसका असर आपके जीवन पर पड़ेगा। काल पुरुष



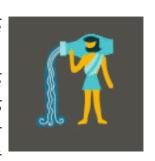
की कुंडली में प्रथम भाव मेष राशि का होता है जिससे हम आपके स्वभाव, शरीर आदि के बारे में विचार करते हैं। तृतीय भाव से आपके पराक्रम और साहस का पता चलता है जबकि पंचम भाव से आपके प्रेम संबंधों और विद्या का विचार किया जाता है। चूंकि इस माह आपके यह तीनों ही भाव सक्रिय हैं इसलिये आपको इनके गुणों के अनुसार ही फल प्राप्त होंगे। इस माह आपके करियर जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं...

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मकर राशि

मासिक राशिफल

कुंभ राशि

ककुंभ राशि वालों के लिये यह माह अच्छा रहने की पूरी उम्मीद है। आपको करियर के क्षेत्र में इस माह अच्छे फल मिल सकते हैं। पैसों से जुड़े मामलों में भी आप को इस महीने ज्यादा परेशानियां नहीं आएंगी। ग्रहों



की स्थिति की बात करें तो इस माह चार ग्रह राशि परिवर्तन करेंगे, ग्रहों के परिवर्तन के हिसाब से ही आपको फलों की प्राप्ति भी होगी। इस माह आपके द्वितीय, चतुर्थ और द्वादश भाव सिक्रिय अवस्था में रहेंगे क्योंकि आपके इन घरों में अलग-अलग ग्रहों का गोचर होगा। आपको बता दें कि इस माह सूर्य, मंगल, बृहस्पित और शुक्र राशि परिवर्तन करेंगे। आपके जो भाव इस माह सिक्रिय रहेंगे...

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - कुंभ राशि

मीन राशि

आपके लिये यह माह कुछ मामलों में बहुत अच्छा रहने की पूरी उम्मीद है। खासकर आपके करियर क्षेत्र और आर्थिक क्षेत्र में इस माह उछाल आ सकता है। इस माह ग्रह सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शुक्र अपनी राशि



बदलेंगे, जिसकी वजह से आपके प्रथम, तृतीय और एकादश भाव प्रभावित होंगे। प्रथम भाव से हम आपके व्यवहार, शरीर आदि के बारे में विचार करते हैं वहीं तृतीय भाव आपके पराक्रम, साहस और छोटे भाई-बहनों का होता है। एकादश भाव से हम लाभ, जीवन में होने वाली उपलब्धियों, आमदनी और बड़े भाई-बहनों से आपके संबंध के बारे में विचार किया जाता है।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मीन राशि

एस्ट्रोसेज पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें 9810881743, 9560670006



राहुल द्रविड़-किन ग्रहों ने बनाया इन्हें दीवार



डॉ. सुनील बरमोला



भारत वर्ष के पूर्व यशस्वी क्रिकेटर और दीवार के रूप में अपनी अलग पहचान बनाने वाले राहुल द्रविड़ जी का जन्म - 11 जनवरी 1973 को सुबह 11:00 बजे मध्यप्रदेश के इंदौर जिले में हुआ था। आज देखा जाए तो इनका नाम विश्व पटल में एक जबरदस्त क्रिकेटर के रूप में विख्यात है और अपने भौतिक जीवन में अनेकों चुनौतियों के बावजूद भी इन्होंने सफलता प्राप्त की है। ज्योतिषीय गणना(जन्मकुंडली) के द्वारा देखा जाए तो प्रतिभाशाली राहुल द्रविड़ जी का जन्म मीन लग्न व मीन राशि में हुआ।

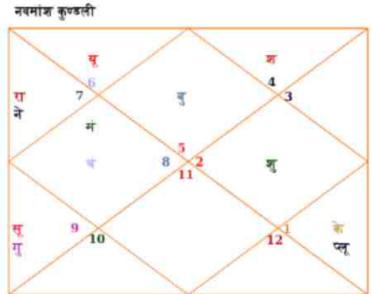
राहुल द्रविड़ जी की कुंडली में अनेकों शुभ योगों से सुशोभित द्वितीयेश व भाग्येश, मंगल वर्गोत्तम होकर भाग्य भाव में विराजमान और गुरु ग्रह लग्नेश और दशमेश होकर अपनी मूल त्रिकोण राशि (धनु) में है जो एक राजयोग बनाता है। शुक्र तृतीयेश होकर दशम भाव में बैठा है जोकि हाथ की कला या प्रतिभा से व्यक्ति को आगे बढ़ाता है। हर क्रिकेट प्रेमी जानता है कि राहुल द्रविड़ को कलाईयों का जादूगर भी कहा जाता था। तृतीय भाव में शनि की स्थिति

और उसपर मंगल की दृष्टि उनके खेल को जरुरी आक्रामकता भी प्रदान करती है जिससे उनके खेलने के अंदाज में और निखार आया। इनकी नवमांश कुंडली मकर लग्न की है और नवमांश कुंडली के कर्म भाव में शुक्र ग्रह सुशोभित है, जो कि राहुल द्रविड़ को खेल कूद (स्पोर्टस) की दुनिया में आजीविका प्रदान करा रहा है। 1999 में जब राहुल द्रविड़ जी पर शुक्र की महादशा का प्रारम्भ हुआ तो वहीं से राहुल द्रविड़ जी का कार्यकाल क्रिकेट जगत में भी प्रतिभाशाली व्यक्ति के रूप में प्रारम्भ हुआ। जन्मकुंडली व नवमांश कुंडली के अनुसार कर्मक्षेत्र में बैठे शुक्र ग्रह ने राहुल जी को अपने ही क्षेत्र में बनाये रखा क्योंकि शुक्र ग्रह खेल कूद यानि(स्पोर्टस) में व्यक्ति को प्रवेश कराता है, जिस कारण से राहुल जी की जन्मकुंडली में शुक्र ग्रह बलिष्ठ होने से राहुल द्रविड़ जी को दिन-प्रतिदिन क्रिकेट (खेल) के मैदान में उच्च स्तर तक पहुँचाया और विश्व पटल में क्रिकेट का एक महानायक बनाया।

ग्रहों के अनुसार देखा जाय तो राहुल द्रविड़ जी काफी कर्मठ व्यक्ति व जुझारू हैं, जिन्होंने 11 वर्ष की छोटी उम्र से ही क्रिकेट खेलना शुरू किया और अंडर-15, अंडर-17 और अंडर-19 के स्तर पर उन्होंने राज्य का प्रतिनिधित्व किया। यहीं से इनका क्रिकेट जगत में करियर का प्रारम्भ हुआ। द्रविड़ को वर्ष 2000 में पांच प्रसिद्ध क्रिकेटरों में से एक के रूप में सम्मानित किया गया। द्रविड़ को 2004 के उद्घाटन पुरस्कार समारोह में आईसीसी प्लेयर ऑफ़ द ईयर और वर्ष के टेस्ट प्लेयर के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कुंडली उवाच

लम्बे समय तक बल्लेबाजी करने की उनकी क्षमता के कारण उन्हें दीवार के रूप में जाना जाता है, द्रविड़ ने क्रिकेट की दुनिया में बहुत से रिकॉर्ड बनाये हैं। मीन लग्न व मीन राशि होने के कारण द्रविड़ बहुत शांत व्यक्ति भी हैं परन्तु सहनशीलता के खो जाने के बाद इनका गुस्सा रुकता भी नहीं है, जो हमें प्रमाणित रूप में खेल के मैदान में देखने को मिला। 9 मार्च 2012 को भारत के महान क्रिकेटर राहुल द्रविड़ ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेकर अपने 16 साल के अंतरराष्ट्रीय करियर को अलविदा कहा। उसके बाद क्रिकेट जगत से जुड़े रहने के लिये यह अंतराष्ट्रीय क्रिकेट कोच बने और ग्रहों के माध्यम से आगे इनका पूरा जीवन क्रिकेट जगत से ही जुड़े रहने की ओर इशारा करता है।



एस्ट्रोसेज पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें 9810881743, 9560670006

Lab Certified Gemstones

Genuine Gemstones at best price

चैत्र नवरात्रि -माता के नौ रुपों की पूजा



नेहा राजपूत



नवरात्रि के नौ दिनों में हिंदू धर्म को मानने वाले लोग माता के नौ रुपों की श्रद्धा पूर्वक पूजा करते हैं। साल 2020 में मार्च माह की 25 तारीख से नवरात्रि की शुरुआत हो रही है। इस दौरान जो भी जातक सच्चे मन से माता के नौ रुपों की पूजा करता है उसके जीवन की बड़ी से बड़ी समस्या दूर हो जाती है। आज हम आपको नवरात्रि के दौरान किये जाने वाले विभिन्न धार्मिक क्रियाकलापों की जानकारी देंगे। इसके साथ ही नवरात्रि के दौरान

रखे जाने वाले व्रत के दौरान आपको क्या सावधानियां रखनी चाहिये इसके बारे में भी बताया जाएगा।

माता के नौ रुपों की पूजा

चैत्र नवरात्रि की शुरुआत हिंदू नव वर्ष से होती है और राम नवमी तक इस त्योहार को मनाया जाता है। चैत्र नवरात्रि के पहले दिन भक्तों द्वारा घटस्थापना या कलशस्थापना की जाती है, और इसके बाद हर रोज माता के अलग-अलग स्वरुपों को पूजा जाता है।

25 मार्च 2020 (बुधवार)	नवरात्रि दिन 1 प्रतिपदा	माँ शैलपुत्री पूजा (घटस्थापना)
26 मार्च 2020 (गुरुवार)	नवरात्रि दिन 2 द्वितीया	माँ ब्रह्मचारिणी पूजा
27 मार्च 2020 (शुक्रवार)	नवरात्रि दिन ३ तृतीया	माँ चंद्रघंटा पूजा
28 मार्च 2020 (शनिवार)	नवरात्रि दिन 4 चतुर्थी	माँ कुष्मांडा पूजा
29 मार्च 2020 (रविवार)	नवरात्रि दिन 5 पंचमी	माँ स्कंदमाता पूजा
30 मार्च 2020 (सोमवार)	नवरात्रि दिन ६ षष्ठी	माँ कात्यायनी पूजा
31मार्च 2020(मंगलवार)	नवरात्रि दिन ७ सप्तमी	माँ कालरात्रि पूजा
1अप्रैल 2020 (बुधवार)	नवरात्रि दिन ८ अष्टमी	माँ महागौरी
2 अप्रैल 2020 (गुरुवार)	नवरात्रि दिन 9नवमी	माँ सिद्धिदात्री (रामनवमी)
3 अप्रैल 2020 (शुक्रवार)	नवरात्रि दिन 10 दशमी	नवरात्रि पारणा

नवरात्रि

कलशस्थापना के लिये शुभ मुहूर्त

हिंदू पुराणों के अनुसार कलश को भगवान विष्णु का स्वरुप माना जाता है, इसलिए नवरात्रि पर लोग माँ दुर्गा की पूजा से पहले कलश स्थापित करते हैं



और उसकी पूजा करते हैं। नवरात्रि की शुरूआत कलश स्थापना प्रतिपदा को यानि नवरात्रि से एक दिन पहले हो जाती है। यदि आपको माता का आशीर्वाद प्राप्त करना है तो कलश की स्थापना अभिजीत मुहूर्त में करनी चाहिये।

घटस्थापना मुहूर्त : 06:18:53 से 07:17:07 तक

अवधि: 0 घंटे 58 मिनट

कैसे करें कलशस्थापना

घटस्थापना या कलशस्थापना के लिए सबसे पहले पूजा स्थल को गंगा जल से शुद्ध किया जाता है और फिर सभी देवी -देवताओं को पूजा में आमंत्रित किया जाता है। कलश में पांच तरह के पत्ते, हल्दी की गांठ, सुपारी, दूर्वा, आदि रखे जाते हैं। कलश को बालू की वेदी बनाकर उसपर स्थापित करते हैं, जिसमें जौ बोये जाते हैं। पूजा स्थल के बीचों-बीच माँ दुर्गा की फोटो या मूर्ति को स्थापित करते हैं और माँ का श्रृंगार रोली, चावल, सिंदूर, माला, फूल, चुनरी, साड़ी, आभूषण और सुहाग से करते हैं। पूजा स्थल पर एक अखंड दीप भी भी भक्तों द्वारा जलाया जाता है। कलश स्थापना करने के बाद, गणेश जी और मां दुर्गा की आरती करते हैं जिसके बाद नौ दिनों का व्रत शुरू हो जाता है।



राशि अनुसार चढ़ाएं माता को भोग

नवरात्रि के नौ दिनों में देवी की विशेष पूजा के साथ ही उन्हें हर दिन विभिन्न प्रकार के भोग अर्पित करने का भी विधान है। तो अब आपको आपकी राशिनुसार बताते हैं कि इस नवरात्रि आपको माता को क्या भोग लगाना चाहिए।

मेष राशि - इस राशि के जातकों के लिए देवी माँ को मालपुए का भोग लगाना उत्तम माना जाता है।

वृषभ राशि - वृषभ राशि के जातकों के लिए नवरात्रि के दौरान बताशे का भोग माता को लगाना शुभ रहेगा।

मिथुन राशि – आपके लिए नवरात्रि के दौरान हरे रंग की मिठाई माता को अर्पित करना शुभ होगा।

कर्क राशि - आप माता को केसर युक्त मिठाई अर्पित करें तो आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

सिंह राशि - नवरात्रि के दौरान आप देवी माँ को केले का भोग लगाएं तो आपको अच्छे फल प्राप्त होंगे।

कन्या राशि - इसलिए आप देवी माँ को शहद का भोग लगाएं।

नवरात्रि

तुला राशि - आपके लिये देवी माता को खीर में केसर डालकर चढ़ाना विशेष लाभदायी साबित होगा।

वृश्विक राशि - इस राशि वालों को तिल की मिठाई का भोग माता को अर्पित करना चाहिये, आपके लिए यह शुभ रहेगा।

धनु राशि - आपको विशेष रूप से पीले रंग की मिठाई का भोग माता को लगाना चाहिये।

मकर राशि - देवी माँ को काला जामुन चढ़ाना आपके लिए लाभकारी रहेगा।

कुंभ राशि - कुंभ राशि के जातकों के लिये देवी माँ को मिश्री का भोग लगाना लाभदायक रहेगा।

मीन राशि - पीले लड्डू देवी माँ को अर्पित करने से आपको मनवांछित फल मिल सकते हैं।

नवरात्रि के दौरान भूलकर भी ना करें इन कामों को

हिन्दू मान्यताओं के अनुसार माँ दुर्गा की उपासना के लिए नवरात्रि का समय बेहद खास माना गया है। इसीलिए नवरात्रि के दौरान देवी माँ की उपासना के समय बहुत सी चीज़ों का खास तौर पर ध्यान रखना चाहिए और भूलकर भी इन कामों को नहीं करना चाहिए। जैसे-

- नवरात्रि के नौ दिनों में किसी भी व्यक्ति को भूलकर भी अपने नाख़ून और बाल नहीं काटने चाहिए।
- नवरात्रि के दौरान व्रत रखने वाले लोगों को चमड़े से बानी चीजों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।
- पुराणों के अनुसार नवरात्रि के नौ दिनों तक व्रतियों को दिन के समय में भूलकर भी नहीं सोना चाहिए।
- नवरात्रि के समय भूलकर भी लहसुन, प्याज और मांसाहार भोजन ग्रहण ना करें।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ <u>क्लिक करें</u>



मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का जन्म पर्व - रामनवमी



आयुषी चतुर्वेदी



रामनवमी के दिन का सीधा संबंध मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम से है। इसी दिन उन्होंने राजा दशरथ और माता कौशल्या के घर जन्म लिया था।

राम नवमी, जैसा की नाम से ही पता चलता है कि ये त्यौहार भगवान विष्णु के अवतार मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम से सम्बंधित है। जैसा की सभी को पता है कि भगवान विष्णु ने अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना के लिए अलग-अलग युगों में अलग-अलग अवतार लिए थे, इन्ही में से उनका एक अवतार भगवान श्री राम के भी रूप में हुआ था।

भगवान श्रीराम ने चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि के दिन माता कौशल्या की कोख से जन्म लिया था और तबसे ही इस दिन को रामनवमी के रूप में मनाये जाने की परंपरा की शुरूआत हुई है। चैत्र नवरात्रि का यह अंतिम दिन होता है।

रामनवमी का शुभ मुहूर्त

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में रामनवमी मनाई जाती है जो कि भगवान विष्णु के 7वें अवतार थे। प्रत्येक साल हिन्दू कैंलेडर के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को श्रीराम नवमी के रूप मनाया जाता है। चैत्र मास की प्रतिपदा से लेकर नवमी तक चैत्र नवरात्रि भी मनाई जाती है। इन दिनों कई लोग उपवास भी रखते हैं।

रामनवमी मुहूर्त :11:09:46 से 13:39:50 तक

अवधि :2 घटे 30 मिनट

रामनवमी मध्याह्न समय :12:24:48

कैसे हुआ था प्रभु श्रीराम का जन्म

भगवान विष्णु के सातवें अवतार कहे जाने वाले प्रभु राम ने धरती पर त्रेता युग में अवतार लिया था। पौराणिक कथाओं की मान्यता के अनुसार बताया जाता है कि धरती पर भगवान राम के जन्म का कुछ उद्देश्य जैसे, मानव जाति का कल्याण, इंसानों के लिए एक आदर्श पुरुष की छवि बनाकर उसकी मिसाल पेश करना और अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना करना था।

राजा दशरथ की तीन रानियाँ हुआ करती थीं लेकिन तीनों ही रानी को कोई पुत्र नहीं हुआ था। काफी समय बीत जाने के बाद राजा दशरथ ने इस बारे में ऋषि-मुनियों से सलाह लेने का विचार किया। तब राजा की समस्या का

रामनवमी

समाधान बताते हुए उन्हें पुत्रेष्टि यज्ञ करवाने की सलाह दी गयी। ऋषियों के कहेनुसार राजा ने पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया।

इस यज्ञ के बाद जो खीर प्रसाद के रूप में मिली उसे राजा दशरथ ने अपनी प्रिय पत्नी कौशल्या को दे दी, लेकिन रानी कौशल्या ने उसे अकेले खा लेने के बजाय उस खीर का एक हिस्सा रानी केकैयी को दिया और एक रानी सुमित्रा को दिया। इस यज्ञ और प्रसाद के प्रभाव से चैत्र शुक्ल नवमी को पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्क लग्न में माता कौशल्या की कोख से भगवान श्री राम ने जन्म लिया और केकैयी की कोख से भरत ने जन्म लिया और सुमित्रा की कोख से लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने जन्म लिया।

भये प्रगट कृपाला, दीनदयाला, कौशल्या हितकारी। हर्षित महतारी, मुनि मन हारी, अद्भृत रूप विचारी॥ १ ॥

लोचन अभिरामा, तनु घनश्यामा, निज आयुध भुज चारी।

भूषण गल माला, नयन विशाल, शोभासिंधू खरारी॥ २ ॥

कह दुई कर जोरी, अस्तुति तोरी, कही बिधि करू अनंता।

माया गुण ज्ञानातीत अमाना, वेद पुरान भनंता॥ ३ ॥

करुना सुखसागर, सुब गुण आगर, जेहि गावाहिं श्रुति संता।

सो मम हित लागी, जन अनुरागी, भयौ प्रगट श्रीकंता॥ ४॥

ब्रमांड निकाय, निर्मित माया, रोम रोम प्रति वेद कहे। मुम उर सो बासी, यह उपहासी, सुनत धीर मित थिर न रहे॥ ५ ॥ उपजा जब गयाना, प्रभु मुस्काना, चरित बहुत बिधि कीन्ह चहे। कडी कथा सदाई सात बझाई जेडि एकार सत प्रेस

कही कथा सुहाई, मातु बुझाई, जेहि प्रकार सूत प्रेम लाहे॥ ६ ॥

माता पुनि बोली, सो मित डोली, तजहु तात यह रूपा। कीजै शिशु लीला, अति प्रियशीला, यह सुख परम अनूप॥ ७ ॥ सुनी वचन सुजाना, रोदन ठाना, होई बालक सुरभूपा। यह चरित जे गावही, हरिपद पावही, तेहिं ना परिहं भवकूपा॥ ८ ॥



क्यों मनाते हैं रामनवमी?

भगवान श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से भी जाना जाता है। इस नाम का अर्थ है पुरुषों में सबसे उत्तम और ये नाम भगवान राम को इसलिए दिया गया है क्योंकि उन्हें पुरुषों में सबसे श्रेष्ठ का दर्जा दिया गया है। अब सवाल उठता है कि आखिर भगवान राम को ये नाम क्यों दिया गया है तो इस बात के आपको अनेकों उदाहरण मिल जायेंगे।

मर्यादा पुरुषोत्तम हमारे भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव देश भर में धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस दिन

रामनवमी

भगवान श्री राम के भक्त दुनिया के बारे में भूलकर भगवान राम की भक्ति में पूरी तरह से डूब जाते हैं और सच्चे मन से भजन कीर्तन कर के प्रभु श्रीराम की पूजा अर्चना करते हैं। इस दिन कई जगहों पर श्री रामकथा सुने जाने का भी चलन है।

लोग इस दिन रामचिरत मानस का पाठ करते हैं। कुछ लोग रामनवमी के दिन उपवास भी रखते हैं। लोगों के बीच रामनवमी के उपवास को लेकर ऐसी मान्यता है कि इस दिन उपवास रखने से इंसान के घर-पिरवार में सुख समृद्धि आती है और उनके जीवन के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। रामनवमी उत्सव

वास्तव में श्री रामनवमी हिन्दुओं के प्रमुख त्यौहारों में से एक है, जो देश-दुनिया में सच्ची श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। यह त्यौहार वैष्णव समुदाय में विशेष तौर पर मनाया जाता है। आज के दिन भक्तगण रामायण का पाठ करते हैं और रामरक्षा स्त्रोत भी पढ़ते हैं। अनेक मंदिरों में भजन-कीर्तन का भी आयोजन किया जाता है। भगवान राम की मूर्ति को फूल-माला से सजाते हैं और स्थापित करते हैं और उन्हें पालने में झुलाते हैं।

राम नवमी की पूजन विधि

राम नवमी की पूजा विधि कुछ इस प्रकार है,

- इस दिन सुबह उठकर सबसे पहले आपको स्नान करके,
 मंदिर जाकर सच्चे और साफ़ मन से भगवान राम की
 पूजा करनी चाहिए।
- इस दिन की जाने वाली पूजा में तुलसी की पत्ती और कमल का फूल अवश्य इस्तेमाल किये जाना चाहिए।
- उसके बाद सोलह पूजन विधि (षोडशोपचार) से प्रभु

- श्रीराम नवमी की पूजा करें।
- इस दिन खीर का प्रसाद चढ़ाएं।
- पूजा के बाद सभी लोगों को तिलक लगाकर प्रसाद ग्रहण करना चाहिए।



रामनवमी से जुड़ी पौराणिक मान्यताएं

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार राम नवमी की कहानी लंकापित रावण से शुरू होती है। ये बात उस समय की है जब रावण अपने राजकाल में एक बेहद अत्याचारी राजा बन चुका था। रावण के अत्याचार से उसकी पूरी जनता त्रस्त हो चुकी थी। यहाँ तक की रावण के अत्याचार से सिर्फ उसकी जनता ही नहीं बल्कि देवता भी बेहद दुखी हो चुके थे। जब रावण का अत्याचार हद से ज़्यादा बढ़ गया तब देवतागण भगवान विष्णु के पास पहुंचे और उनसे प्रार्थना की कि उन्हें रावण के अत्याचार से कैसे भी बचाया जाए।

देवताओं की इस प्रार्थना के फलस्वरूप भगवान विष्णु ने प्रतापी राजा दशरथ की पत्नी कौशल्या की कोख से भगवान श्री राम के रूप में जन्म लिया और आगे जाकर उन्होंने ही रावण को परास्त किया। तब से ही चैत्र की नवमी तिथि को रामनवमी के रूप में मनाने की परंपरा शुरू हो गयी। ऐसा भी कहा जाता है कि नवमी के दिन ही

रामनवमी

स्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना शुरू की थी।



इस दिन सूर्य पूजा का होता है महत्व

राम नवमी के दिन सूर्य प्रार्थना का भी बहुत महत्व बताया गया है। इसी के चलते कहते हैं कि रामनवमी के दिन की शुरुआत सूर्य की प्रार्थना करने के साथ की जानी चाहिए।

ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि सूर्य शक्ति का प्रतीक है और हिंदू धर्म के अनुसार सूर्य को राम का पूर्वज माना जाता है इसलिए, उस दिन की शुरुआत में सूर्य को प्रार्थना करने का उद्देश्य सर्वोच्च शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त करना होता है।



श्रीराम स्तुति

श्री राम चंद्र कृपालु भजमन हरण भाव भय दारुणम्। नवकंज लोचन कंज मुखकर, कंज पद कन्जारुणम्।।

कंदर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम्। पट्पीत मानहु तंडित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्।।

भजु दीन बंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनम्। रघुनंद आनंद कंद कौशल चंद दशरथ नन्दनम्।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारू अंग विभूषणं। आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर-दूषणं।।

इति वदित तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल दल गंजनम्।।

।।छंद।।

मनु जाहिं राचेऊ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर सांवरो। करुना निधान सुजान सील सनेहू जानत रावरो।।

एहिं भाति गौरी असीस सुनि सिय सहित हिय हरषी अली। तुलसी भवानी पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।

।।सोरठा।।

जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे।।



वैदिक ज्योतिष में चंद्र ग्रह



चंद्रमा नौ ग्रहों के क्रम में सूर्य के बाद दूसरा ग्रह है। वैदिक ज्योतिष में यह मन, माता, मानसिक स्थिति, मनोबल, द्रव्य वस्तुओं, यात्रा, सुख-शांति, धन-संपत्ति, रक्त, बायीं आँख, छाती आदि का कारक होता है। चंदमा राशियों में कर्क और नक्षत्रों में रोहिणी, हस्त और श्रवण नक्षत्र का स्वामी होता है। इसका आकार ग्रहों में सबसे छोटा है परंतु इसकी गति सबसे तेज़ होती है। चंद्रमा के गोचर की अवधि सबसे कम होती है। यह लगभग सवा दो दिनों में एक राशि से दूसरी राशि में संचरण करता है। चंद्र ग्रह की गति के कारण ही विंशोत्तरी, योगिनी, अष्टोत्तरी दशा आदि चंद्र ग्रह की गति से ही बनती हैं। वहीं वैदिक ज्योतिष शास्त्र में राशिफल को ज्ञात करने के लिए व्यक्ति की चंद्र राशि को आधार माना जाता है। जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि में स्थित होता है वह जातकों की चंद्र राशि कहलाती है। लाल के किताब के अनुसार चंद्र एक शुभ ग्रह है। यह सौम्य और शीतल प्रकृति को धारण करता है। ज्योतिष में चंद्र ग्रह को स्त्री ग्रह कहा गया है।

ज्योतिष के अनुसार मनुष्य जीवन पर चंद्रमा का प्रभाव

शारीरिक बनावट एवं स्वभाव - ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, जिस व्यक्ति के लग्न भाव में चंद्रमा होता है, वह व्यक्ति देखने में सुंदर और आकर्षक होता है और स्वभाव से साहसी होता है। चंद्र ग्रह के प्रभाव से व्यक्ति अपने सिद्धांतों को महत्व देता है। व्यक्ति की यात्रा करने में रुचि होती है। लग्न भाव में स्थित चंद्रमा व्यक्ति को प्रबल कल्पनाशील व्यक्ति बनाता है। इसके साथ ही व्यक्ति अधिक संवेदनशील और भावुक होता है। यदि व्यक्ति के आर्थिक जीवन की बात करें तो धन संचय में उसे कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

बली चंद्रमा के प्रभाव - यदि किसी जातक की कुंडली में चंद्रमा बली हो तो जातक को इसके सकारात्मक फल प्राप्त होते है। बली चंद्रमा के कारण जातक मानसिक रूप से सुखी रहता है। उसे मानसिक शांति प्राप्त होती है तथा उसकी कल्पना शक्ति भी मजबूत होती है। बली चंद्रमा के कारण जातक के माता जी संबंध मधुर होते हैं और माता जी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

पीड़ित चंद्रमा के प्रभाव: पीड़ित चंद्रमा के कारण व्यक्ति को मानसिक पीड़ा होती है। इस दौरान व्यक्ति की स्मृति कमज़ोर हो जाती है। माता जी को किसी न किसी प्रकार की दिक्कत बनी रहती है। वहीं घर में पानी की कमी हो जाती है। कई बार जातक इस दौरान आत्महत्या करनी की कोशिश करता है।

रोग - यदि जन्म कुंडली में चंद्रमा किसी क्रूर अथवा पापी ग्रह से पीड़ित होता है तो जातक की सेहत पर इसके नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। इससे जातक को मस्तिष्क पीड़ा, सिरदर्द, तनाव, डिप्रेशन, भय, घबराहट, दमा, रक्त से संबंधित विकार, मिर्गी के दौरे, पागलपन अथवा बेहोशी आदि की समस्या होती है।

कार्यक्षेत्र - ज्योतिष में चंद्र ग्रह से सिंचाई, जल से संबंधित कार्य, पेय पदार्थ, दूध, दुग्ध उत्पाद (दही, घी, मक्खन) खाद्य पदार्थ, पेट्रोल, मछली, नौसेना, टूरिज्म, आईसक्रीम, ऐनीमेशन आदि का कारोबार देखा जाता है।

उत्पाद - सभी रसदार फल तथा सब्जी, गन्ना, शकरकंद, केसर, मक्का, चांदी, मोती, कपूर जैसी वस्तुए चंद्रमा के अधिकार क्षेत्र में आती हैं।

स्थान - ज्योतिष में चंद्र ग्रह हिल स्टेशन, पानी से जुड़े स्थान, टंकियाँ, कुएं, जंगल, डेयरी, तबेला, फ्रिज आदि को दर्शाता है।

जानवर तथा पक्षी - कुत्ता, बिल्लू, सफेद चूहे, बत्तक, कछुआ, मछली आदि पशु पक्षी ज्योतिष में चंद्र ग्रह द्वारा दर्शायी जाती हैं।

जड़ - खिरनी, रत्न - मोती, रुद्राक्ष - दो मुखी रुद्राक्ष, यत्रं - चंद्र यंत्र, रंग - सफेद चंद्र ग्रह के उपाय के तहत व्यक्ति को सोमवार का व्रत धारण और चंद्र के मंत्रों का जाप करना चाहिए।

चंद्र ग्रह का वैदिक मंत्र
ॐ इमं देवा असपन्नं सुवध्यं महते क्षत्राय महते
ज्यैष्ट्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।
इमममुष्य
पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा
सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा।।

चंद्र ग्रह का तांत्रिक मंत्र अं सों सोमाय नमः

चंद्रमा का बीज मंत्र ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः

खगोल विज्ञान में चंद्रमा का महत्व

खगोल शास्त्र में चंद्रमा को पृथ्वी ग्रह का उपग्रह माना गया है। जिस प्रकार धरती सूर्य के चक्कर लगाती है ठीक उसी प्रकार चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। पृथ्वी पर स्थित जल में होने वाली हलचल चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण होती है। सूर्य के बाद आसमान पर सबसे चमकीला चंद्रमा ही है। जब चंद्रमा परिक्रमा करते हुए सूर्य और पृथ्वी के बीच आ जाता है तो यह सूर्य को क लेता है तो उस स्थिति को सूर्य ग्रहण कहते हैं।

चंद्रमा का पौराणिक महत्व

हिन्दू धर्म में चंद्र ग्रह को चंद्र देवता के रूप में पूजा जाता है। सनातन धर्म के अनुसार चंद्रमा जल तत्व के देव हैं।

चंद्र ग्रह

चंद्रमा को भगवान शिव ने अपने सिर पर धारण किया है। सोमवार का दिन चंद्र देव का दिन होता है। शास्त्रों में भगवान शिव को चंद्रमा का स्वामी माना जाता है। अतः जो व्यक्ति भोलेनाथ की पूजा करते हैं उन्हें चंद्र देव का भी आशीर्वाद प्राप्त होता है। चंद्रमा की महादशा दस वर्ष की होती है। श्रीमद्भगवत के अनुसार, चंद्र देव महर्षि अत्रि और अनुसूया के पुत्र हैं। चंद्रमा सोलह कलाओं से युक्त हैं। पौराणिक शास्त्रों में चंद्रमा को बुध का पिता कहा जाता है और दिशाओं में यह वायव्य दिशा का स्वामी होता है।

इस प्रकार आप देख सकते हैं कि हिन्दू ज्योतिष में चंद्र ग्रह का महत्व कितना व्यापक है। मनुष्य के शरीर में 60 प्रतिशत से भी अधिक पानी होता है। इससे आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि चंद्रमा मनुष्य पर किस तरह का प्रभाव डालता होगा।

एस्ट्रोसेज पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें 9810881743, 9560670006



अद्भुत है माता का यह मंदिर, चुनरी बांधकर हर मुराद होती है पूरी



देवी माता का हर रूप अपने भक्तों के संकट को दूर करता है। इसलिये पूरे भारत वर्ष में माता के कई मंदिर हैं। लेकिन यूपी के लालगंज क्षेत्र के गोगांसो में स्थापित मां संकटा देवी की महिमा अद्भूत है। मान्यता है कि मां के दरबार में जो भी जाता है उसकी हर मुराद पूरी होती है। इस मंदिर में जाकर कन्याओं को मनचाहे वर की प्राप्ति होती है तो सुहागनों की सूनी गोद भर जाती है और जो भी यहां चुनरी बांधकर कुछ भी मांगता है, वह अपनी झोली भरकर ले जाता है। आइए जानते हैं मंदिर से जुड़ी कुछ खास बातें-

16वें शक्तिपीठ की तरह स्थापित है मंदिर

लालगंज स्थित संकटा देवी मंदिर को 16वें शक्तिपीठ के रुप में जाना जाता है। जानकारी के मुताबिक मंदिर की स्थापना 12वीं शताब्दी में हुई थी। पौराणिक कथा के अनुसार बैसवारा के क्षत्रिय राजा त्रिलोक चंद्र इस बात से काफी दुखी रहते थे कि उनकी कोई संतान नहीं है। उनके वंश को कौन आगे बढ़ाएगा? उनके बाद तो उनका वंश ही समाप्त हो जाएगा। अपनी इस तकलीफ को लेकर राजा त्रिलोक चंद्र काशी पहुंचे। वहां उन्होंने महर्षि पुंजराज बाबा के सामने अपना दुख जाहिर किया। जिसके बाद बाबा ने राजा को पुत्र प्राप्ति का एक उपाय बताया। उन्होंने राजा को पुत्र येष्ठि यज्ञ करवाया। यज्ञ के खत्म होते ही राजा के घर किलकारी गूंजी और उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। कहा जाता है कि जिस स्थान पर राजा ने पुत्रयेष्ठि यज्ञ करवाया था, उसी तपोभूमि पर यह मंदिर बना है।

गंगोसी संकटा देवी के बारे में एक और कथा सुनने को मिलती है कि, मानसिक रूप से पागल एक व्यक्ति ने माता संकटा की मूर्ति पर कुल्हाड़ी से वार कर दिया था। युवक ने माता के गर्दन पर वार किया था। जिसके बाद उस जगह पर घाव होकर पानी निकलने लगा था। फिर एक रात मां ने माली को सपने में दर्शन दिया और उससे गर्दन पर हुए घाव पर घी का फोहा लगाने को बोला। माली सुबह उठते मंदिर पहुंचा और मां के दिए निर्देश के मुताबिक गर्दन पर हुए घाव पर घी का फोहा लगा दिया। आश्चर्य की बात है कि फोहा लगाते ही मां की मूर्ति से पानी निकलना बंद हो गया। हालांकि उस घाव का निशान आज भी मां की मूर्ति पर देखने को मिलता है।

जानें क्या है मान्यता

दिगंबर स्वामी अनंगबोध महाराज का आश्रम संकटा देवी मंदिर के सामने बहने वाली गंगा के पार स्थित है। मान्यता

चमत्कारी मंदिर

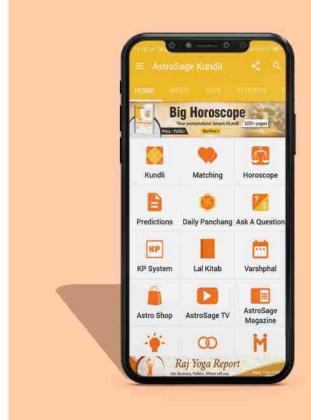
है कि संकटा देवी के दर्शन के लिए वैसे तो भक्त दूर-दूर से आते हैं लेकिन अनंगबोध महाराज उनके दर्शन के लिए गंगा की जलधारा के ऊपर चलकर आते हैं। कहा जाता है कि हर दिन ब्रह्मा मुहूर्त में अनंगबोध महाराज आज भी मां के दर्शन के लिए आते हैं।

चुनरी बांधकर हर मन्नत होती है पूरी

मां संकटा देवी के दरबार में जो भी सच्चे मन से चुनरी

बांधकर मुराद मांगता है उसकी इच्छा जरूर पूरी होती है। यही कारण है कि अविवाहित कन्याएं मनचाहे वर के लिए चुनरी बांधती हैं, तो शादीशुदा महिलाएं विवाह के बाद यहां गंगा स्नान कर देवी का आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। इसके अलावा संतान सुख से वंचित औरतें मां के पास संतान की प्राप्ति के लिए मन्नतें मांगती हैं। माना जाता है कि मन्नत पूरी होने पर मां को सबसे प्रिय सिंघाड़े के लड्डू अर्पित करके मंदिर और गरीबों में प्रसाद बांटा जाता है।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ क्लिक करें





Download App Now





जानिए कैसे तीनों सेनाओं का प्रतिनिधित्व करता है मंगल ग्रह



डॉ. सुनील बरमोला

भारतीय वैदिक ज्योतिष में मंगल ग्रह को मुख्य तौर पर ताक़तवर ग्रह और भूमि पुत्र के नाम से जाना जाता है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार कहा जाता है कि दक्ष यज्ञ विध्वंस के समय भगवान शंकर के पसीने की बूंद से वीरभद्र उत्पन्न हुआ, जिसने पाताल मार्गों से जाते समय सातों समुद्रों को जला डाला। यज्ञ का नाश करने के उपरांत शिव ने वीरभद्र को पृथ्वी से अलग हटकर मंगल के रूप में रहने का आदेश दिया। मंगल को पृथ्वी पुत्र माना जाता है और इसका नाम भौम, कुज, अवनिज, महीसुत, आवनेय, भूतनय, रुधिर, अंगारक आदि प्रसिद्ध हैं। उर्दू, फारसी तथा अरबी में यह मारीक. मिरीख. बेहराम आदि नाम से विख्यात है। मंगल ग्रह को कुछ विद्वान तथा पाश्चात्य ज्योतिषी युद्ध देवता भी कहते हैं। मंगल प्रत्येक व्यक्ति में शारीरिक ताकत, मानसिक शक्ति और मजबूती का प्रतिनिधित्व करता है। मानसिक शक्ति का अभिप्राय यहां पर निर्णय लेने की क्षमता और उस निर्णय पर टिके रहने की क्षमता से है।

बृहत्सहिता के अनुसार

विपुल विमल मूर्तिः किंशुका शोकवर्णः, स्फुट रुचिर मयूखस्तप्तताम्रप्रभामः।

वराहिमहिर मंगल ग्रह के बारे में बताते हुये कहते हैं कि रुखे-सूखे बड़े आकार के अशोक तथा किशुक के फूलों जैसा लाल वर्ण का, मन को मोहने वाला, तपे हुए तांबे के समान कांति वाला, उत्तर मार्ग से चलकर राजा एवं प्रजा के लिए कल्याणकारी होता है। मंगल के प्रबल प्रभाव



वाले जातक आम तौर पर तथ्यों के आधार पर उचित निर्णय लेने में तथा उस निर्णय को व्यवहारिक रूप देने में भली प्रकार से सक्षम होते हैं। ऐसे जातक सामान्यतया किसी भी प्रकार के दबाव के आगे घुटने नहीं टेकते तथा इनके ऊपर दबाव डालकर अपनी बात मनवा लेना बहुत कठिन होता है और इन्हें दबाव की अपेक्षा तर्क देकर समझा लेना ही उचित होता है।

मंगल आम तौर पर ऐसे क्षेत्रों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें साहस, शारीरिक बल, मानसिक क्षमता आदि की आवश्यकता पड़ती है। जैसे कि पुलिस की नौकरी, सेना की नौकरी, अर्ध-सैनिक बलों की नौकरी, अग्नि-शमन सेवाएं, खेलों में शारीरिक बल तथा क्षमता की परख करने वाले खेल जैसे कि कुश्ती, दंगल, टैनिस, फुटबाल, मुक्केबाजी तथा ऐसे ही अन्य कई खेल जो बहुत सी शारीरिक उर्जा तथा क्षमता की मांग करते हैं। इसके अतिरिक्त मंगल ऐसे क्षेत्रों तथा व्यक्तियों के भी कारक होते हैं जिनमें हथियारों अथवा औजारों का प्रयोग होता है जैसे

हस्तरेखा विज्ञान

हिथियारों के बल पर प्रभाव जमाने वाले गिरोह, शल्य चिकित्सा करने वाले चिकित्सक तथा दंत चिकित्सक जो चिकित्सा के लिए धातु से बने औजारों का प्रयोग करते हैं, मशीनों को ठीक करने वाले मैकेनिक जो औजारों का प्रयोग करते हैं तथा ऐसे ही अन्य क्षेत्र एवम इनमें काम करने वाले लोग। इसके अतिरिक्त मंगल भाइयों के कारक भी होते हैं विशेष रूप से छोटे भाइयों के। मंगल पुरूषों की कुंडली में दोस्तों के कारक भी होते हैं तथा विशेष रूप से उन दोस्तों के जो जातक के बहुत अच्छे मित्र हों तथा जिन्हें भाइयों के समान ही समझा जा सके।

मंगल की प्रबलता के प्रभाव

मंगल के प्रबल प्रभाव वाले जातक शारीरिक रूप से बलवान तथा साहसी होते हैं। ऐसे जातक स्वभाव से जुझारू होते हैं तथा विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत से काम लेते हैं तथा सफलता प्राप्त करने के लिए बार-बार प्रयत्न करते रहते हैं। अपने रास्ते में आने वाली बाधाओं तथा मुश्किलों के कारण आसानी से विचलित नहीं होते। मंगल का कुंडली में विशेष प्रबल प्रभाव कुंडली धारक को तर्क के आधार पर बहस करने की विशेष क्षमता प्रदान करता है, जिसके कारण जातक एक अच्छा वकील अथवा बहुत अच्छा वक्ता भी बन सकता है। मंगल के प्रभाव में वक्ता बनने वाले लोगों के वक्तव्य आम तौर पर क्रांतिकारी ही होते हैं तथा ऐसे लोग अपने वक्तव्यों के माध्यम से ही जन-समुदाय तथा समाज को एक नई दिशा देने में ले जाने में सक्षम होते हैं। युद्ध-काल के समय अपनी वीरता के बल पर समस्त जगत को प्रभावित करने वाले जातक मुख्य तौर पर मंगल के प्रबल प्रभाव में ही पाए जाते हैं।

राहु-मंगल की युति

राहू-मंगल के संयोग से व्यक्ति जासूस बनता है I मंगल अधिक बलवान हो तो निश्चित ही व्यक्ति सफल जासूस होता है



या फिर किसी गुप्तचर एजेंसी में कार्यरत होता है। राहू के बलवान होने कि स्थिति में मंगल को नुक्सान पहुंचता है व मंगल राहू के योग से जुए या शराब खाने में, हथियारों की फैक्ट्री में काम करता है।

चंद्र-मंगल की युति

चन्द्र-मंगल के योग वाला व्यक्ति नेवी में अफसर होता है। मंगल का अधिक बलवान होना तथा चन्द्र का भी मित्र राशि में होना इस योग के लिए आवश्यक है। अभिप्राय यह है कि चन्द्र पानी का तथा मंगल सेना का प्रतिनिधित्व करता है। अगर इन दोनों के योग से व्यक्ति कुछ बनता है तो मंगल बलवान होने की स्थिति में वह जलसेना में तथा चन्द्र बलवान होने पर समुद्री जहाज में अपनी आजीविका प्राप्त करता है। वह प्रयोगशाला में वैज्ञानिक (चन्द्र के बहुत अधिक बलवान होने पर) या ब्लड बैंक में डाक्टर हो सकता है।

बुध-मंगल की युति

बुध-मंगल की युति से व्यक्ति चालाक ठग या चोर बनता है I इसके लिए बुध का बलवान होना आवश्यक है I राहु का भी यदि इस योग में योगदान हो तो निश्चित ही व्यक्ति चोरों का नेता या ठग होता है। क्योंकि बुध चालाकी के लिए जाना जाता है और अगर उसे मंगल का साहस या शक्ति प्राप्त हो जाए तो उसकी हिम्मत बढ़ जाती है। चूंकि दोनों

हस्तरेखा विज्ञान

परस्पर शत्रु हैं इसलिए इन दोनों का योग व्यक्ति पर बुरा पड़ने कि संभावना बढ़ जाती है तथा राहु इस युति में आग में घी का काम करता है इससे नकारात्मक प्रभाव निश्चित हो जाते हैं और व्यक्ति बुराई कि तरफ चल पड़ता है।

गुरु-मंगल युति

गुरु-मंगल का संयोग व्यक्ति को सेना में ट्रेनिंग देने वाला पद दिलवाता है। गुरु शिक्षक होता है उसका काम शिक्षा देना



है क्योंकि वह वास्तव में गुरु है। गुरु-मंगल के योग में अगर गुरु बलवान हो तो सेना या पुलिस में होते हुए भी वह आधिकारिक पद पर तैनात रहता है। केतु-मंगल से व्यक्ति अग्नि से सम्बंधित कार्यों में आजीविका प्राप्त करता है। सूर्य-मंगल की युति से व्यक्ति हड्डियों का डाक्टर बन सकता है।

लग्न अनुसार मंगल की स्थिति

मेष लग्न में मंगल प्रथम, दशम, नवम, पंचम, तृतीय भाव में शुभ परिणाम देगा। वृषभ में तृतीय भाव में सुख, चतुर्थ और नवम भाव में शुभ परिणाम देगा। मिथुन लग्न में एकादश, दशम, पंचम, षष्ठ भाव में अनुकूल परिणाम मिलेंगे। कर्क लग्न में पंचम, नवम, सप्तम तृतीय भाव में शुभ परिणाम देगा। सिंह लग्न में प्रथम, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, और नवम भाव में शुभ परिणाम देगा। कन्या लग्न में चतुर्थ भाव में कुछ शुभ परिणाम देगा।

तुला लग्न में मंगल अकारक स्थिति में होगा, वृश्चिक लग्न में पंचम भाव में हो तो शुभ परिणाम देगा। धनु लग्न में, पंचम भाव में नवम भाव में, चतुर्थ भाव में, तृतीय भाव में शुभ परिणाम देगा। मकर लग्न में स्थिति के अनुसार परिणाम मिलेंगे। कुंभ लग्न में सप्तम, चतुर्थ दशम, पंचम भाव में द्वादश भाव में परिणाम शुभ रहेंगे।

मीन लग्न में प्रथम, नवम, दशम, तृतीय भाव में शुभ परिणाम देगा। इसी प्रकार शुक्र की स्थिति अनुकूल रही तो परिणाम दोगुने होंगे। भारत के राष्ट्रपति रहे स्वर्गीय डॉ. राजेंद्रप्रसाद मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुए थे। आपकी पत्रिका धनु लग्न की होकर पंचमेश नक्षत्र स्वामी मंगल लग्न में दशमेश बुध के साथ थी, वहीं शुक्र राशि स्वामी एकादश भाव में स्वराशि तुला का था।

लग्नेश गुरु की स्थिति भाग्य यानि नवम भाव में थी वहीं राहु दशम भाव में मित्र राशि का था। आपको मंगल के बाद राहु-गुरु का परिणाम अत्यधिक शुभता देने वाला साबित होकर आप भारत के राष्ट्रपति पद तक पहुँचे।

उदाहरण -

नाम - **मदन मोहन ढौंडियाल** जन्म दिनांक- **14 जुलाई 1955** जन्म समय - **प्रातः 3:45** जन्म स्थान- **चमोली (उत्तराखंड)**

ऐसी अनेकों कुंडलियां हैं जिनको देखने पर पता चलता है कि संबंधित लोगों ने सेना में भर्ती होकर उच्च पद प्राप्त किये और देश की सुरक्षा में अपना पूर्ण योगदान दिया। ऐसी ही मेरे पास अनेकों पत्रिकाएं हैं जिनमें से एक मेरे खास जानने वाले उत्तराखंड के डिप्टी कमांडेंट मदन मोहन ढौंडियाल जी की कुंडली है। इनका जन्म उत्तराखंड राज्य के चमोली जिले में 14 जुलाई 1955 प्रातः 3:45 पर हुआ

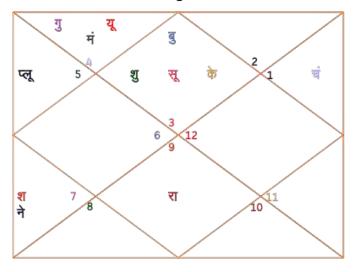
हस्तरेखा विज्ञान

था। इनकी पत्रिका मिथुन लग्न व मेष राशि की बनती है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार देखा जाए तो मदन मोहन जी की जन्म पत्रिका में अनेकों ऐसे योग हैं जिस कारण से ये एक यशश्वी एवं तेजश्वी सिपाही के रूप में उभरे। 17 साल की उम्र में भारतीय सेना की एक शामिल होकर वो आगे बढ़े और सेवानिवृत्ति तक पूर्ण योगदान सेना को दिया। इन्होंने एक सिपाही के रूप में भारतीय आर्मी को ज्वाइन कर ऑफिसर रैंक तक प्राप्त किया। ज्योतिष ग्रंथों के अनुसार ज्ञात होता है कि यदि व्यक्ति की जन्म कुंडली में गुरु-मंगल का संबंध हो तो ऐसा जातक सेना से जुड़कर एक उच्च पद की प्राप्ति करता है, जो कि हमें डिप्टी कमांडेंट मदन मोहन ढौंडियाल जी की पत्रिका में प्राप्त होता है। मदन मोहन ढौंडियाल जी की पत्रिका में ग्रह योगों पर बात करें तो मंगल ग्रह के द्वारा जो कि सेना का प्रतिनिधित्व करने वाला कारक ग्रह है. पत्रिका में नीच भंग राज योग. विपरीत राज के साथ धन की प्राप्त में भी मंगल ग्रह का पूर्ण सहयोग दिखाई देता है। इनकी पत्रिका में मंगल ग्रह को देखकर पता चलता है कि मदन मोहन जी संघर्षमय, कर्मबद्ध होकर सुखद जीवन यापन करेंगे।

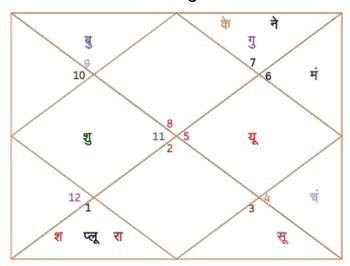
मदन मोहन ढौंडियाल जी का जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ था। सायंकाल की रोटी को प्राप्त करने के लिए भी इनको सोचना पड़ता था। बहुत मुश्किलों से इन्होंने दसवीं कक्षा पास की जिसके बाद ये आर्मी में भर्ती हो गये थे। यशस्वी व्यक्ति होने के कारण इन्होंने अपनी पढ़ाई को जारी रखते हुए पी.एच.डी तक की डिग्री प्राप्त की। मदन मोहन जी ने सेना में कार्यरत होने के दौरान अनेकों दुर्गम व नक्सलवादी क्षेत्रों में निडर होकर कई वर्षों तक अपना योगदान दिया। सियाचिन में कई दिनों तक भूखे प्यासे रहकर भी इन्होंने कई क्षेत्रों में संचार व्यवस्था की कमान अपने कन्धों में बनाये रखी। जन्म कुंडली में मंगल व गुरु ग्रह के योग से इन्होंने एन.सी.सी के छात्रों के लिए शिक्षण का कार्य भी किया।

आर्मी से सेवानिवृत्त होकर पुनः सशस्त्र सीमा बल (S.S.B) से जुड़े और वहां पर अपना संपूर्ण योगदान देकर डिप्टी कमांडेंट रैंक को प्राप्त कर सशस्त्र सीमा बल (S.S.B) से भी सेवानिवृत्त हुए। आज मदन मोहन जी उत्तराखंड के साथ-साथ देश के युवाओं में जोश भरते हुए आर्मी से जुड़ने के लिए ट्रेनिंग केम्प चलाते हैं।

लग्न कुंडली



नवमांश कुंडली



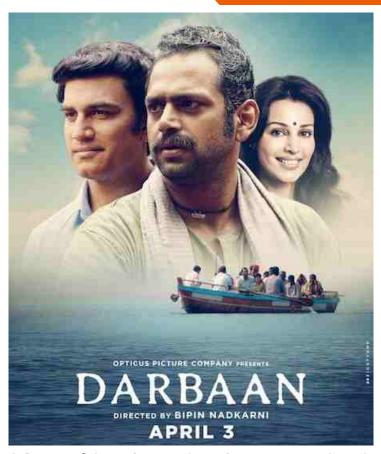
मुझे भाग्य में बहुत भरोसा है : शारिब हाशमी



हिन्दी सिनेमा की दुनिया में बीते करीब आठ साल से सिक्रय अभिनेता शारिब हाशमी वेबसीरिज 'द फैमिली मैन' से अब घर-घर पहचाना नाम बन गए हैं। इससे पहले वो फिल्मिस्तान, नक्काश, जब तक है जान जैसी कई फिल्मों में काम कर चुके हैं और जल्द ही फिल्म 'दरबान' में अहम भूमिका में दिखायी देंगे। शारिफ हाशमी उन अभिनेताओं में हैं, जिन्होंने बहुत देर से इंडस्ट्री में एंट्री ली, लेकिन अपने अभिनय के बूते अलग पहचान बनाने में कामयाब हुए। शारिब हाशमी के फिल्मों में आने और टिकने की कहानी भी कम फिल्मी नहीं है, और निजी जिंदगी की उनकी कहानी किस्मत में उनका भरोसा पुख्ता करती है। शारिब कहते हैं, "मेरा भाग्य में बहुत विश्वास है। मैं मानता हूं कि किस्मत ने ही मुझे मौके दिए वरना प्रतिभाशाली लोगों की यहां कमी नहीं है। फिर, मैं जिस तरह इंडस्ट्री में आया, उसने भी मेरा भाग्य पर भरोसा

बढ़ाया। मेरे पिता फिल्म पत्रकार थे। कई कलाकार मेरे घर आया करते थे। मैं पार्टियों में जाया करता था यानी एक नाता फिल्मी दुनिया से बचपन से था। मैं शुरुआत से अभिनेता बनना चाहता था, लेकिन मेरा लुक और शारीरिक बनावट उन पारंपिरक अभिनेताओं की तरह नहीं है, जिन्हें लोग हीरो कहते हैं। इस वजह से मैं हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। फिर 27 साल की उम्र में शादी कर ली। घर-परिवार की जिम्मेदारी उठा ली और सपने से दूर होता चला गया। लेकिन, करीब 32-33 साल की उम्र में लगा कि अगर अपने सपने के लिए एक कोशिश भी नहीं की तो जिंदगी भर खुद को माफ नहीं कर पाऊंगा। मेरी शरीक-ए-हयात ने मेरे फैसले में साथ दिया और मैंने जमी जमायी नौकरी छोड़कर एक्टिंग में हाथ आजमाने का फैसला कर लिया। "

सेलेब्रिटी स्पीक



लेकिन कर्म के जरिए बॉलीवुड में पहचान बनाने उतरे शारिब भाग्य पर विश्वास करते हैं तो इसकी बड़ी वजह है। वो कहते हैं, "मैंने तीन साल तक संघर्ष किया। बहुत धक्के खाए। लेकिन बात नहीं जमी। हताश होकर मैंने फिर नौकरी कर ली क्योंकि घर चलाने के लिए पैसे की जरुरत थी। हां, मुझे एक संतोष था कि मैंने कोशिश की। लेकिन नौकरी करते हुए तीन-चार महीने ही हुए थे कि मुझे अचानक यशराज स्टूडियो से 'जब तक है जान' फिल्म के लिए बुलावा आया, जिसके लिए मैंने काफी दिन पहले ऑडिशन दिया था। यशजी के असिस्टेंट थे अक्षत कपिल, उन्होंने यशजी को याद दिलाया मेरे बारे में। मजे की बात ये कि जिस एक्टर को मेरी भूमिका के लिए पहले चुना गया था, वो बहुत हैंडसम था और निर्देशक को लगा कि शाहरुख जैसे हैंडसम के आगे दूसरे हैंडसम हीरो को रखना ठीक नहीं। यानी जिस लुक को मैं अपनी कमजोरी मानता था, वो लुक ही उस रोल को पाने में मददगार बना।

इसी दौरान, फिल्मिस्तान फिल्म के लिए मेरी कास्टिंग हुई, लेकिन उसकी डेट 'जब तक है जान' से टकरा गई नतीजतन मुझे फिल्म छोड़नी पड़ी। फिल्मिस्तान में मुख्य भूमिका के लिए किसी और को चुन लिया गया। लेकिन मेरी किस्मत थी कि उस बंदे के साथ फिल्म निर्देशक की जमी नहीं। आखिर में निर्देशक नितिन कक्कड़ ने कहा कि वो मेरे साथ ही फिल्म करेंगे। उन्होंने निर्माताओं को कनविंस किया कि वो थोड़े दिन इंतजार करें। यानी हाथ से जो दो फिल्में निकल गईं थी, वो फिर लौटकर मेरे हाथ में आ गईं और ये बिना किस्मत के नहीं हो सकता।"

शारिब किस्मत को मानते हैं, ग्रह-नक्षत्रों को मानते हैं, लेकिन क्या हताशा के दौर में कभी किसी ज्योतिषी की मदद ली? या कभी उन्हें ख्याल आया कि उन्हें अपने नाम की स्पेलिंग बदलनी चाहिए? ये पूछने पर शारिब कहते हैं, "मैं निश्चित तौर पर ग्रह-नक्षत्रों को मानता हूं लेकिन कभी ज्योतिषी के पास नहीं गया। लेकिन, मुझे जो भी कामयाबी मिली, उसमें किस्मत की बड़ी भूमिका मानता हूं। मुझे याद कि मैंने हॉलीवुड के जाने माने एक्टर रॉबर्ट डीनिरो का एक इंटरव्यू पढ़ा था। इस इंटरव्यू में उनसे किसी ने पूछा था कि जब आप अपने करियर को देखते हैं तो आपको कैसा महसूस होता है। इसके जवाब में रॉबर्ट डीनिरो ने कहा था कि मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानता हूं कि मुझे ऐसे अवसर मिले। ऐसा काम मिला।"

शारिब इस बात पर शिद्दत से यकीन करते हैं कि टेलेंट की कोई कमी नहीं है और सिर्फ वो ही लोग सफलता हासिल कर पाते हैं, जिनकी कोशिशों को भाग्य का साथ मिलता है। लेकिन, जब कोशिशों को भाग्य का साथ नहीं मिलता यानी जब कोई फिल्म फ्लॉप हो जाती है या काम को नहीं सराहा जाता तब उस हताशा को शारिब कैसे सामना

सेलेब्रिटी स्पीक



करते हैं? शारिब कहते हैं, "हताशा के वक्त परिवार और करीबी मित्र ही आपको ताकत देते हैं। आपको निराशा से बाहर निकालते हैं। निजी तौर पर मेरे निराशा के पलों में मेरी पत्नी नसरीन का बहुत सपोर्ट रहता है। सच कहूं तो मेरी पूरी करियर यात्रा में मेरी पत्नी का बहुत सपोर्ट रहा, जिसके बिना यह यात्रा संभव ही नहीं थी।"

शारिब हाशमी के पास आज अच्छी फिल्में हैं। वो कुछ चुनिंदा वेबसीरिज में दिखायी देने वाले हैं। उनके लिए सफलता का मतलब क्या है? शारिब कहते हैं, रात में अच्छी नींद आए। घर चलाने के लिए जरुरत का पैसा मिल जाए और मनमर्जी का काम करने की छूट मिले तो यही सफलता है। और मेरी सफलता की अपनी परिभाषा के मुताबिक आज मैं खुद को सफल मानता हूं।

-जैसा पीयूष पाण्डे को बताया



ज्योतिष सीखें भाग-6



पुनीत पाण्डे

पिछले अंक में हमनें भाव कारकत्व के बारे में जाना। हमने यह भी जाना कि कारकात्व एवं स्वभाव में क्या फर्क होता है। इस बार पहले हम राशियों के बारे में जानते हैं। राशियों के स्वभाव इस प्रकार हैं-

मेष - पुरुष जाति, चरसंज्ञक, अग्नि तत्व, पूर्व दिशा की मालिक, मस्तक का बोध कराने वाली, पृष्ठोदय, उग्न प्रकृति, लाल-पीले वर्ण वाली, कान्तिहीन, क्षत्रियवर्ण, सभी समान अंग वाली और अल्पसन्तित है। यह पित्त प्रकृतिकारक है। इसका प्राकृतिक स्वभाव साहसी, अभिमानी और मित्रों पर कृपा रखने वाला है।

वृष – स्त्री राशि, स्थिरसंज्ञक, भूमितत्व, शीतल स्वभाव, कान्ति रहित, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, वातप्रकृति, रात्रिबली, चार चरण वाली, श्वेत वर्ण, महाशब्दकारी, विषमोदयी, मध्य सन्तति, शुभकारक, वैश्य वर्ण और शिथिल शरीर है। यह अर्द्वजल राशि कहलाती है। इसका प्राकृतिक स्वभाव स्वार्थी, समझ-बूझकर काम करने वाली और सांसारिक कार्यों में दक्ष होती है। इससे कण्ठ, मुख और कपोलों का विचार किया जाता है।

मिथुन – पश्चिम दिशा की स्वामिनी, वायुतत्व, तोते के समान हरित वर्ण वाली, पुरुष राशि, द्विस्वभाव, विषमोदयी, उष्ण, शूद्रवर्ण, महाशब्दकारी, चिकनी, दिनबली, मध्य सन्तति और शिथिल शरीर है। इसका प्राकृतिक स्वभाव विद्याध्ययनी और शिल्पी है। इससे हाथ, शरीर के कंधों और बाहुओं का विचार किया जाता है।

कर्क – चर, स्त्री जाति, सौम्य और कफ प्रकृति, जलचारी, समोदयी, रात्रिबली, उत्तर दिशा की स्वामिनी, रक्त-धवल मिश्रित वर्ण, बहुचरण एवं संतान वाली है। इसका प्राकृतिक स्वभाव सांसारिक उन्नति में प्रयत्नशीलता, लज्जा, और कार्यस्थैर्य है। इससे पेट, वक्षःस्थल और गुर्दे का विचार किया जाता है।

सिंह - पुरुष जाति, स्थिरसंज्ञक, अग्नितत्व, दिनबली, पित्त प्रकृति, पीत वर्ण, उष्ण स्वभाव, पूर्व दिशा की स्वामिनी, पुष्ट शरीर, क्षत्रिय वर्ण, अल्पसन्तति, भ्रमणप्रिय और निर्जल राशि है। इसका प्राकृतिक स्वरूप मेष राशि जैसा है, पर तो भी इसमें स्वातन्त्र्य प्रेम और उदारता विशेष रूप से विद्यमान है। इससे हृदय का विचार किया जाता है।

कन्या – पिंगल वर्ण, स्त्रीजाति, द्विस्वभाव, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, रात्रिबली, वायु और शीत प्रकृति, पृथ्वीतत्व और अल्पसन्तान वाली है। इसका प्राकृतिक स्वभाव मिथुन जैसा है, पर विशेषता इतनी है कि अपनी उन्नति और मान पर पूर्ण ध्यान रखने की यह कोशिश करती है। इससे पेट का विचार किया जाता है।

ज्योतिष सीखें

तुला – पुरुष जाति, चरसंज्ञक, वायुतत्व, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, अल्पसंतान वाली, श्यामवर्ण शीर्षोदयी, शूद्रसंज्ञक, दिनबली, क्रूर स्वभाव और पाद जल राशि है। इसका प्राकृतिक स्वभाव विचारशील, ज्ञानप्रिय, कार्य-सम्पादक और राजनीतिज्ञ है। इससे नाभि के नीचे के अंगों का विचार किया जाता है।

वृश्कि – स्थिरसंज्ञक, शुभ्रवर्ण, स्त्रीजाति, जलतत्व, उत्तर दिशा की स्वामिनी, रात्रिबली, कफ प्रकृति, बहुसन्तति, ब्राह्मण वर्ण और अर्द्ध जल राशि है। इसका प्राकृतिक स्वभाव दम्भी, हठी, दृढ़प्रतिज्ञ, स्पष्टवादी और निर्मल है। इससे शरीर के क़द और जननेन्द्रियों का विचार किया जाता है।

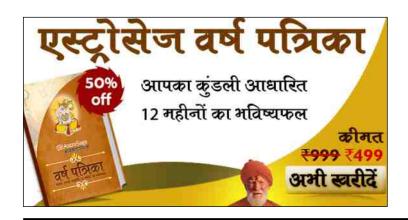
धनु – पुरुष जाति, कांचन वर्ण, द्विस्वभाव, क्रूरसंज्ञक, पित्त प्रकृति, दिनबली, पूर्व दिशा की स्वामिनी, दृढ़ शरीर, अग्नि तत्व, क्षत्रिय वर्ण, अल्पसन्तित और अर्द्ध जल राशि है। इसका प्राकृतिक स्वभाव अधिकारप्रिय, करुणामय और मर्यादा का इच्छुक है। इससे पैरों की सन्धि और जंघाओं का विचार किया जाता है।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ क्लिक करें मकर – चरसंज्ञक, स्त्री जाति, पृथ्वीतत्व, वात प्रकृति, पिंगल वर्ण, रात्रिबली, वैश्यवर्ण, शिथिल शरीर और दक्षिण दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव उच्च दशाभिलाषी है। इससे घुटनों का विचार किया जाता है।

कुम्भ – पुरुष जाति, स्थिरसंज्ञक, वायु तत्व, विचित्र वर्ण, शीर्षोदय, अर्द्वजल, त्रिदोष प्रकृति, दिनबली, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, उष्ण स्वभाव, शूद्र वर्ण, क्रूर एवं मध्य संतान वाली है। इसका प्राकृतिक स्वभाव विचारशील, शान्तचित्त, धर्मवीर और नवीन बातों का आविष्कारक है। इससे पेट की भीतरी भागों का विचार किया जाता है।

मीन – द्विस्वभाव, स्त्री जाति, कफ प्रकृति, जलतत्व, रात्रिबली, विप्रवर्ण, उत्तरदिशा की स्वामिनी और पिंगल वर्ण है। इसका प्राकृतिक स्वभाव उत्तम, दयालु और दानशील है। यह सम्पूर्ण जलराशि है। इससे पैरों का विचार किया जाता है।

राशियों के स्वभाव जानने के बाद हम अब अगली बार ग्रहों के कारकत्व और स्वभाव के बारे में जानेंगे।







ज्योतिषी से प्रश्न पूछें



- → के.पी. सिस्टम
- → लाल किताब
- → नाड़ी ज्योतिष
- → ताजिक ज्योतिष

अभी पूछें >>

स्पेशल कीमतः

₹299/-

संपर्क करें +91-7827224358, +91-9354263856

Email:- sales@ojassoft.com www.astrosage.com